जीवन
दान
दुधनारायण

आदर्श आचार्य

श्री खूबचन्द जी महाराज

प्रेषक—

पं० श्री सुखलालजी महाराज

लेखक— पं० दुवनारायण

इस पुस्तक के प्रकाशन में सहायता प्रदान करने वाले महानुभावों की सूचि :—

३००) गुप्त दान, श्री सुखमुनि जी महाराज के उपदेश से।

२००) स्व० सेठ कालूराम जी कोठारी।
(मा० फ० किशनलाल कालूराम) ब्यावर।

१५०) सेठ मेरूलालजी लालचन्दजी मेहत्ता, नरारभा बड़ा (जैपुर)

१२५) ला० किरोड़ीमल जी अमानतराय जी, देहली।

१२५) गुप्त दान, श्री सुखमुनिजी महाराज के उपदेश से।

१००) सेठ सरूपचन्द जी तालेड़ा, ब्यावर।

१००) सेठ देवराज जी भवंरलाल जी सुराना, ब्यावर।

१००) सेठ तखतमल जी सौभागमल जी जावरा।

१००) ला० प्यारेलाल जी महत्ता लखपतराय जी रईस जैन
हासी (हिसार)

१००) श्री श्वे० स्था० जैन श्री संघ, शिवपुरी (ग्वालियर)

१००) बा० मेहरचन्द जी वकील, गुड़गांवा (पंजाब)

५०) सेठ बेरभीचन्द जी नन्दराय जी सुराना, जावरा।

५०) श्री जैन महावीर नवयुवक मंडल, चित्तोड, गढ़ क़िला
(मेवाड)

५०) ला० फूलचन्द जी नौरत्न चन्द जी चौरड़िये, देहली।

५०) ला० लोटनमल जी सूरजमल जी सुजन्ती देहली।

५०) ला० ना कचन्द जी कपूरचन्द सुराला देहली।

इस पुस्तक के प्रकाशन में सहायता प्रदान करने वाले महानुभावों की सूचि :—

३००) गुप्त दान, श्री सुखमुनि जी महाराज के उपदेश से।

२००) स्व० सेठ काल्लूराम जी कोठारी।
(मा० फ० किशनलाल काल्लूराम) ब्यावर।

१५०) सेठ मेरूलालजी लालचन्दजी मेहत्ता, नरारभा बड़ा (जैपुर)

१२५) ला० किरोड़ीमल जी अमानतराय जी, देहली।

१२५) गुप्त दान, श्री सुखमुनिजी महाराज के उपदेश से।

१००) सेठ सरूपचन्द जी तालेड़ा, ब्यावर।

१००) सेठ देवराज जी भवंरलाल जी सुराना, ब्यावर।

१००) सेठ तखतमल जी सौभागमल जी जावरा।

१००) ला० प्यारेलाल जी महत्ता लखपतराय जी रईस जैन
हासी (हिसार)

१००) श्री श्वे० स्था० जैन श्री संघ, शिवपुरी (ग्वालियर)

१००) बा० मेहरचन्द जी वकील, गुड़गांवा (पंजाब)

५०) सेठ वेरभीचन्द जी नन्दराय जी सुराना, जावरा।

५०) श्री जैन महावीर नवयुवक मडल, चित्तोड़, गढ़ क़िला
(मेवाड़)

५०) ला० फूलचन्द जी नौरत्न चन्द जी चौरड़िये, देहली।

५०) ला० लोटनमल जी सूरजमल जी सुजन्ती देहली।

५०) ला० ना .कचन्द जी कपूरचन्द सुराला देहली।

पुस्तक मिलने के पते :—

१. श्री महावीर जैन युवक मित्र मंडल

खरादी चौक

मन्दसौर (मालवा)

२. श्री महावीर जैन नन्द् पुस्तकालय

बजाज खाना

जावरा (मालवा)

अभिमत

मानवता की भव्य मूर्ति का,
यह सम्भल मंजुल जीवन !
भक्ति-विभोर भाव से पढ़िए,
करिए निज तन मन पावन !!

श्री महावीर भवन
दिल्ली
१० मई १९४५

कवि
उपाध्याय अमर मुनि

दो शब्द

आज मैं अपने आनन्द एवं उल्लास की अभिव्यक्ति किन शब्दों में करूँ ? मेरी लेखनी भी मेरे हृदयगत भावों को अभिव्यक्त करने के लिए समर्थ नही। क्योकि वह जड़ है और आनन्द एवं उल्लास एक अनुभव गम्य—अनुभूति की वस्तु है।

मुझे हर्ष है कि यह सब कुछ होते हुए भी मैं यह पुस्तक आप की सेवा मे उपस्थित कर सका हू। सच्चा आनन्द तो तभी होता, जब श्रद्धेय पूज्य श्री जी हम लोगों के बीच मे विद्यमान रहते। पर, हमारा दुर्भाग्य है कि पूज्य श्री जी इस क्षण-भंगुर ससार को छोड़कर अमर लोक में जा बिराजे हैं। परन्तु वे अपने यशः शरीर से अभी भी इस लोक में विद्यमान हैं, और रहेंगे।

प्रस्तुत जीवन चरित्र के प्रकाशन मे अत्यधिक विलम्ब हुआ है। एतदर्थ मैं आप लोगो का क्षमा प्रार्थी हूँ। क्योकि पुस्तक प्रकाशित करने के लिए कागज की समस्या बहुत विकट थी। प्रयास करने पर कागज तो मिल गया। किन्तु उसे प्रयोग मे लाने का काम बड़ा टेढ़ा था। क्योंकि युद्ध के कारण प्रकाशन में बड़ी-बड़ी बाधाएँ उपस्थित हुई हैं। सरकार की ओर से "डिफेन्स ओफ इन्डिया एक्ट" और रूल्ज के अन्तर्गत प्रतिबन्ध लगा हुआ

है। एक बार हमने ब्लैक मार्केट से भी खरीदना चाहा, पर व्यय बहुत होने के कारण खरीद न सके। हमने सोचा इस व्यर्थ के खर्च से तो विलम्ब ही अच्छा होगा।

इस प्रकाशन कार्य में राय साहब एस० सी० अग्रवाल और Mr. D. Hejmadi Paper Officer के हम अत्यन्त आभारी हैं तथा मास्टर श्रीराम जी, दुर्गाप्रसाद जी लोढ़ा, शीतल प्रसाद जी आदि महानुभावो का भी हमें स्तुत्य सहयोग मिला है। इन सब सज्जनो का हम आभार मानते हैं। यह सब कुछ इन महानुभावों की ही कृपा दृष्टि का फल है कि यह पुस्तक आप के करकमलो में इतने सुन्दर ढग से आ सकी। पुस्तक की सुन्दरता के विषय में हमे अधिक लिखने या कहने की आवश्यक्ता नहीं। पाठक स्वयं उसकी सुन्दरता को प्रत्यक्ष रूपेण अवलोकन कर सकते हैं। यही एक मात्र कारण है कि इस पर आशा से कुछ अधिक व्यय हुआ है।

एक बात और है कि कागज का चिल श्री महावीर जैन पुस्तकालय के नाम से बनवाया था और समयाभाव के कारण बिल बदलवा भी न सका। अन्त मे पत्र व्यवहार होने पर उक्त सस्था को प्रकाशन की स्वीकृति मिल गई।

हम उन दोनों सज्जनो से क्षमा चाहते हैं कि प्रकाशक के स्थान पर उनके नाम न दे सके।

प्रस्तुत जीवन चरित्र एक ऐसे महापुरुष का है। जिसने अपना समग्र जीवन आत्म चिन्तन, इन्द्रिय सयम और समाज सेवा

ही बिताया है। इस स्वार्थमय संसार में जहां केवल स्वार्थ ही प्रधान है और रागद्वेष तथा मोह-ममता ही प्रधान है, असत्य मानव प्रतिदिन उत्पन्न होते हैं और मृत्यु को प्राप्त होते हैं। इनमें बिरले ही ऐसे मानव होते हैं जो अपनी आत्म विशुद्धि के लिए तथा बहुजनहिताय एवं बहुजन सुखाय इस क्षण-भगुर संसार का परित्याग करके सच्चे अर्थों मे त्यागी, ज्ञानी, संयमी और परोपकारी होकर ईमानदारी से लोक कल्याण करते हैं।

हमारे चरित्र नायक श्रद्धेय पूज्य श्री खूबचन्द्र जी महाराज उन्हीं पुरुषों में से एक हैं जिन्होने लोक-कल्याण के लिए ही अपना समृद्ध गृह छोड़कर, आदर्श त्याग का, वैराग्य का, और उच्च संयम का आराधन किया है। पूज्य श्री जी का सौम्यस्वभाव और वचो मधुरिमा तथा नम्रता आज भी उनकी यशो कीर्ति के रूप में विद्यमान हैं। पूज्य श्री जी केवल आत्म-सयमी ही नहीं थे, वे एक बहुत वड़े शास्त्र मर्मज्ञ भी थे। उनकी शास्त्र मर्मज्ञता किसी भी भांति कम न थी। अपने समय के वे बहुत वडे शास्त्र-वेत्ता थे। ज्ञानी होने के नाते वे प्रवक्ता भी बहुत अच्छे थे। उनकी व्याख्यान शैली अतिमनोहारिणी थी। श्रोताओ के मन को मुग्ध करना उनकी व्याख्यान शैली की खास विशेषता थी। उन्होंने जो कुछ कहा वह करके भी दिखाया। वे कथनी और करनी दोनों में ही पूर्ण रूपेण सफल हुए हैं।

श्रद्धेय पूज्य श्री जी देहली में भी चिर-काल तक रह चुके हैं। देहली का बच्चा-बच्चा उन की शान्ति, धीरता और

मधुरिमा से प्रभावित रहा है और रहेगा। जिसने एक बार भी उनके दर्शन कर लिए, वह सदा के लिए उनका पक्का भक्त बन गया। कटुता और कठोरता तो उनको छू भी न पाई थी। त्यागी वर्ग मे उनके समान धीर, शान्त और मधुर भाषी बहुत कम मिलेगे। हमारी काम्य कामना है कि उनकी सी शान्ति, धीरता और मधुर भाषिता हम मे भी उत्पन्न हो। और हम सब उनके प्रदर्शित पथ पर चल सके। अन्ततो गत्वाः शासन देव से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को चिर शान्ति प्राप्त हो।

अन्त मे पाठको की सेवा मे मेरा निवेदन है कि यदि इस पुस्तक मे भूल से कुछ अशुद्धि रही हो तो कृपया उन्हें सुधार ले। हमने प्रूफ सशोधन मे काफी ध्यान रखा है। तथापि मनुष्य से भूल होना स्वाभाविक है। हमे आशा है हमारे पाठक हमारी भूलो को क्षमा करेगे।

गच्छत. स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जना

देहली — समाज

अक्टूबर १९५१ — कपूर

पूज्य श्री खूबचन्द्र जी महाराज के प्रति श्रद्धांजलि

कर्म गति बड़ी विचित्र है। कब क्या होगा, बिना ज्ञान कौन जाने। जन्म और मरण ही संसार है।

हमारा सौभाग्य था कि पूज्य श्री देहली में लगभग चार वर्ष विराजे। दुर्भाग्य कभी पीछा नहीं छोड़ता। पूज्य श्री ने हमे विलखते छोड निर्मोही की भाति देहली से विहार कर दिया। सीने पर पत्थर रखकर हम लोग वापिस चले आये और पूज्य श्री विहार करते हुये ब्यावर जा पहुँचे।

पता लगा पूज्य श्री का स्वास्थ्य अच्छा नहीं। पूज्य श्री का स्वास्थ्य यहां भी अच्छा तो न था, पर चार वर्ष के दीर्घ काल के कारण और उनके सुयोग्य शिष्य आत्मार्थी पंडित मुनि श्री हजारी-मल जी महाराज के स्वर्ग सिधार जाने के कारण पूज्य श्री का मन देहली से ऊब गया और उन्होंने देहली को भुला देना चाहा।

पूज्य श्री का विचार था कि जन्म भूमि की ओर के क्षेत्रो में उनका स्वास्थ्य अवश्य सुधरेगा। अनुमानतः सुधरा भी हो। पर यहा (देहली) की सी शान्ति उन्हें प्राप्त नहीं हो सकी। वहाँ साम्प्रदायिकता और पक्षपात के अमिट झगड़ो के कारण उनका शरीर घुन सा गया। लाभ के स्थान पर ...
हुई। परिणाम, पाठक स्वयं सोच सकते हैं। वही

ध्वजा के नीचे प्रेम से एकत्रित होंगे। परन्तु इसी वर्ष पूज्य श्री गणेशीलाल जी महाराज व युवाचार्य श्री छगनलाल जी महाराज दोनों ही मुनियों ने ब्यावर ही में चतुर्मास करके आशा पर पानी सा फेर दिया। मेरी उन मुनियो से विनती है कि इस झगड़े को, जिससे केवल हानि ही सम्भव है शीघ्र मिटा कर 'महावीर' की प्रेम और अहिंसा की ध्वजा के नीचे आकर अपनी ओजस्विणी वाणी द्वारा एकता का सच्चा सन्देश घर घर में पहुँचा दें।

पूज्य श्री की उदारता और वात्सलयता का वर्णन करते हुये आंखों में पानी भर आता है। उस दिवंगत आत्मा के गुणों की प्रशसा करना सूर्य को दीपक दिखाना मात्र है। उन्होने अपनी योग्यता, धैर्यता, गम्भीरता, भद्रीकता, सरलता, स्पष्टता, मृदुता आदि अनेक गुणो और अ शिष्ट व्यवहारो द्वारा जन-समुदाय का हृदय मोह लिया। उनके ख्यानो में जैन जैनेतर सभी काफी सख्या में आते थे। बाल, वृद्ध, युवा सभी उनके व्यवहारो से सन्तुष्ट थे। यह पूज्य श्री के स्नेह का ही परिणाम था कि देहली जैसे अकर्मण्य स्थान के बच्चे उन्हें गुरु ही नहीं पिता या रक्षक के समान पूज्य समझते थे। उनका एक मात्र सम्बोधन था 'नाना।'

अहा, कितना चमत्कार है और कितना वात्सल्य है इन दो अक्षरों के 'नाना' शब्द में। उससे सहस्त्र गुण। जितना एक पिता अपने प्यारे पुत्र को स्नेह वश 'बेटा' कह कर सम्बोधित करता है। और वास्तव में:—

"मेरे दिल की कली खिल जाती थी, जब कहते थे वे '
दिल चाहता था अर्पण करदूं, तन, मन, धन

चित्र केवल परिचय के लिये है —

पूज्य श्री खूबचन्द जी महाराज

का

जीवन-चरित्र

प्रथम प्रकरण

हरिगीतिका

मुनिराज के उपदेश से वैराग्य का अंकुर बढ़ा।
प्रत्यक्ष होने लग गया जो रङ्ग था उन पर चढ़ा॥
संयम ग्रहण करना यदपि तलवार की सी धार है।
विचलित नहीं होते कभी जिनका पवित्र विचार है॥

पूज्य श्री खूबचन्द जी महाराज

का

जीवन-चरित्र

प्रथम प्रकरण

हरिगीतिका

मुनिराज के उपदेश से वैराग्य का अंकुर बढ़ा।
प्रत्यक्ष होने लग गया जो रङ्ग था उन पर चढ़ा॥
संयम ग्रहण करना यदपि तलवार की सी धार है।
विचलित नहीं होते कभी जिनका पवित्र विचार है॥

मनहरण

मङ्गलाचरण— (१)

विविध उपाय कर हार गया किन्तु जिसे,
विचलित कर सका नेक नहीं काम है।
वन्दनीय वीतराग विघन हरन प्रभु,
परम पवित्र जासु चरित-ललाम है ॥
तप के प्रताप से त्रिताप नष्ट भये आप,
तन पै न व्याप सका शीत अरु घाम है।
कर जोर सिरनाय चरनों में चितलाय,
बार बार उन महावीर को प्रणाम है ॥

(२)

जयतु श्री पार्श्वनाथ प्रभु के सदुपदेश,
सुन के जिसे मनुष्य देव बन जाते हैं।
कुटिल करम के भरम में पड़े जो जीव,
उन्हें शुद्ध धरम का मरम बताते हैं ॥
पाप पुञ्ज भंजन भगत मन रंजन,
विषय-विष वृक्ष पै प्रभंजन लखाते हैं।
सिद्ध करने को मनोभाव [illegible],
खुद वह जि[illegible] आते हैं ॥

दोहा— (३)

आदि नाथ को कर नमन, वाञ्छित फल दातार।
चरित लिखूं मुनिराज का, सफल सुगुण भण्डार॥

स्थान परिचय

मत्तगयंद सवैया— (४)

संस्कृति का सिर मौर इसी
वसुधा पर भारत वर्ष विराजै।
सयुत धान्य तथा धन से प्रकृती
हु जहाँ सु महा छवि छाजै॥
धर्म की धाक जमी जिसमें अरु
पाप कि पूर्ण हुई सुपराजै।
लीन यहीं अवतार अनेकन
बार विभू सचराचर काजै॥

(५)

शोभित गौरव से परि पूरण
प्रान्त यहीं पर राजपुताना ।
राजत राजन के अधिराज
महान उदैपुर के महाराना ॥
पालक जो जनके सुपिता सम
नीतिहिं छाड़ि अनीति न जाना ।
शाह नवाव सुशाशन से
अनुशासित "टोंक" सुराज्य पुराना ॥

(६)

मानस मध्य मराल सरोवर में
बग माल लसै अभिरामा ।
वृक्षन में सुरसाल* तथा धरणी-
धर में मलयाद्रि ललामा ॥
मानव मे मुनि राज विराजत
मल्लन में जिमि सोहत गामा ।
त्यों उस टोंक रियासत माहि
सुशोभित निम्बहड़ा शुभ ग्रामा ॥

* आम

(७)

मानव धर्म धुरीण सबै पति-भक्ति
अहीन जहां कि सुनारी।
वर्तत प्रीति कि रीति परस्पर चोर
नहीं न वहाँ व्यभिचारी ॥
सोहत सुन्दर सौध समूह सुसज्जित
शुभ्र शुधाम अटारी।
बाग बगीचे सजे चहुंधा नगरी
कि लगै सिगरी छबि प्यारी ॥

(८)

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य जहाँ अपना
करतव्य सभी पहिचानें।
मात पितादि कि भक्ति करैं
झगड़ा व लड़ाई कि बात न जानैं॥
मूरति पूजन जात कई कछु
थानक के मुनिराज हिं मानै।
धार्मिक ठाठ रहै दिन रात
सुबात भली किस भांति बखानैं॥

दोहा— (९)

टेकचन्दजी थे वहाँ ओस वंश अवतंस।
जिनके पुण्य-सुयोग से पाप भये प्रध्वंस॥

मत्तगयंद— (१०)

नीति निधान दयालु महान
सदैव सुखी दुख द्वन्द न जाना।
पाप विधान-सुदूर तथा शुभ
कारज में निज ध्यान लगाना॥
भाजन थे सब सम्पति के
पर चाह कभी नहिं सेठ कहाना।
था उनका यह नेम सदा
दिन रात जिनेश्वर के गुण गाना॥

(११)

शत्रु न एक सुमित्र अनेक महान
सुकीर्ति चहूँ दिशि छाई।
पास पड़ोस के ग्रामन में उनके
सम था न तहां व्यव साई॥
सौम्य अनेक कलासु प्रवीण
मिली उनको [illegible] गेहिं बाई।
उत्तम शील उदार [illegible]
चित्त [illegible] सेवकाई॥

हरिगीतिका (१२)

उनकी प्रतिष्ठित कोख मे
पैदा हुए सुत चार थे।
जिनमें प्रथम श्रीमान
चुन्नीलाल गुण भंडार थे॥
धीमान पूज्य चरित्र नायक
खूब चन्द्र मुनीश है।
आत्मज द्वितीय सुबुद्धि
शाली जैनधर्मा धीश है॥

(१३)

वे ज्ञान गरिमागार हैं
वे शान्ती के अवतार हैं।
वे पुण्य पारावार हैं
वे धर्म के आधार हैं॥
तीजे सुपुत्र महान श्रावक
भद्र भोगी दास हैं।
चाथे सुदाड़िम—चन्द्र जी
निर्धन जनो की आस हैं॥

(१४)

मोती तथा श्री रत्न बाई
युग्म कन्या वर हुईं।
जो भक्ति की भंडार संयम
शील की जो घर हुईं॥
इस भांति धन सन्तान का
सुख भोगते आनन्द से।
शाश्वत सुखी थे सेठजी
उन्मुक्त थे दुख द्वन्द से॥

(१५)

आरम्भ होता अब यहां
आदर्श पूज्य चरित्र है।
जो भव्यता का भवन है
साद्यन्त पूर्ण पवित्र है॥
था विक्रमी सम्वत रुचिर
उन्नीसौ अड़तीस का।
तब जैन जनता पर अनुग्रह
हो गया जगदीस का॥

(१६)

थी कार्तिकी शुक्लाष्टमी
अनुकूल दिन बुधवार था।
आनन्द सागर में निमग्न
हुआ सभी परिवार था॥
शुभ चन्द्रमा के साथ शनि
शोभित मकर में खास था।
गुरु शुक्र कन्या में व धन
में भौम का आवास था॥

(१७)

जब मेष में था राहु शुभ
वृश्चीक में बुध था पड़ा।
तब सूर्य केतु तुलास्थ थे
वह लग्न उत्तम था बड़ा॥
सर्वाङ्ग सुन्दर लग्न में शुभ
जन्म मुनिवर का हुआ।
ऐसा अचानक ही उदय
सौभाग्य उस घर का हुआ।

(१८)

उज्जवल प्रभा के सामने
गृहदीप निष्प्रभ हो गये ।
क्या खूब चन्द्रोदय हुआ
तम पुञ्ज सहसा खो गये ॥
सीमा न थी उस वक्त
माता अरु पिता के हर्ष की ।
तगदीर जागी विश्व के
सिरमौर भारत वर्ष की ॥

(१९)

तन प अलौकिक कान्ति थी
मुख पै विराजित शान्ति थी ।
ये देव हैं अथवा मनुज
होती यहीं नित भ्रान्ति थी ॥
नर नारियों का झुण्ड उनको
देखने आने लगा ।
वह कान्ति शुचि शिशुकी निरख
आनन्द अति पाने लगा ॥

(२०)

बढने लगे इस भांति वे
माता पिता के प्यार मे ।
शोभित हुये मणि सोहता
जिस भाति मुक्ताहार मे ॥
पाता परम शोभा यथा
जल मे सदा जलजात* है ।
जिमि चन्द्रमा आकाश मे
अति तेज पुञ्ज लखात है ॥

(२१)

इमि जैन कुल में जन्म लेकर
आप शोभा पा रहे ।
माता पिता परिवार और
समाज को सु दिपा रहे ॥
जैसे उजेले पाख मे
बढ़ता रुचिर राकेश§ है ।
बढ़ने लगा शिशु आज
जिससे गौरवान्वित देश है ॥

*—कमल §—चन्द्र

(२२)

विद्वान गुरुओं के निकट
सब भांति विद्यार्जन किया ।
दिल खोल कर माता पिता ने
खर्च इसमें धन किया ॥
उत्तम सुविद्या प्राप्ति के हैं
तीन बस साधन यही ।
सेवा गुरू की अर्थ से
विद्या थवा यदि हो नहीं ॥

(२३)

सोलह वरस की आयु मे ही
बुद्धि बलशाली बने ।
नन्दन विपिन परिवार के
अब आप वन माली बने ॥
बढ़ती गई अनुपम निपुणता
आपकी व्यापार में ।
सम्मान भी बढ़ने लगा
घर में तथा बाजार में ॥

(२४)

शुचि वक्त्रसे* कविता सुधा की
धारनित बहने लगी।
उनके हृदय की भावनाओ
को प्रगट कहने लगी॥
आई युवावस्था सबल
सर्वाङ्ग सुन्दरता मयी।
माता पिता के मानसो मे
वध गई आशा नयी॥

(२५)

चिन्ता लगी उनके हृदय में
युवक सुत के व्याह की।
वर्णन असम्भव है सुशिला
नव वधू की चाह की॥
श्रीमान देवीचन्द्र जी
जिनका अटाना वास है।
है ओसवाल विनीत बोरा
गोत्र जिनका खास है॥

*—मुख,

(२६)

उनकी परम प्रिय कन्यका का
योग अनुपम मिल गया।
बढ़ने लगा उत्साह नित
परिवार का मन खिल गया॥
दोनो घरो में ब्याह की
सानन्द तैयारी हुई।
परिणत पिता की कल्पनाएँ
कार्य मे सारी हुईं॥

(२७)

था विक्रमी सम्वत रुचिर
उन्नीस सौ छयालीस का।
अगहन सुदी तिथि पूर्णिमा
पावन सुदिन था ईश का॥
उस रोज अति उत्साह से
पाणी ग्रहण उनका हुआ।
सम्पूर्ण दोनों पक्ष के
सङ्कल्प अब मन का हुआ॥

(२८)

साकर-वधू वर खूब शीश
यद्यपि नथे कुछ बोलते।
पर थे हृदय मे प्रेम का
मादक सुधा रस घोलते॥
प्रारम्भ अब गार्हस्थ्य जीवन
का यही पर पाठ था।
सुन्दर सुखद दाम्पत्य का
क्या ही मनोहर ठाट था॥

(२६)

उस वक्त वह जोड़ी युगल
किसका न मन थी मोहती।
जब व्याह वेदी पर सुमङ्गल
वेश मे थी सोहती॥
आमोद बरसाती वहाँ
थी हवन-धूम मयी घटा।
छिटकी चतुर्दिक् वर वधू
के वस्त्र की सुन्दर छटा॥

(३०)

शुभलग्न में सम्पन्न वैवाहिक
क्रिया होने लगी।
वादित्र यन्त्रों की मधुर
धुनि श्रवण सुख बोने लगी॥
विधिवत् पुरोहित ने युगल
कर सम्मिलित करवा दिया।
सूने हृदय में प्रेम का
पीयूष शुभ भरवा दिया॥

(३१)

वदली सुवृक्षाश्रित यथा
निशदिन सुकोमल है लता।
इस भांति वनिता का
सुकोमल चित्त भी है पनपता॥
नारी परम धन्या वही
जिसको सुघड़ पति मिल गया।
रवि के उदय से कमलिनी-सा
अङ्ग सारा खिल गया॥

(३२)

सम्पूर्ण करके ब्याह की
आनन्द से सारी प्रथा ।
शोभित हुये यो दम्पती
जिनके सदृश कोई न था ॥
सासू श्वसुर से ले विदा
प्रस्थान जब होने लगा ।
उस नववधू के साथ ही
परिवार सब रोने लगा ॥

(३३)

सज्जित सभी आभूषणो से
वधू करवाई गई ।
माता पिता अरु गुरुजनो के
पाँव परवाई गई ॥
देकर शुभाशीर्वाद उनको
कर विदा अति प्यार से ।
लेने लगे विश्राम वे
उन्मुक्त हो इस भार से ॥

(३४)

थी प्रीति और पवित्रता की
मूर्ति सी वह जा रही।
थी मौन होकर निज पती के
गुण हृदय मे गारही ॥
पहुँचे सभी सानन्द लेकर
वर वधू को ग्राम मे।
होने लगा संङ्गीत मङ्गलमय
पिता के धाम मे ॥

(३५)

दृग देख कर उनको कभी
श्रम मान कर थकते न थे।
ताता लगा था लोग रञ्जक
धैर्य धर सकते न थे ॥
सासू श्वसुर की नित्य सेवा
नव वधू करने लगी।
पति कृपा से भाव मनमें
उत्तम भरने लगी ॥

गार्हस्थ्य जीवन के सभी
कर्त्तव्य अपना पालते।
करके पिता को मुक्त सारा
कार्य भार सम्भालते॥
बढ़ने लगी नित भावना
उनके हृदय में धर्म की।
चर्चा किया करते सदा
भावुक जनों से कर्म की॥

वैराग्य की उत्पत्ति

द्वितीय प्रकरण

दोहा— (३७)

चार वर्ष सुख से रहे केवल आप गृहस्थ ।
तदनन्तर संसार से होने लगे तटस्थ ॥

हरिगीतिका— (३८)

सम्पर्क मे निर्ग्रन्थ मुनियो के
सदा रहने लगे ।
उपदेश सुन वैराग्य-वृत्ति-
प्रवाह मे वहने लगे ॥
निज बुद्धिबल से धर्म का
भण्डार वे भरने लगे ।
अब आत्मा परमात्मा की
बात नित करने लगे ॥

(३६)

समझा उन्होंने इस जगत में
धर्म केवल सार है।
इसमें उलझना व्यर्थ है
सुख दुःख सब निस्सार है ॥
जो लोग इस संसार को ही
स्वर्ग मान सराहते।
वे नासमझ हैं नापदानों*
कीट§ बनना चाहते ॥

(४०)

इस भाँति उनके हृदय में
सुविचार नित आने लगे।
उन प्रेम मय जिन देव के
दिन रात गुण गाने लगे ॥
हे आत्मन् तू व्यर्थ ही
नर जन्म रत्न गवां रहा।
जग में उलझ कर तू भला
बतला क्या वस्तु पा रहा ॥

* नाली के। § कीड़े।

(४१)

मुनिराज के उपदेश से
वैराग्य का अंकुर बढ़ा ।
प्रत्यक्ष होने लग गया
जो रंग था उन पर चढ़ा ॥
संयम ग्रहण करना यदपि
तलवार की सी धार है ।
विचलित नहीं होते कभी
जिनका पवित्र विचार है ॥

(४२)

बढ़ने लगी नित लालसा
संयम सुधा-रस पान की ।
अब चाह थी बस एक
शास्त्रों के अलौकिक ज्ञान की ॥
यदि सत्य है वैराग्य मन मे
जा कभी सकता नहीं ।
कोई प्रलोभन साधु जन को
है लुभा सकता नहीं ॥

(४३)

यह स्वार्थ का संसार है
कोई नहीं अपना यहाँ।
जाना पड़ेगा ही तुम्हें तज
सौख्य का सपना यहाँ॥
क्यों व्यर्थ ही इसमें उलझ
सहता अनेको कष्ट है।
परमात्मा का ध्यान कर
क्यो जन्म करता नष्ट है॥

(४४)

तज दे सभी आभूषणों को
पहिन भूषण शील का।
क्यो पी रहा जल तज
सुनिर्मल गंगा खारी झील का॥
यह धन तथा यौवन किसी का
सर्वदा रहता नहीं।
अविचल अमल निर्वाण का
तू मार्ग क्यों गहता नहीं॥

(४१)

मुनिराज के उपदेश से
वैराग्य का अंकुर बढ़ा।
प्रत्यक्ष होने लग गया
जो रंग था उन पर चढ़ा॥
संयम ग्रहण करना यदपि
तलवार की सी धार है।
विचलित नहीं होते कभी
जिनका पवित्र विचार है॥

(४२)

बढ़ने लगी नित लालसा
संयम सुधा-रस पान की।
अब चाह थी बस एक
शास्त्रों के अलौकिक ज्ञान की॥
यदि सत्य है वैराग्य मन में
जा कभी सकता नहीं।
कोई प्रलोभन साधु जन को
है लुभा सकता नहीं॥

(४७)

कुछ काल के अतिरिक्त
बहुधा मौन ही रहने लगे।
सुन्दर सुकोमल देह पर
सब कष्ट भी सहने लगे॥
सम्भव न था उनको डिगाना
इस पवित्र विचार से।
अब हो चुके थे वे विरक्त
अनित्य इस ससार से॥

(४८)

निर्ग्रन्थ जीवन का यहीं
अभ्यास वे करने लगे।
मन में सहर्ष पवित्र धार्मिक
भावना भरने लगे॥
इस भांति लख कर आत्म चिन्तन
में पिता निज लाल को।
बहु भांति समझाने लगे
तज पुत्र इस भ्रम जाल को॥

(४९)

आशा तुम्हीं पर पुत्र मेरी
लग रही थी सर्वदा।
पर हाय मेरे भाग्य में
जाने न क्या क्या है बदा॥
सुत! फूल सा माता पिता
के प्यार में तू है पला।
संयम अतीव कठोर है
क्यों मूर्खता करने चला॥

(५०)

मैं वृद्ध हूँ परिवार का
सारा तुम्हीं पर भार है।
आज्ञा न मैं दूंगा कभी
हठ ठानना बेकार है॥
संसार से विश्रान्ति लेने
का मुझे अधिकार है।
तुम पर भविष्यत् का
अभी सम्पूर्ण दारमदार है॥

(५१)

रहकर अभी घर पर सुवन*
सुख भोग तू संसार का।
मत व्यर्थ बन कारण पिता
अरु पुत्र के तकरार का॥
हे वत्स इस घर का तुही
रक्षक तथा प्रतिपाल है।
तेरे परिश्रम से हुआ
परिवार मालामाल है॥

(५२)

मत पुत्र तुम मुझको तनय§ के
प्यार से वञ्चित करो।
दिन रात दूनी चौगुनी
धन राशि तुम सञ्चित करो॥
युवती सती पतिदेव
पति भक्ता तुम्हारी है बहू।
उसकी तरफ भी ध्यान दो
तुमको अधिक मैं क्या कहूँ॥

* पुत्र। § बेटा।

(४६)

आशा तुम्हीं पर पुत्र मेरी
लग रही थी
पर हाय मेरे भाग्य में
जाने न क्या क्या है
सुत ! फूल सा माता पिता
के प्यार में तू है
संयम अतीव कठोर है
क्यों मूर्खता करने

(५०)

मैं वृद्ध हूँ परिवार का
सारा तुम्हीं पर भा
आज्ञा न मैं दूंगा कभी
हठ ठानना बेकार
संसार से विश्रान्ति लेने
का मुझे अधिकार
तुम पर भविष्यत् का
अभी सम्पूर्ण दारमदार

(५१)

रहकर अभी घर पर सुवन*
सुख भोग तू संसार का।
मत व्यर्थ वन कारण पिता
अरु पुत्र के तकरार का॥
है वत्स इस घर का तुही
रक्षक तथा प्रतिपाल है।
तेरे परिश्रम से हुआ
परिवार मालामाल है॥

(५२)

मत पुत्र तुम मुझको तनय§ के
प्यार से वञ्चित करो।
दिन रात दूनी चौगुनी
धन राशि तुम सञ्चित करो॥
युवती सती पतिदेव
पति भक्ता तुम्हारी है यह।
उसकी तरफ भी ध्यान दो
तुमको अधिक मैं क्या कहूँ॥

* पुत्र। § बेटा।

(५५)

यह देह क्षण भंगुर न क्यों
फिर मोक्ष का साधन करें।
इस क्षणिक सुख के वास्ते
भव कूप में हम क्यों परें॥
देकर करोडो रुपये
आपत्ति लेना भूल है।
साधे न क्यों उस मुक्ति को
जो सब सुखो का मूल है॥

(५६)

जिमि हंस § मानस छोडकर
† सर पर कभी जाता नहीं।
त्यों आत्मा तज मोक्ष को
अन्यत्र सुख पाता नहीं॥
सुत वित्त नारी स्वजन
अरु परिवार बन्धन मूल है।
इन में उलझना ही मनुज
की एक भारी भूल है॥

§ मानसरोवर। † तालाब।

(५७)

अपना जिसे हम मानते
वह रोग का घर देह है।
आश्चर्य क्यों इससे मनुज
फिर भी बढ़ाता नेह है॥
यमदूत आते जिस समय
कोई न देता साथ है।
जाता अकेला ही निपट
ज्यों दीन हीन अनाथ है॥

(५८)

यह जानने वाला नहीं
हर्गिज पड़ेगा पाप में।
अन्तिम विदा लेनी पड़ेगी
घोर पश्चात्ताप में॥
जो स्वाद पाते अमृत का
विषपान वे करते नहीं।
जन मुक्ति अनुरागी जगत
जञ्जाल में परते नहीं॥

(५६)

निर्मल दयाप्लावित हृदय मे
वैर आ सकता नहीं।
अगूर का प्रेमी कभी
निम्बोड़ खा सकता नहीं॥
तज कर मधुर सन्तोष रस
नाहक फिरे क्यो दीन है।
नर कौन गर्दभ पर चढ़ेगा
मत्त गज आसीन है॥

(६०)

इस हेतु अब मुझ पर
पिता जी शुभ अनुग्रह कीजिए।
सुन कर निवेदन पुत्र का
अति शीघ्र आज्ञा दीजिए॥
संसार में बस स्वार्थ का ही
है फकत रोना सभी।
मेरे लिए हे तात
चिन्तातुर नहीं होना कभी॥

(६१)

इस नाशमान शरीर का
होता यहीं पर अन्त है।
जिस भांति दिखलाता छटा
दिन चार सिर्फ वसन्त है॥
यह मान कर मानव कि
यह सच्चा सभी सम्बन्ध है।
फस कर उलझा मोह रूपी
जाल मे मति अन्ध है॥

(६२)

गुरुदेव के सद्बोध बिन
अज्ञान नश जाता नहीं।
उनकी कृपा-नौका बिना
भव पार हो पाता नहीं॥
दुर्वासना का त्याग ही
जग मे अनुत्तम दान है।
त्यागी मनुज ही लोक में
पाता सदा सम्मान है॥

राय साहिब सेठ लालचन्द जी कोठारी, गवर्नमेंट ट्रेजरार, आनरेरी मजिस्ट्रेट
मालिक फर्म—
राय बहादुर सेठ कुन्दनमल लालचन्द
मैनेजिंग एजेन्ट—
दी महालक्ष्मी मिल्स लिमिटेड, ब्यावर।

(६३)

शम दम यमादिक शक्ति धन
जिसके वही धनवान हैं ।
जिसमें दया गुरुभक्ति का
गुण है वही गुणवान है ॥
संसार में वे लोग जो
इस भावना के भक्त हैं ।
होते कभी नहीं स्वप्न में
भी काम भोगा सक्त है ॥

(६४)

जब तक नहीं मैं मुक्ति रूपी
रत्न अनुपम पाऊंगा ।
तब तक जिनेश्वर देव में
दिनरात ध्यान लगाऊंगा ॥
अविचल परम-पद प्राप्ति की
बढ़ती रहे शुभ भावना ।
आवें अनेकों कष्ट पर
होऊं कदापि न अनमना ॥

(६७)

हे जीव बारम्बार क्यों तू
जन्म धारण कर रहा ।
नश्वर जगत में पाप का
भंडार नाहक भर रहा ॥
होता कभी मानव तथा
बनता कभी तू देव है ।
आवा गमन के चक्र में
पड़ता तुही स्वयमेव है ॥

(६८)

तू कीर्ति का लोलुप कभी
करता अलौकिक काम है ।
अद्भुत प्रदर्शन मे कभी
जग में कमाता नाम है ॥
पर यह सभी केवल
मदारी के सदृश्य खेल हैं ।
उप भुक्ति और मुमुक्ति का
मिलता न किञ्चित मेल है ॥

(७१)

इस पापपथ मे शीघ्र ही
अब क्यों विमुख होता नहीं।
तज राग द्वेषादिक सकल
सुख नींद क्यों सोता नहीं ॥
लज्जित न होता पाप करके
भी महा बेशर्म है ।
निश्चिन्त है डरता नहीं
करता सदा दुष्कर्म है ॥

(७२)

इन काम क्रोधादिक कषायों
के हुआ आधीन है ।
तू धर्म के बिन तड़फड़ाता
जल बिना ज्यों मीन है ॥
पड़ कर जगत्-मृग तृष्णिका में
ठोकरें खाता फिरे ।
क्यों तू लिए यह व्यर्थ का
सम्बन्ध अरु नाता फिरे ॥

(७५)

*आतप भयङ्कर शीत का भी
झेलता आघात है।
कुष्टादि रोगों मे ग्रसित
होता रहा दिन रात है॥
अपने करों से आप ही
करता स्वकीय अनिष्ट है।
कुछ सोच तो रे जीव क्या
यह कष्ट तुझको इष्ट है॥

(७६)

सुख भोग की इन वस्तुओं मे
भी न कोई सार है।
तेरा नहीं कोई यहां
सब स्वार्थ का संसार है॥
इस भाँति अपनी आतमा को
आप समजाने लगे।
जिन देव के गुण गण
पिता के सामने गाने लगे॥

* धूप, (घाम)।

(७९)

कल्याणमय शुभ धर्म है
सब बात का यह मर्म है।
ठंडे सभी बाजार केवल
धर्म का ही गर्भ है॥
सारे प्रलोभन व्यर्थ हैं
हे तात आज्ञा दीजिए।
वैराग्य रंचित पुत्र पर
कुछ तो अनुग्रह कीजिए॥

(८०)

आग्रह निरख कर पुत्र का
बहु भांति समझाने लगे।
अब सेठ जी युग नेत्र से
प्रेमाश्रु बरसाने लगे॥
बोले तनय आवेश में
आकर करे न प्रमाद तू।
अज्ञान के वश कर रहा है
व्यर्थ ही बकवाद तू॥

(८१)

व्यापार द्वारा धन कमा
सन्तुष्ट कर पितुमात को ।
क्यों डालता है कष्ट मे
तू पुत्र अपने गात को ॥
तिल मात्र भी है सुख नहीं
वैराग्य मे सच मान ले ।
पछतायगा पीछे स्वजीवन
के सभी अरमान ले ॥

पुत्र का पिता को उत्तर

चितहंस छन्द मात्रिक (८२)

अग्नि अपनी उष्णता को छोड़ दे ।
मित्रता कोई खलों की जोड़ दे ।।
सूर्य पश्चिम मे उदय होने लगे ।
नीर अपनी शीतता खोने लगे ।।

(८३)

त्याग दे तलवार अपनी तीक्ष्णता ।
छोड़ देवें दुष्टजन भी दुष्टता ।।
पर नहीं मैं मुक्ति से यह मित्रता ।
छोड़ सकता हूं कभी सुनिए पिता ।।

(८४)

मित्र रूपी सिंह हो जब आ रहा।
भय बुढ़ापा व्याघ्र हो दिखला रहा॥
व्याधि वृश्चिक छेदती हो देह को।
बन्धु जन हों छोड़ बैठे नेह को॥

(८५)

धर्म ही उस वक्त देता है शरण।
दीखता जब सामने निश्चित मरण॥
फिर न क्यों हम धर्म का अर्जन करें।
अमृत से विष का न क्यों मार्जन करें॥

पिता की विषादोक्ति (८६)

पुत्र की यह बात सुन बोले पिता।
मिट नहीं सकती कभी भवितव्यता॥
सोचना उसके लिए तब व्यर्थ है।
जो बदलने में मनुज असमर्थ है॥

(८७)

कौन सी इसमें नई फिर बात है।
सोचता जिसके लिए तू तात है॥
है जहां संयोग नित्य वियोग है।
सार इस संसार का सुख भोग है॥

(८८)

जगत मे नारी सुखों की खान है।
नारि से पैदा हुए भगवान हैं ॥
क्यों इसे तू मूर्खता वश छोड़ता।
प्रेम क्यो सच्चा नहीं तू जोड़ता ॥

(८९)

भाग्य से गृह धर्मिणी तुझको मिली।
बाल पन बीता युवावस्था खिली ॥
छोड़ कर उसको किधर तू जा रहा।
क्यो अमृत तज कर स्वयं विष खा रहा ॥

प्रस्थान (९०)

इस तरह आग्रह पिता का जान कर।
लक्ष्य मे बाधक इसे पहिचान कर ॥
चल दिए अविलम्ब घर को त्याग कर।
मुक्ति नारी से परम अनुराग कर ॥

(९१)

चित्त मे भगवान का शुभ ध्यान कर।
तुरत नीमच की तरफ प्रस्थान कर ॥
जावरा पहुँचे जहां मुनिराज थे।
खूबचन्द्र परम प्रफुल्लित आज थे ॥

(६२)

रत्न चन्द्र तथा जवाहर लाल जी।
नन्दलाल मुनीन्द्र हीरालाल जी ॥
थे विराजित जावरा मे शान्ति से।
चन्द्र रवि थे मन्द जिनकी कान्ति से ॥

(६३)

चरण वन्दन कर सुना उपदेश को।
थे निरखते प्रेम से मुनिवेश को ॥
सोचते थे भाग्य कब होगा उदै।
का अलौकिक शक्ति की होगी विजै ॥

(६४)

नियम से उपदेश नित सुनने लगे।
भक्ति मे मन मे उसे गुनने लगे ॥
रात दिन वे ध्यान मे ही मस्त थे।
ईश के गुणगान मे ही व्यस्त थे ॥

(६५)

तीव्रता वैराग्य चारों ओर था।
नाचता गुरु घन निरख मन मोर था।
धर्म श्रद्धा ही अनूपम शक्ति है।
मुक्ति की जननी अमल गुरु भक्ति है ॥

(९६)

धर्म पर श्रद्धा बढानी चाहिए ।
यह घड़ी खाली न जानी चाहिए ॥
हर समय थे सोचते मन में यही ।
राह तो बस धर्म ही की है सही ॥

(९७)

बात यह सुत की पिता ने जब सुनी ।
बढ़ गई वह वेदना तब चौगुनी ॥
जावरा पहुँचे न छन की देर की ।
जैन थानक मे स्वसुत की टेर की ॥

(९८)

वन्दना कर प्रेम से मुनि राज की ।
बात छेड़ी तुरत अपने काज की ॥
देख कर निज पुत्र को रोने लगे ।
आँसुओ से मुख कमल धोने लगे ॥

(९९)

प्रेम से बोले तनय तू मान जा ।
साधुता की व्यर्थता को जान जा ॥
घर अभी चल साथ मेरे आज ही ।
प्रिय तुझे क्यों सिर्फ हैं मुनिराज ही ।

(१००)

मुक्ति तो गार्हस्थ्य मे भी मिल सके ।
बावड़ी मे भी कमलिनी खिल सके ॥
शहद मिलना हो अगर दीवाल से ।
कौन लाने जाय पर्वत माल मे ॥

(१०१)

पुत्र घर पर चल हमारे साथ तू ।
मत करे हमको नितान्त अनाथ तू ॥
शोक मे जननी तुम्हारी रो रही ।
पुत्र बिन वह धैर्य अपना खो रही ॥

(१०२)

पूज्य हैं सब भांति मेरे आप ही ।
रास्ता बतलाइए मुझको सही ॥
रोकना अब तो महान अनर्थ है ।
जिद पकड़ना हे पिता जी व्यर्थ है ॥

(१०३)

है सुखी कोई नहीं इस लोक मे ।
जल रहे हैं सब भयङ्कर शोक में ॥
क्यों करें नहि मुक्ति की फिर भावना ।
है उचित क्या आत्म का करना मना ॥

(१०४)

प्राणियो की यह भयङ्कर भूल है।
आत्महित के सर्वथा प्रतिकूल है॥
मस्त रहते है अबुध सुख भोग मे।
ग्रस्त हैं यद्यपि भयङ्कर रोग मे॥

(१०५)

मौत के मुख में प्रतिक्षण जा रहे।
दूसरे इससे महा दुख पा रहे।
पाप करने से न आते बाज हैं।
पापियो के बन रहे सिरताज हैं॥

(१०६)

किन्तु ज्ञानी जन इसे भ्रम मानते।
आत्म हित तो मुक्ति में ही जानते॥
त्याग देते वे तुरत ससार को।
सार लेते फेंक कर निस्सार को॥

द्रुत विलम्बित छन्द (१०७)

क्षणिक है जग की कमनीयता।
मधुरता ममता रमणीयता॥
मनुज का यह चन्चल देह है।
भयद व्याधि समन्वित गेह है॥

पिता-पुत्र से

(११०)

सरल थे लगते तुम को बड़े ।
पर अहो निकले इतने कड़े ॥
सुत तजो इस व्यर्थ विवाद को ।
जनक की सुन के फरियाद को ॥

(१११)

वसन भोजन भी परतन्त्र है ।
कब कहो मुनि वृति स्वतन्त्र है ॥
गमन पैदल ही करना पडे ।
वजन ऊपर से धरना पड़े ॥

(११२)

अमित कष्ट विधायक लोच है ।
इसलिए मुझ को अति शोच है ॥
नव सुकोमल पुत्र शरीर है ।
यदपि तू अति धार्मिक वीर है ॥

पिता-पुत्र से

(११०)

सरल थे लगते तुम को बड़े ।
पर अहो निकले इतने कड़े ॥
सुत तजो इस व्यर्थ विवाद को ।
जनक की सुन के फरियाद को ॥

(१११)

वसन भोजन भी परतन्त्र है ।
कब कहो मुनि वृति स्वतन्त्र है ॥
गमन पैदल ही करना पड़े ।
वजन ऊपर से धरना पड़े ॥

(११२)

अमित कष्ट विधायक लोच है ।
इसलिए मुझ को अति शोच है ॥
तव सुकोमल पुत्र शरीर है ।
यदपि तू अति धार्मिक वीर है ॥

(१०८)

विष भरा वनिताक्षि कटाक्ष है ।
हृदय-पीडन मे अति दक्ष है ॥
यह रहस्य जिसे नहिं ज्ञात है ।
फंस वही इसमें पछतात है ॥

(१०९)

फिर वरें हम क्यो नहिं मुक्ति को ।
तज भयानक भव-उपभुक्ति को ॥
दुख सहें हम क्यो अात दीन ह्वै ।
विषय के परिपूर्ण अधीन ह्वै ॥

पिता-पुत्र से

(११०)

सरल थे लगते तुम तो बड़े ।
पर अहो निकले उतने कड़े ॥
सुन सको इस अर्थ विचार को ।
जनप की सुन के फरियाद को ॥

(१११)

वसन भोजन भी परतन्त्र है ।
पर कहो मुनि वृत्ति स्वतन्त्र है ॥
गमन पैदल ही करना पड़े ।
वजन ऊपर से धरना पड़े ॥

(११२)

अधिक यह विभागक लोच है ।
इसलिए मुझ को अति सोच है ॥
जब सुकोमल पुत्र शरीर है ।
यदपि तू अति धार्मिक वीर है ॥

पुत्र-पिता से

(११३)

तनिक भी अब सोच न कीजिए ।
हुकुम आप मुझे झट दीजिए ॥
मन रमा रमणी मम मुक्ति है ।
अयि पिता तव व्यर्थ सुयुक्ति ॥

(११४)

ग्रसित जो जन काम विकार से ।
दब रहे इस जीवन भार से ॥
समझ के इसके परिणाम को ।
तजत हैं बुध-मानव काम को ॥

(११५)

फंस गया इसके यदि जाल में ।
रह नहीं सकता खुश हाल में ॥
फिरत मत्त सदा वह डोलता ।
अमृत-जीवन में विष घोलता ॥

(१२०)

जब नहीं इस भाँति मना सके ।
स्वसुत को अपना न बना सके ॥
जनक के दुख का नहिं पार था ।
हृदय का वह शोक अपार था ॥

(१२१)

प्रियतमा प्रिय से कहने लगी ।
नयन-नीर नदी बहने लगी ।
किमि धरूँ अब धैर्य तुम्हीं कहो ।
प्रण तजो यदि नाथ मुझे चहो ॥

(१२०)

जब नहीं इस भाँति मना सके ।
स्वसुत को अपना न बना सके ॥
जनक के दुख का नहिं पार था ।
हृदय का वह शोक अपार था ॥

(१२१)

प्रियतमा प्रिय से कहने लगी ।
नयन-नीर नदी बहने लगी ।
किमि धरूँ अब धैर्य तुम्हीं कहो ।
प्रण तजो यदि नाथ मुझे चहो ।

(१२३)

शीतल अनिल अङ्ग भङ्ग को जलाए देत।
देह दहकाए देत चन्द्र को प्रकाश है॥
आप के वियोग में हेमन्त भी §निदाघ भया।
अबला को एक मात्र पति ही की आशा है॥
मान के हमारी प्राणनाथ तुच्छ प्रार्थना को।
करो न शिथिल अपना जो प्रेम-पाश है॥
रात दिन हिय में हमारे यही आग लगी।
प्रति क्षण हुआ जात तन को विनाश है॥

(१२४)

फीके पड़े जग के सकल सुख औ विलास।
आप ही की सोच मे सदैव गली जाती हूं॥
मन में न चैन रम राग हू में प्रीति है ना।
जाऊँ किन कहीं पर ठौर नहिं पाती हू॥
व्याकुल बना ही रहता है चित्त बावला सा।
यद्यपि इसे मैं बार बार समझाती हूँ॥
आप का विरह-दाह देह झुलसाए देत।
इसी हेतु आंसुओ की धार मे नहाती हूँ॥

§ ग्रीष्म।

पति का पत्नी से

(१२७)

स्वारथ सधे तो पति प्राण प्रिय है परन्तु ।
स्वारथ की हानि देख दूर भाग जाती हैं ॥
भूषण वसन [illegible] अशन मिले तो ठीक ।
अन्यथा स्वपति को शुनी सी काट खाती हैं ॥
मन में है और पर वचन में और कुछ ।
समयानुसार मीठी बात भी बनाती हैं ॥
छल बल से अधीन करके पुरुष को वे ।
काठ पुतली सा निज हाथ में नचाती हैं ॥

पति का पत्नी से

(१२७)

स्वारथ सधे तो पति प्राण प्रिय है परन्तु ।
स्वारथ की हानि देख दूर भाग जाती हैं ॥
भूषण वसन अरु अशन मिले तो ठीक ।
अन्यथा स्वपति को शुनी सी काट खाती हैं ॥
मन में है और पर वचन में और कुछ ।
समयानुसार मीठी बात भी बनाती हैं ॥
छल बल से अधीन करके पुरुष को वे ।
कठ पुतली सा निज हाथ में नचाती हैं ॥

(१२८)

बोले खूबचन्द जी न चलेगी तुम्हारी एक।
करके विवाद बकवाद क्यो बढ़ाती हो॥
पढ चुके पढ़ना जो जग के प्रपञ्च सभी।
अधिक फिजूल तुम मुझे क्यो पढाती हो॥
हृदय हमारा बन चुका है कठोर अति।
इस पै विशेष राग रङ्ग क्यो चढाती हो॥
बाधा डाल कर तुम इस अद्वितीय मारग में।
कौन सा कहो तुम आनन्द पाती हो॥

(१२९)

विश्व की न शक्ति कोई डिगा सकती है मुझे।
तज देह-नेह मैं विदेह बन जाऊँगा॥
अपवित्र जग-जन प्रेम सरोवर त्याग।
स्वच्छ-जिन-प्रेम-पयोदधि में नहाऊँगा॥
चाह नहिं प्रियतम पति हू कहाइबे की।
निर ग्रन्थ अनगार यति कहलाऊँगा॥
यह मान सत्य वचन धीर धरो हृदम में।
करके विहार यहां अवश्य ही आऊगा॥

रौला (१३७)

सुन अबला के वैन
मौन मुख मण्डल सोहै ।
बोले तनिक विचार
जगत में अपना कोहै ॥
पूर्व उपार्जित कर्म कुफल
प्राणी पाते हैं ।
इसी हेतु संसृति में
नित आते जाते हैं ॥

(१३८)

कृमि कुल से है व्याप्त
व्याधियों का जो घर है ।
यह मानव शरीर फिर
व्यर्थ गर्व इस पर है ॥
रुधिर मांस अरु अस्थि
पिण्ड ही इसको मानो ।
इसकी आस्था त्याग
सत्य सुख को पहिचानो ॥

छल

(१२८)

बोले खूबचन्द जी न चलेगी तुम्हारी एक।
करके विवाद बकवाद क्यों बढ़ाती हो॥
पढ़ चुके पढ़ना जो जग के प्रपञ्च सभी।
अधिक फिजूल तुम मुझे क्यों पढ़ाती हो॥
हृदय हमारा बन चुका है कठोर अति।
इस पै विशेष राग रङ्ग क्यों चढ़ाती हो॥
बाधा डाल कर तुम इस अद्वितीय मारग में।
कौन सा कहो तुम आनन्द पाती हो॥

(१२९)

विश्व की न शक्ति कोई डिगा सकती है मुझे।
तज देह-नेह मैं विदेह बन जाऊँगा॥
अपवित्र जग-जन प्रेम सरोवर त्याग।
स्वच्छ-जिन-प्रेम-पयोदधि में नहाऊँगा॥
चाह नहिं प्रियतम पति हू कहाइबे की।
निर ग्रन्थ अनगार यति कहलाऊँगा॥
यह मान सत्य वचन धीर धरो हृदम में।
करके विहार यहां अवश्य ही आऊंगा॥

(१३०)

मन में उमङ्ग अङ्ग अङ्ग में विराग रङ्ग।
गृहिणी को सङ्ग किस भांति मुझे भाएगा॥
व्यर्थ हैं तुम्हारे बकवाद औ विषाद आदि।
हिय में तुम्हारे यह शोक ही बढ़ाएगा॥
सलाह है मेरी तुम्हें सप्रेम बार बार।
धरम-अराधन ही सुख पहुंचाएगा॥
मेरा मोह तज जिनदेव का भजन करो।
सुन्दर सुयोग यह फिर नहिं आएगा॥

(१३१)

विषय की वासना तो बढ़ती ही जाति सदा।
इस हेतु ज्ञानी जन इसे न बढ़ाते हैं॥
भोग औ विलास की अवृत्ति कर आश त्याग।
सयम को सहुलास गले से लगाते हैं॥
व्यर्थ के सकल बकवाद औ विवाद छांड़।
दिन रात जिनदेव के सुगुण गाते हैं॥
सन्त-समागम अरु शास्त्र का मनन त्याग।
और कहीं पर सुख शान्ति नहीं पाते हैं॥

———

पत्नी पति से

(मालिनी छन्द) (१३२)

प्रियतम यह कैसी
रागिनी गा रहे हो ।
अशरण अबला का भाग्य
क्यो ढा रहे हो ॥
अनहत यदि प्यारी थी
तुम्हें मुक्ति रानी ।
तब पति बनने की
क्यों रची थी कहानी ॥

(१३३)

सब अचल सुखो की
खानि है सिर्फ नारी ।
तज कर दुख देना
नाथ है पाप भारी ॥
सहृदय पति के जो
कण्ठ का हार होती ।
बन कर दुखियारी
भाग्य को आज रोती ॥

(१३४)

किस विधि सब आशा
धूल मे जा रही है ।
मुकुलित फिर होगी जो
जो कली गा रही है ॥
मन अमित निराशा
आज क्यो छा रही ।
यह निठुर निशानी मुक्ति
क्या पा रही है ॥

(१३५)

तन विकल हुआ है
चैन भी मैं न पाती ।
प्रिय विरह मलीना
अश्रुधारा बहाती ॥
फल कुछ न मिलेगा
व्यर्थ पीड़ा दिए से ।
अगतिक अबला का
भाग्य सूना किए से ॥

(१३६)

अगणित अभिलाषा हाय
कैसी भरी थी ।
अब तक शुभ आशा
की लता भी हरी थी ॥
छन भर बिन देखे
नाथ कैसे जिऊंगी ।
तुम बिन जल भी
मै हाय कैसे पिऊंगी ॥

रौला (१३७)

सुन अबला के बैन
मौन मुख मण्डल सोहै ।
बोले तनिक विचार
जगत में अपना कोहै ॥
पूर्व उपार्जित कर्म कुफल
प्राणी पाते हैं ।
इसी हेतु संसृति मे
नित आते जाते हैं ॥

(१३८)

कृमि कुल से है व्याप्त
व्याधियों का जो घर है ।
यह मानव शरीर फिर
व्यर्थ गर्व इस पर है ॥
रुधिर मास अरु अस्थि
पिण्ड ही इसको मानो ।
इसकी आस्था त्याग
सत्य सुख को पहिचानो ॥

(१४१)

दुःख पूर्ण संसार सौख्य
का लेश नहीं है।
करना था सो किया
और कुछ शेष नहीं है॥
कभी शान्त अरु कभी
महा क्रोधी बन जाता।
प्राणी है नट के समान
नाटक दिखलाता॥

(१४२)

मोह नदी संसार मृत्यु—
धीवर है चञ्चल।
डगमगाती है नाव
सामने दीसत दलदल॥
झञ्झानिल झकझोर पाल
चहुं धा भई जर्जर।
भावत व्याल कराल
नहीं है कोई ¶ बरद॥

¶ बचाने वाला।

(१४३)

पड़े भयानक जाल
मनुज-प्राणी फंसते हैं।
जग के मूढ़ शिकार
मृत्यु धीवर हंसते हैं॥
निर्दय निठुर विनिन्द्य
चल ममता के पाके।
प्राणी करता [1] गुहार
यातना भीषण पाके॥

(१४४)

जन्म मरण का दुःख
अमित भीषण है भारी।
वनिता सुत स्वजन आदि
अगणित दुखकारी॥
ज्ञानी जन सद् ज्ञान
कभी इनमें नहिं पाते।
मुक्ति प्राप्ति का साधन
बिन चूके हैं करते॥

[1] रक्षा के लिए पुकार।

भुजङ्ग प्रयात (१४५)

सुनो बात मेरी निराशा तजो जी।
खुशी से प्रभू को यहीं पै भजो जी॥
गृहस्थाश्रमी धर्म से मोक्ष जाते।
यती धर्म को त्याग के दुःख पाते॥

(१४६)

बड़े प्रेम से बन्धु मित्रादि बोले।
न जाओ कहीं हो अभी आप भोले॥
यहीं पै रहो सीख मानो हमारी।
कहीं मुक्ति पाते कहो क्या भिखारी॥

(१४७)

नहीं साधुता की अवस्था अभी है।
यहां पै तुम्हारी व्यवस्था सभी है॥
हमें छोड के हो कहां आप जाते।
पिता बन्धु माता प्रिया को सताते॥

(१४८)

ममें मे न खाना वहां पै मिलेगा।
नहीं पुष्प मानो शिला पै खिलेगा॥
सुसम्पन्न होके बनोगे भिखारी।
न जाओ कहीं बात मानो हमारी॥

(१४९)

उसे दुःख देके न जाओ कहीं पे।
जहां जाओगे मैं चलूंगी वहीं पे॥
सुनो साधुता में न फूलो फलोगे।
नंगे पांव से आप कैसे चलोगे॥

(१५०)

अभी भी समय है मेरी बात मानो।
मुझे तो सदा सङ्गिनी आप जानो॥
तुम्हारे सिवा कौन चिन्ता हरेगा।
तुम्हीं देख ले जो हमारा करेगा॥

पति का पत्नि से

द्रुत विलम्बित छन्द (१५१)

अति भयङ्कर संस्मृति व्यूह है।
गरल तुल्य कषाय समूह है॥
दुखद पुत्र कलत्र वियोग है।
क्षणिक जीवन औ सुख भोग है॥

(१५२)

स्वजन स्वारथ के सब मित्र हैं।
जगत के भ्रम जाल विचित्र हैं॥
पड़ नहीं सकता अब मोह में।
मरण जीवन छोह विछोह में॥

(१५३)

छूट गई सब व्यापार की लत।
नमन मात पितादिक को नित॥
दृढ़ सदा अपने प्रण पै रहे।
यदपि भीषण संकट भी सहे॥

(१५४)

रहे निमग्न सदा प्रभु-ध्यान में।
अचल धाम प्रदायक ज्ञान में॥
मन रमा परमात्म जिनेश में।
यदपि थे वे भारत देश में॥

(१५५)

हृदय में जिन-धर्म प्रसार था।
पर पुरा अति भौतिक पाश था॥
पहिन साधु जनोचित वस्त्र को।
गह लिया शुचि धार्मिक अस्त्र को॥

(१५६)

भजन में रत थे भगवान के।
घन महान उपासक ज्ञान के॥
हृदय में जब भौतिक दाह थी।
जगत की न उन्हें परवाह थी॥

पति का पत्नि से

द्रुत विलम्बित छन्द (१५१)

अति भयङ्कर संसृति व्यूह है।
गरल तुल्य कषाय समूह है॥
दुखद पुत्र कलत्र वियोग है।
क्षणिक जीवन औ सुख भोग है॥

(१५२)

स्वजन स्वारथ के सब मित्र हैं।
जगत के भ्रम जाल विचित्र हैं॥
पड़ नहीं सकता अब मोह में।
मरण जीवन छोह बिछोह में॥

(१५३)

छूट गई पर व्यापार से रुच।
नमन मात पितादिक को किए॥
दृढ़ सदा अपने प्रण पै रहे।
यदपि भीषण आफत भी सहे॥

(१५४)

रह निमग्न सदा प्रभु-ध्यान में।
अचल धाम प्रकाशक ज्ञान में॥
मन रमा परमात्म जिनेश में।
यदपि थे वे भारत देश में॥

(१५५)

हृदय में जिन-धर्म प्रकाश था।
पद गुरु ऋषि मौलिक पास था॥
पठित साधु ज्योतिष शास्त्र को।
पढ़ लिया शुचि धार्मिक शास्त्र को॥

(१५६)

भजन में रत थे भगवान के।
धन महान दयामय ज्ञान के॥
हृदय में सब मौलिक चाह थी।
जगत की न इन्हें परवाह थी॥

(१५७)

समझ लो जग--जन्य असारता।
कब लगा इसमें किसका पता॥
कर चलो परलौकिक साधना।
यदपि है यह लोह मयी चना॥

(१५८)

पुरुष वे जग के अति धन्य हैं।
परम पूज्य तथा बहु मान्य हैं॥
अचल है जिनकी मति धर्म मे।
निरत हैं जन जो शुभ कर्म मे॥

(१५६)

सुन गुण स्तुति जो नहिं फूलते।
विभय पाकर धर्म न भूलते॥
तनिक भी जिनमें नहिं गर्व है।
धरम ही जिनका बस सर्व है॥

(१६०)

हृदय कोमल शून्य कषाय से।
रहत दूर सदा जग हाय से॥
विषय में न कभी अनुरक्त हैं।
भजन में निशिवासर सक्त हैं॥

(१६१)

तदनु पत्र लिखा निज तात को।
नगर ब्यावर से निज मात को॥
अब विलम्ब न हर्गिज कीजिए।
हुकुम आप मुझे झट दीजिए॥

(१६२)

सुवन की सुन साग्रह प्रार्थना।
हृदय में दुख व्याप्त हुआ घना॥
पर द्वितिय न अन्य विकल्प था।
समय बीत रहा जिमि कल्प था॥

(१६३)

निरख के सुत के हठवाद को।
कर लिया अब मन्द विषाद को॥
तुरत पत्र लिखा हिय थाम के।
दुखित मानव थे सब गाम के॥

(१६४)

अगर दिक्षित हो इस ग्राम में।
सकल उत्सव हो मम धाम में॥
समझ लो तब हुकम तुम्हें दिया।
गजब पुत्र अरे तुमने किया॥

(१६५)

चल दिए यह उत्तर पाय के।
सब मिले उनसे हरषाय के॥
पर वहां वह थानक में रहे।
मुनि जनोचित कष्ट सभी सहे॥

(१६६)

स्वजन ने यह हाल सुना जभी।
अति प्रसन्न हुए घर के सभी॥
जननि तो झट थानक में गई।
अति प्रसन्न विलोकि उन्हें भई॥

(१६७)

मत विलम्ब करो घर पै चलो।
सुत उपाश्रय में रह क्यों गलो॥
सब प्रकर वहां सुख भोगना।
वचन था वह प्रेम सुधा सना॥

पुत्र माता से

(१६८)

सकल लोभ सुनो अब व्यर्थ है।
न इनका कुछ भी अब अर्थ है॥
किस निमित्त उपाश्रय को तजूं।
रह यहीं जिन देव न क्यों भजूं॥

(१६६)

अमित कष्ट विधायक गेह है।
भजन के हित केवल देह है॥
फिर न क्यों जगदीश्वर को भजूं।
घृणित त्याज्य कषाय क्यों न तजूं॥

(१७०)

चल नहीं सकता अत्र मोह पै।
डिग नहीं सकता तत्र नेह पै॥
न कुछ भी करना अवशेष है।
प्रिय मुझे अबतो मुनि वेष है॥

(१७१)

अधिक आग्रह भी अत्र व्यर्थ है।
न कुछ भी इसका अब अर्थ है॥
जगत केवल मायिक जाल है।
सकल भोग फिजूल बवाल है॥

(१७२)

जननि तू अब त्याग मलाल को।
शुचि शुभाशिष दे निज लाल को॥
कर कृपा अनुमोदन दीजिए।
प्रिय पिता अब देर न कीजिए॥

(१७३)

कर सकूं यदि मैं कुछ साधना।
मनुज देह निमित्त इसी बना॥
सफल मान सकूं निज देह को॥
मुनि बनूं तजके जब नेह को॥

(१७४)

कह रहे अपने पितु मात से।
स्वजन से भगिनी अरु भ्रात से॥
अधिक और नहीं तरसाइए।
शुभ निदेश-सुधा बरसाइए॥

(१७५)

वचन थे जब वे नहि मानते।
मुनि बनू यह थे हठ ठानते॥
जनक ने अनुमोदन दे दिया।
हृदय वज्र समान बना लिया॥

(१७६)

तस किया भगिनी अरु भ्रात ने।
स्वजन ने जननी अरु तात ने॥
खुश हुए तब आयसु* पाय के।
खिल उठे मन मे हरषाय के॥

चितहस

(१७७)

कर दिया प्रस्थान नीमच के लिए।
प्रेम से आशीस स्वजनों ने दिए॥
थे वहा मुनिराज पूज्य विराजते।
नन्दलाल मुनीश धार्मिक काजते॥

* आज्ञा

(१७८)

वन्दना विधिवत उन्हें करने लगे।
आत्म हित की भावना भरने लगे॥
सब प्रकार सुयोग्य उनको जानके।
ज्ञान लेने लग गये गुरु मान के॥

(१७९)

अर्ज की गुरुदेव दीक्षित कीजिए।
दास को अपनी शरण मे लीजिए॥
आज लौं मैं भटकता फिरता रहा।
जगत रूप पयोधि में तिरता रहा॥

(१८०)

मिल गया मुझको सहारा आप का।
आ चुका था अन्त मेरे पाप का॥
अब कृपा गुरुदेव जलदी कीजिए।
शीघ्र ही दीक्षित मुझे कर लीजिए॥

तृतीय प्रकरण

शिखरिणी

दीक्षा महोत्सव (१८१)

तयारी दीक्षा की सकल
कर लीन्हीं नगर ने ।
सवारी घोड़े की शुभ
शकुन वारी सज गई ॥
सयाने लोगों से नगर
वह सारा भर गया ।
गुणो की पूजा से अवगुण
किनारा कर गया ।

दीक्षार्थी का नागरिकों से

(१८२)

मुझे वैरागी को तुरग
असवारी न चाहिए ।
व्रती हूँ दीक्षा का
वसन मनहारी न चाहिए ॥
अमृत के प्रेमी को गरल
दुखकारी न चाहिए ।
सुखो के त्यागी को
अशन सुखकारी न चाहिए ॥

मालिनी

(१८३)

उस समय सभी ने
त्याग महात्म्य देखा ।
निज निज नयनों से
आज वैराग्य पेखा ॥
सुमधुरतम गाने कान
मे आ रहे थे ।
प्रमुदित नर नारी
भक्ति से गा रहे थे ॥

(१८४)

उस विपुल सभा के
बीच बैठे विरागी ।
मुनि जन अरु श्रावक
श्राविका और त्यागी ॥
युत गुण गरिमा से
मञ्जु भाषी सुहासी ।
मुनि पद——अभिलाषी
मूर्ति भी सोहती थी ॥

(१८५)

विधिवत गुरु जी ने
रस्म सारी निभाई ।
लहर तब सभा में
हर्ष की वेग छाई ॥
निज जन मन मारे
किन्तु सारे खड़े थे ।
उन पर दुख छाया
मोह मे जो पड़े थे ॥

(१८६)

पर अमित खुशी से
वे न फूले समाते ।
यदि वन जग नाता
त्याग के थे सुहाते ॥
मुख · पट अरु ओघा
पात्र लेके खड़े थे ।
द्रुत दुरित घनों को
काटने को अड़े थे ॥

(१८७)

सविनय गुरु सेवा में
सदा वे लगे थे ।
जिनवर गुण — गाथा
गान मे ही पगे थे ॥
प्रति पल अति फीके
हो रहे भोग सारे ।
निशि दिन जगते थे
जोग के ही सितारे ॥

(१८८)

अब समझ गये थे
कर्म की क्रूरता को ।
जप तप व्रत सेवा से
उन्हें थे खपाते
बन कर खुद ज्ञानी
हो गए ध्यान ध्यानी ।
शुभ मन सुखदानी
आप की शुद्ध बानी ॥

मन्दाक्रान्ता छन्द (१८९)

आषाढ़ी थी सुभग तिथि भी
शुक्ल पक्षी तृतीया ।
ज्ञानोत्कर्षी दिवस शुभ था
चन्द्र का ही सुहाता ॥
दीक्षा ले के प्रखर प्रति-
भावान वे हो गए थे ।
ज्ञानावर्णी दुरित सहसा
आप के खो गए थे ॥

(१९०)

शोभा पाता वसन मुख पै
चोल पट्टा सुहाता ।
ओघा पात्रा निरख सब का
चित्त था मोद पाता ॥
उत्कण्ठा थी अमित मन मे
भागती थी निराशा ।
नाना बातें कथन करते
नान की आवको से ॥

दोहा (१६१)

दशवै कालिक आदि थे शास्त्र किये कण्ठाग्र।
गुरु सेवा में रात दिन रहते थे अति व्यग्र ॥

हरिगीतिका (१६२)

ऐसे सुशोभि हो रहे थे
केश लुञ्चित माथ से।
मानो गया हो सूर्य मिलने को
कुमुदिनी नाथ से ॥
गुरुदेव के ही साथ चौमासा
उदय पुर में किया।
सौभाग्य शाली श्रावको ने
खूब वचनामृत पिया ॥

(१६३)

मुनिराज देवी लाल जी के
साथ चौ मासा किया।
दूजा प्रसिद्ध सुमालवा मे
खाचरोद दिपा दिया ॥
उन्नीस सौ तिरपन
सुसम्वत मे बड़े उत्साह से।
थे नागरिक व्याख्यान मे
आते बड़े ही चाह से ॥

(१६४)

तीजा किया चौमासा कर
अपने गुरु के संग में ।
मेवाड़ में थे सादड़ी के
लोग पूर्ण उमङ्ग में ॥
गुरुदेव के ही चरण में
चौथा चतुर्मासा किया ।
नीमच शहर को भी सुशोभित
धर्म से खासा किया ॥

(१६५)

¶ पञ्चम किया था संग में
माणिक्य चन्द्र मुनीश के ।
सच्चे उपासक बन गए
भगवान वीर जिनेश के ॥
अति मान पूर्वक आप का
व्याख्यान नित होता रहा ।
था ज्ञान गंगा में लगाता
भक्त जन गोता रहा ॥

¶ मन्दसोर ।

(१९६)

उपदेश देते मार्ग में
मुनिराज पहुँचे जावरा ।
जिसने सुना प्रवचन अगम-
भवसिन्धु को वह नर तरा ॥
अब मच रही थी धूम
चारों ओर थी मुनिराज की ।
ख्याति फैली थी चौतरफ
उस वक्त जैन समाज की ॥

(१९७)

श्रीमान गौतम लाल जी
श्रावक बड़े पुण्यातमा ।
थे ग्राम जी रण में परम थी
उच्च जिनकी आतमा ॥
गृहिणी अमृत देवी सकल
गुण शील की भण्डार थी ।
करती स्वपति सेवा तथा
घर का संभाले भार थी ॥

(१६८)

सुखलाल नामक पुत्र उस
आदर्श दम्पति से हुआ।
जो था परस्पर प्रेम वह
शिशु रूप में विकसित हुआ॥
दुर्भाग्य से माता पिता
उस को अकेला छोड़ के।
परलोक पहुँचे विश्व से
सम्बन्ध सहसा तोड़ के॥

(१६६)

श्रीमान पन्ना लाल जी थे
भ्रात सूवा लाल के।
था कासवां शुभ गोत्र
संरक्षक बने सुखलाल के॥
निज पुत्र सम पालन किया
निस्वार्थ-सेवा मान के।
हैं धन्य पर उपकार करते
जो मनुज हठ ठान के॥

(२००)

संयोग से उस ग्राम में
मुनिराज का आना हुआ ।
उस बाल को सौभाग्य से
दर्शन सुलभ पाना हुआ ॥
व्याख्यान गायन भजन आदिक
के अलौकिक ठाठ थे ।
वैराग्य के आरम्भ हो सकते
यहीं शुभ पाठ थे ॥

(२०१)

कविराज हीरा लाल जी
कविता अलौकिक बोलते ।
श्री खूबचन्द्र विरागियों की
नबज खूब टटोलते ॥
आदर्श मुनियों का उपदेश
जब सुना सुखलाल ने ।
वैराग्य से रञ्जित किया
निज चित्त को उस बाल ने ॥

(१९८)

सुखलाल नामक पुत्र इस
आदर्श दम्पति मे हुआ ।
जो था परस्पर प्रेम वह
शिशु रूप मे विकसित हुआ ॥
दुर्भाग्य से माता पिता
उस को अकेला छोड के।
परलोक पहुँचे विश्व से
सम्बन्ध सहसा तोड़ के ॥

(१९९)

श्रीमान पन्ना लाल जी थे
भ्रात सूवा लाल के ।
था कासवां शुभ गोत्र
संरक्षक बने सुखलाल के ॥
निज पुत्र सम पालन किया
निस्वार्थ-सेवा मान के ।
हैं धन्य पर उपकार करते
जो मनुज हठ ठान के ॥

(२००)

संयोग से उस ग्राम में
मुनिराज का आना हुआ।
उस बाल को सौभाग्य से
दर्शन सुलभ पाना हुआ॥
व्याख्यान गायन भजन आदिक
के अलौकिक ठाठ थे।
वैराग्य के आरम्भ हो सकते
यहीं शुभ पाठ थे॥

(२०१)

कविराज हीरा लाल जी
कविता अलौकिक बोलते।
श्री खूबचन्द्र विरागियों की
नवज खूब टटोलते॥
आदर्श मुनियों का उपदेश
जब सुना सुखलाल ने।
वैराग्य से रञ्जित किया
निज चित्त को उस बाल ने॥

(२०२)

इस कार्य में उनकी भुआ ने
विघ्न बहुतेरा किया ।
उनके हृदय में किन्तु दृढ़
वैराग्य ने डेरा किया ॥
श्री युत भवानी राम जी
अत्यन्त समझाने लगे ।
मुनि वृत्ति के सद्गुण
मगर सुखलाल जी गाने लगे ॥

(२०३)

जो हैं अटल प्रण पे उन्हें
कोई डिगा सकता नहीं ।
आसक्त जो जग मे उन्हें
वैराग्य आ सकता नहीं ॥
दीक्षित किया उस बाल को
सानन्द श्री मुनिराज ने ।
उत्साह से उत्सव किया
दीक्षार्थ जैन समाज ने ॥

(२०४)

थोड़े समय में ही अकल्पित
बुद्धि बलशाली बने ।
वैराग्य रूपी वाटिका के
आप वनमाली बने ॥
आप ने अब शास्त्रीय
ज्ञान सम्पादन किया ।
हिन्दी तथा उर्दू सदृश
भाषादि का अर्जन किया ॥

(२०५)

गुरु भक्ति द्वारा वह चली
कविता—सुधा की धार थी ।
जिसके समक्ष मनोज्ञ
बातें दूसरी बेकार थीं ॥
जिसने सुना वह हो गया
आनन्द से बेभान था ।
कविता नहीं थी वह अलौकिक
प्रेम रस का पान था ॥

(२१०)

छन्नीस सौ अरु साठ का
चौमास मांडल गढ़ किया।
सुन्दर सरस उपदेश से
अज्ञान का तम हर लिया॥
थे तीस घर केवल तथापि
अनेक पंचरङ्गी हुई।
अन्याय तज सम्पूर्ण
जनता न्याय की सङ्गी हुई॥

(२११)

उपदेश हृदयङ्गम किया
मुनिराज के उपकार से।
बन शुद्ध श्रावक बचे गण
दुष्कर्म की इस मार से॥
चित्तौड़ गढ़ को अब यहां से
कर दिया प्रस्थान था।
ग्रामीण जनता का उन्हें
सम्मान था अरु ध्यान था॥

(२१२)

उन्नीस सौ इकसाठ में
चित्तौड़ चातुर्मास था ।
सारे नगर में धर्म का ही
अद्वितीय प्रकाश था ॥
त्यागा कई ने मांस भक्षण
रात्रि भोजन पाप को ।
करके पृथक सब दुर्गुणों से
शीघ्र अपने आप को ॥

(२१३)

थे ब्रह्मचर्य व्रती कई
यौवन अवस्था में बने ।
सब भांति पुण्योदय हुआ
प्रस्थान कीन्हा पाप ने ॥
बालक युवक अरु वृद्ध
धर्माराधना में लीन थे ।
जिनके समस्त कषाय सारे
बन गए अति क्षीण थे ॥

(२१४)

उन्नीस सौ बासठ मे वहा से
आप पहुँचे जावरा ।
थानक खचाखच श्रावको से
नित्य रहता था भरा ॥
तपसी हजारी लाल जी ने
उपवास व्रत धारण किया ।
इक्यानवे दिन का स्वकल्मप-
पुञ्ज को वारण किया ॥

(२१५)

प्रति दिन हजारो लोग
दर्शन के लिए आते रहे
ससार की निस्सारता
मुनिराज समझाते रहे ॥
उस रोज दो सौ स्कन्ध भी
निर्विघ्न थे पूरे हुए ।
उपदेश-सरिता मे प्रवाहित
पाप के *घूरे हुए ॥

(२१६)

चपरोद गोत्रोत्पन्न
श्री कस्तूर चन्द सुवाल को।
वैराग्य हो आया श्रवण कर
धर्म वचन रसाल को॥
श्री खूब चन्द्र मुनीश से
वे प्रार्थना करने लगे।
यति धर्म की शुभ भावना
निज चित्त में भरने लगे॥

(२१७)

हैं तारते जब मानवों को
आप इस ससार से।
गुरुदेव मुझ को तारिए
विष वासना की मार से॥
दीक्षित मुझे कर लीजिए
निज तुच्छ सेवक मान के।
करिए कृपा की कोर बालक
को अकिञ्चन जान के॥

(२१८)

बोले चरित्त नायक अगर
मुनि वृत्ति तुम को इष्ट है।
तो सोच लेना खूब यह
निर्ग्रन्थता अति क्लिष्ट है॥
गुरुदेव ही के पास दीक्षा
† रामपुरा मे लीजिए।
इस भांति मानव जन्म यह
अपना सफल कर दीजिए॥

(२१९)

आए वहा से रामपुरा
कस्तूर जी तत्काल थे।
दीक्षित बनू किस काल बस
इस ख्याल मे बेहाल थे॥
आकर कहा सविनय गुरो!
दीक्षा मुझे दे दीजिए।
इस तुच्छ बालक को प्रभो!
अपनी शरण मे लीजिए॥

† रामपुरा। (इन्दौर)

(२२०)

श्री संघ की शुभ सम्मति
लेकर उन्हें दीक्षित किया।
विष त्याग कर उस बाल ने
परि शुद्ध धर्मामृत पिया॥
नेश्रित किया गुरुदेव ने
श्री खूबचन्द्र मुनीश के।
शोभित हुआ जिमि सोहता
शशि साथ में *गशि शीश के॥

(२२१)

चित्तौड़ चातुर्मास फिर
उन्नीस तिरसठ में किया।
इस वर्ष भी निर्ग्रन्थ ने
प्रवचन अलौकिक था दिया॥
श्री केशरी मल जी निवासी
जावरा के एक थे।
निज धर्म और समाज की
रखते सदा जो टेक थे॥

* शङ्कर।

(२२२)

दीक्षार्थ पहुँचे सादड़ी
मेवाड़ मे जो है वड़ी।
संसार तजने की अहो
कैसी अलौकिक है वड़ी॥
श्री नन्दलाल मुनीश ने
श्री संघ के आदेश से।
दीक्षित किया उनको सुशोभित
कर दिया मुनि वेश मे।

(२२३)

नेश्राय मे इनको हमारे
चरित नायक के दिया।
उन्नीस सो चौसठ मे
निम्बहेड़ा चतुर्मासा किया॥
श्री हर्षचन्द्र तथैव धार्मिक
बन्धु राम प्रसाद को।
दीक्षित किया सानन्द
तजवा दुःख और प्रमाद को॥

(२२४)

उन्नीस सौ पैंसठ छोटी
सादड़ी पावन किया।
उपदेश देकर के अलौकिक
भक्त मन रञ्जन किया॥
श्री राम लाल कटारिया
था ग्राम जिनका जावरा।
निज सुत हजारी मल्ल को
मुनि चरण मे लाकर धरा॥

(२२५)

सित पक्ष कार्तिक पूर्णिमा को
व्रत ग्रहण करवा दिया।
कल्याण की शुभ भावना को
हिय मे अमिट भरवा दिया॥
शिष्यों सहित शोभित हुए
मुनि खूबचन्द्र महामना।
ज्यो सोहता है चन्द्र तारो
मध्य ताराधिप बना॥

(२२६)

उन्नीस छासठ मन्दसौर
प्रसिद्ध चातुर्मास था।
इस मालवा के आस पास
प्रभाव इनका खास था॥
नर नारियों का झुंड दर्शन
के लिए आने लगा।
कर पान वचनामृत
अनिर्वचनीय सुख पाने लगा॥

(२२७)

था व्याप्त यश सौरभ
चतुर्दिक धर्म का शुभ ठाट था।
जाते जहां पर टूट पड़ता
जन समूह विराट था॥
विख्यात युक्त प्रान्त मे
सुन्दर नगर है आगरा।
देशी विदेशी दर्शको से
जो सदा रहता भरा॥

(२२८)

उन्नीस सरसठ में यहां
चौमास था श्रीमान का।
क्या ही सुभग सयोग था
सम्पत्ति का अरु ज्ञान का॥
उपवास आयम्बिल तथा
एकाशना की धूम थी।
चारो तरफ आगार औ
पचखाँढ की ही झूम थी॥

(२२९)

उपदेश का था रङ्ग श्रावक
श्राविकों पर चढ़ रहा।
अनुराग जनता का अनवरत
धर्म के प्रति बढ़ रहा॥
परहित-व्रती यशवन्त राय
सुसेठ एक उदार थे।
सौजन्य के जो सिन्धु थे
सद्बुद्धि पारा वार थे॥

(२३०)

उनका हृदय विकसित हुआ
जिन धर्म की सुन के कथा।
रवि किरण से तत्काल होता है
कमल विकसित यथा॥
अभिमान लक्ष्मी मद तथा
पापाचरण से दूर थे।
मुनि भक्ति दान दयालुता
से आप श्री भरपूर थे॥

(२३१)

सद् धर्म से होकर प्रभावित
प्रेम रस भरवा दिए।
विख्यात चारों कत्ल खाने
बन्द झट करवा दिए॥
इससे हजारों मूक

हरिपद

सार (२३२)

गये वहा से दिल्ली हैं
जो भारत की रजधानी है ।
मथुरा कोसी पलवल को
पावन करते मुनि ज्ञानी ।।
सन्त वहाँ थे पंजाबी
श्री लालचन्द्र जी ध्यानी ।
हुआ परस्पर प्रेम बड़े
सज्जन मुनि थे विज्ञानी ।

(२२३)

चमनौली सरसली तथैव
बड़ौत तथा हिलवाड़ी ।
चड़सत औ करनाल
कान्धला मञ्जुल तीतरवाड़ी ॥
अम्बाला कुरुक्षेत्र तथा
पटियाला विस्तत नाभा ।
लुधियाना जालन्धर औ
जंडियाला मण्डित आभा ॥

(२२४)

इन क्षेत्रों में शाश्वत उन्नत
जैन ध्वजा फहराते ।
शुष्क हृदय को प्रेम तथा
वचनामृत से सरसाते ॥
अमृतसर उन्नीस तथा
अड़सठ सम्वत में आए ।
जिन धार्मिक सिद्धान्त
मुनीश्वर ने चहुंधा हैं फैलाए ॥

(२३५)

श्री मज्जैनाचार्य मुनि
श्री सोहनलाल जी प्रतापी ।
शिष्य मण्डली सहित विराजे
जिनसे डरते थे पापी ॥
मिलकर खूबचन्द्र जी से
वे फूले नहीं समाये ।
एक दूसरे से मुनिवर ने
प्रेम दृश्य हैं दिखलाये ॥

(२३६)

गुजरांवाला मे मुनीश
थे मुन्नालाल विराजे ।
महाराज अत्युग तपस्वी
बालचन्द्र जी साजे ॥
उनकी सेवा मे सेवाभावी
मुनिराज थे पधारे ।
हुआ पुण्य का उदय
पाप दल नष्ट हो गये सारे ॥

(२३७)

कर निवास कुछ रोज़
वहां से रावलपिंडी आये।
झेलम रोहतास कल्लर
सैयदा पुनीत बनाये॥
रावलपिंडी चातुर्मास करने को
आप हैं पधारे।
उन्नीस सो अरसठ मे
पापो के फटे मेव थे कारे॥

(२३८)

धन्य धन्य मुनिराज धन्य
वह सुन्दर रावलपिडी।
धन्य भूमि पंजाब धन्य
पथ के पाहन पगडंडी॥
धन्य अहिंसा धर्म धन्य
वह शुचिमुनि वचन सुहावन।
धन्य युवक अरु वृद्ध धन्य
पञ्जाब मेदिनी पावन॥

(२३६)

जैन धर्म सिरताज वहा पर
थे मुनिराज विराजे।
श्री शिवलाल स्थविर पद भूषित
देख इन्द्र भी लाजे॥
धनीराम महाराज आप
की सेवा हरदम करते।
सुन अनुपम उपदेश भक्ति
रस अपने हिय मे भरते॥

(२४०)

कर विहार मुनिराज वहा से
स्यालकोट मे आके।
स्वर्गोपम काश्मीर देश
जम्मू मे पहुंचे जाके॥
जैन धर्म सिरताज मुनि
श्री मुन्नालाल तपस्वी।
शोभित थे उस ठौर सदा
स्वाध्याय सक्त तेजस्वी॥

(२४१)

एक मास उनकी सेवा
श्री खूबचन्द्र ने कीन्हीं ।
जीवन की ये अनुपम घड़ियाँ
पूर्ण सफल कर लीन्ही ॥
पावन करते ग्राम मार्ग के
मुनि लाहौर पधारे ।
पुरवासी उन भक्त जनों
ने सद्उपदेश उर धारे ॥

(२४२)

प्रश्नोत्तर में कुशल जिनेश्वर
के गुण गाने वाले ।
ज्ञान तथा चारित्र भव्य जन
को समझाने वाले ॥
है अद्भुत व्यक्तित्व आपका
जिसने दर्शन पाया ।
अपना अन्त रतम उसने
अत्यन्त पवित्र बनाया ॥

(२४३)

तदनन्तर लाहौर नगर मे
मुनि रोहतक पधारे।
फरीदकोट अरु जींद भटिंडा
पावन करने वारे॥
मुनिवर मायाराम वहा थे
शिष्यो सहित विराजे।
शोभित थे व्याख्यान मञ्च पे
इन्द्र सभा जिमि साजे॥

(२४४)

मिले प्रेम पूर्वक मुनिवर ने
उनका मान बढ़ाया।
इस आदर्श मिलन ने
जनता को शुभ पाठ पढ़ाया॥
वहाँ और कुछ रोज ठहरने
की विनती स्वीकारी।
जाने लगे वहां से फिर
आगे मुनिवर उपकारी॥

(२८५)

दिल्ली चातुर्मास हेतु
श्री संघ यहां पर आया।
मुनिवर मायाराम जी ने
उनसे ऐसा फरमाया॥
मुनि खूबचन्द जी की भावुक
जन रञ्जन है वानी।
मैंने ऐसे कम देखे हैं
मुनि शास्त्रों के ज्ञानी॥

(२८६)

चातुर्मास इनका दिल्ली मे
हो इस वर्ष कराओ।
सेवा औ उपदेश श्रवण से
जीवन सफल बनाओ॥
आग्रह टाल नहीं सकते थे
विनय उन्होंने माना।
दिल्ली के लोगो ने जब
श्रद्धा समेत हठ ठाना॥

(२४७)

उन्नीस उनहत्तर चौमासा
किया वहीं मुनिवर ने ।
उपदेशामृत वदन—चन्द्र से
लगा अनवरत झरने ॥
जनता आने लगी श्रद्धा से
मुनिवर के दर्शन करने ।
कर्म पुञ्ज अध्यात्म अनल में
लगे निरन्तर जलने ॥

(२४८)

यों स्थानक वासी समाज का
मुनि ने मान बढ़ाया ।
जैनों को धार्मिकता में
उन्नती के शिखर चढ़ाया ॥
कौन नहीं पढ़ता गौरव से
जैन धर्म की गाथा ।
किसका नहीं गर्व से
ऊँचा हो जाता है माथा ॥

(२४६)

किसके नहीं हृदय पर अङ्कित
मुनिवर की सम्मृतिया।
स्वाभिमान से ओत प्रोत
है खूबचन्द्र की कृतिया॥
जब लौं सूर्य चन्द्र हैं नभ मे
सागर मे है पानी।
नही भुलाई जा सकती है
उनकी अमर कहानी॥

(२५०)

भारत वसुन्धरा पर
जिसने धर्म ध्वज फहराया।
जिसकी अमल कीर्ति श्रावक
मुनियों ने मिलकर गाया॥
काम क्रोध से रहित हृदय में
गर्व न जिसके है आया।
खूब चन्द्र मुनिश्वर ने
जैन जगत को खूब दिखाया॥

(२५१)

पूर्ण हुआ था धूम धाम से
दिल्ली का भी चौमासा।
भारत की रजधानी में भी
खासा ठाट रहा था॥
कर विहार तब आप
वहां से अलवर नगर पधारे।
पावन करते हुए मार्ग के
ग्राम नगर भी सारे॥

(२५२)

उमड़ पड़ा मानव सागर
मुनिवर का दर्शन करने।
बाल वृद्ध आये शुभ धार्मिक-
भाव हृदय में हैं भरने॥
दे करके उपदेश वहां से
आगे आप पधारे।
दूर तलक पहुंचाने को
आये थे अलवर वाले॥

श्री मज्जैनाचार्य विनय
मुनि का शुभ दर्शन कीन्हा।
जैन धर्म-दीपक को मुनि ने
दिव्य दृष्टि से है चीन्हा॥
थे प्रसन्न उनसे मिलकर
आपस में प्रेम बढ़ाया है।
जनता को दोनों मुनियो ने
स्वधर्म खूब समझाया है॥'

(२५७)

तृप्त किया जैनी जैनेतर
जनता को मुनिवर ने।
चले वहां से भी भिनाय
धर्म सुधारस भरने ॥
उमड़ पड़ी जनता मुनिवर
का उपदेशामृत पीने।
लोचन लाभ लिया दर्शन से
बालक वृद्ध सभी ने ॥

(२५८)

कल्प वृक्ष धर्म उसे
उपदेश नीर से सींचा।
ढोंगी पाखण्डों का मस्तक
किया उन्होंने नीचा ॥
ऐसे ही श्रमण वीर धर्म की
ज्योति उद्दस्त जगाते।
जनता के कल्याण हेतु ही
वे भूतल पर आते ॥

(२५६)

रूपाहेली बांदन वाड़ा से
गये विचरते विचरते ।
माडल तथा लांबिया
भिलवाड़ा को पावन करते ॥
सुना विज्ञ श्रीमान
जवाहरलाल धर्म अभिमानी ।
स्थविर पदान्वित नन्दलाल
गुरुदेव शास्त्र विज्ञानी ॥

(२६०)

निम्बाहेड़ा में हैं शोभित
शुभ अवसर यह पाके ।
पहुँचे दर्शन हेतु शिष्य
मण्डल के संग में जाके ॥
दृश्य अलौकिक था जब गुरु को
सविधि वन्दना है कीन्हीं ।
निम्बा हेड़ा की जनता को
अद्भुत शिक्षा है दीन्हीं ॥

(२६१)

जननी जन्म भूमि है जग के
जीवों को अति प्यारी।
किन्तु त्याग कर इसे
साधुजन होते नहीं दुखारी ॥
जनता के आग्रह से
फिर भी चौमासा स्वीकारा है।
उन्नीस सौ सत्तर में
अपनी जन्म भूमि को तारा है ॥

(२६२)

विज्ञ जवाहिर लाल
गुरु श्री नन्दलालजी व्याख्यानी।
कविवर हीरा लाल तपस्वी थे
अनुपम गुण के खानी ॥
कर विहार शिष्यों समेत वे
मन्दसोर सब आए है।
मालवीय जनता को भी
वचनामृत पान कराए है ॥

हरि गीतिका

(२६३)

श्री मज्जवाहिर लाल वक्ष
मुनीन्द्रवर ठहरे वहीं ।
वृद्धत्व के कारण न आगे
जा सके पैदल कहीं ॥
मुनि नन्दलाल समेत शिष्यों
जावरा शहर पधारे हैं ।
जिसने वन्दन सविधि किया
उस नर को भवसिंधु से तारा है ॥

(२६४)

श्री खूबचन्द्र मुनीश ने
कोटा चतुर्मासा किया ।
उपदेश सुन्दर दे चतुर्विध
संघ का मन हर लिया ॥
उन्नीस सौ इकहत्तर अतीव
पवित्र शोभन वर्ष था ।
प्रस्फुरित कोटा में हुआ
जिन धर्म का आदर्श था ॥

(२६५)

उपदेश कामादिक कपायो के
निवारण हित दिया ।
जिस ने सुना प्रवचन वही
मानव सफल जीवन किया ॥
है नष्ट करता क्रोध दानव ही
अगम गम्भीरता ।
क्षण भर न टिक पाती हृदय मे भी
अलौकिक धीरता ॥

(२६६)

है भ्रष्ट होती बुद्धि यह
करता शिथिल नर देह को ।
अनगार हो अथवा गृही
तजता समूचे स्नेह को ॥
इस में न वाच्य अवाच्य का
रहता तनिक भी ध्यान है ।
है धर्म होता ध्वस्त अरु
प्रध्वस्त होता खान है ॥

(२६७)

रहती सदा ही क्रोधियों की
भृकुटि बांकी देखिए ।
आकृति भयंकर फड़फड़ाती
नासिका भी देखिए ॥
हैं दांत उनके कट-कटाते
थरथराता गात है ।
क्रोधी मनुज देवेन्द्र की भी
सुन न सकता बात है ।

(२६८)

है क्रोध के सम शत्रु
इस संसार में दूजा नहीं ।
क्रोधी मनुज की लेश भी
कभी पूजा होती नहीं ॥
यह क्रोध सच्चे रूप को
करता विकृत तत्काल है ।
रहता न बिल्कुल भान
क्रोधी का अनोखा हाल है ॥

([illegible])

है भ्रष्ट होती बुद्धि पर
करता शिथिल नर देह को।
अनगार हो अथवा गृही
तजता समूचे स्नेह को ॥
इस में न वाच्य अवाच्य का
रहता तनिक भी ध्यान है।
है धर्म होता ध्वस्त अरु
प्रध्वस्त होता मान है ॥

(२६७)

रहती सदा ही क्रोधियों की
भृकुटि बांकी देखिए ।
आकृति भयंकर फड़फड़ाती
नासिका भी देखिए ॥
हैं दांत उनके कट-कटाते
थरथराता गात है ।
क्रोधी मनुज देवेन्द्र की भी
सुन न सकता बात है ।

(२६८)

है क्रोध के सम शत्रु
इस संसार में दूजा नहीं ।
क्रोधी मनुज की लेश भी
कभी पूजा होती नहीं ॥
यह क्रोध सच्चे रूप को
करता विकृत तत्काल है ।
रहता न बिल्कुल भान
क्रोधी का अनोखा हाल है ॥

वे चापलूसी में लगे रहते
कभी दिन रात है ।
वे लोभ के कारण कभी
सहते गधों की लात है ॥
वे मूर्ख और अनार्य को
कहते महा विद्वान हैं ।
वे पेट दिखलाते फिरें
मानो अधम अति श्वान है ॥

(२७१)

लोभी मनुज खुद पेट भर
भोजन कभी करते नहीं।
आश्रित जनों का भी उदर
वे लोभ वश भरते नहीं॥
करते अनेकों पाप हैं
वे लोभ के आधीन है।
फिरते जगत में चौतरफ वे
दीन गौरव हीन है॥

(२७२)

ज्ञानी पुरुष इस लोभ के
वश में कभी होते नहीं।
अभिमान अपना स्वाभिमानी
जन कभी होते नहीं॥
यह लोभ है भीषन गरल
बुधजन इसे पीते नहीं।
पीकर इसे फिर मानवी
जीवन कभी जीते नहीं॥

श्री वीर-जिन भाषित परम
पद मोक्ष मे जाते वही ।
ससार सागर धर्म नौका
से उतर पाते नही ॥
गुरु-बोध रूपी अस्त्र शस्त्रो
से सुसज्जित वीर जो ।
पाते विजय ससृति
रणस्थल मे अगम गम्भीर जो ॥

मद्यनिषेध

(२७५)

जो मद्य पीते है दशा
उनकी लखो जिमि श्वान की।
गिरते सड़क की नालियो मे
बात है अज्ञान की॥
वे मूत्र से निज देह के
निर्मल वसन धो डालते।
चलते हुए वे मार्ग में
नित नव्य आफत पालते॥

(२७८)

धूम्रपान, मदिरा पान को
विषपान से सम मानते ।
दुर्गति भयङ्कर देख कर
वे त्याज्य इसको जानते ॥
[illegible] न मानी और पराई
मा बहिन पहिचानते ।
निज वासना की तृप्ति में
उपभोग्य सब को मानते ॥

(२७७)

रोगी बने रहते सदा
उनको नहीं विश्रान्ति है ।
प्रक्षीण हो जाती प्रतिक्षण
देह मुख की कान्ति है ॥
अपने पराए का तनिक
उनको न रहता भान है ।
पीते इसे जिनको नहीं
मनुजत्व का अभिमान है ॥

रचन्द सुराना मूंगेवालों के पिता
० नानकचन्दजी मूंगेवाले, देहली।
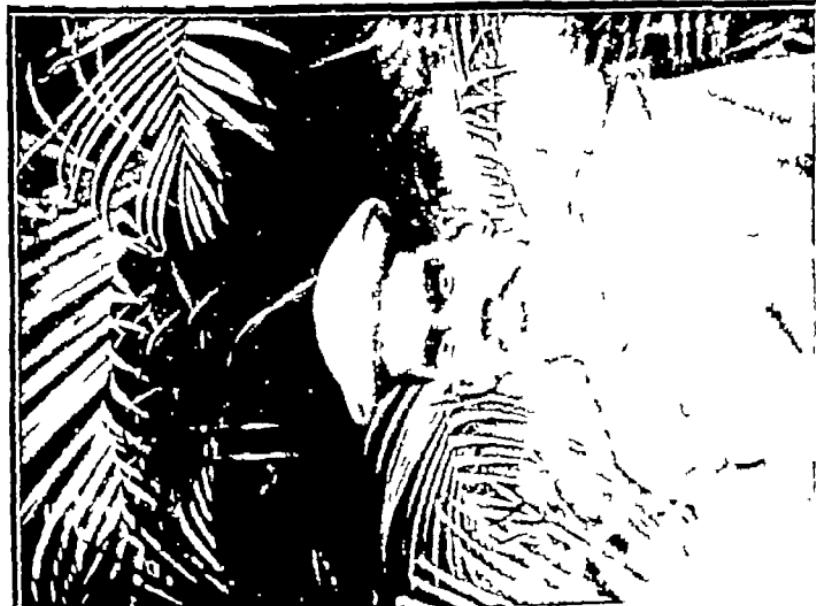
ला० नौरतचन्दजी चौरड़ियों के पिता
स्व० ला० फूलचन्दजी चौरड़िये
मालिक फर्म ला० नेमचन्द फूलचन्द पगड़ीवाले

मांस निषेध

(२७८)

अत्यन्त गर्हित है जगत में
मास भक्षण की प्रथा ।
कर मांस भक्षी भोगते हैं
नरक की दुस्सह व्यथा ॥
ऐसा समझ कर मास का
भक्षण न करना चाहिए ।
अन्तिम समय नहिं पापियों
की मौत मरना चाहिए ॥

(२७६)

भाजन भयानक दुख के
हैं मांस भक्षी नर बने ।
उनके हृदय निर्लज्जता अरु
क्रूरता के घर बने ॥
उनके न मानस में दया
के भाव जग पाते कभी ।
क्रोधादि घोर कषाय भी
उनके न भग पाते कभी ॥

(२८०)

जिस वक्त खाते मांस प्राणि
उस वक्त लेते स्वाद हैं ।
वे मूर्ख निज जीवन उसी में
कर रहे बरबाद हैं ॥
पर कर्म की गति को
न वे अनजान हैं पहिचानते ।
खाओ पिओ मौजें करो
आनन्द उसमें मानते ॥

(२८१)

वे आज जिसका मांस खाते
हैं बड़े ही चाव में ।
कल खायंगे उनको वही
दुर्वृत्ति अरु दुर्भाव से ॥
मत मांस भक्षण आज से
करना कभी तुम भाइयो ।
श्री कृष्ण अरु श्री राम अरु
श्री वीर के अनुयाइयो ॥

(२८२)

मुनिराज ने इस भांति
मदिरा मास तजवाया वहाँ।
श्रद्धा सहित 'प्रभु वीर को
दिन रात भजवाया वहाँ॥
ऐसे परम ज्ञानी जगत का
कर रहे उपकार हैं।
इस लोक मे युग के 'यही'
उत्तम पुरुष अवतार हैं॥

(२८२)

मुनिराज ने इस भांति
मदिरा मास तजवाया वहाँ।
श्रद्धा सहित 'प्रभु वीर को
दिन रात भजवाया वहाँ ॥
ऐसे परम ज्ञानी जगत का
कर रहे उपकार हैं।
इस लोक मे युग के 'यही'
उत्तम पुरुष अवतार हैं ॥

(२८४)

दूसरों के हाथ निज सम्पदा को सौंप कर,
ज्वारी दर दर के भिखारी बन जाते हैं।
पेट में न अन्न फटे वस्त्र धार देह पर,
सिर पर हाथ धर कर पछताते हैं ॥
स्वाभिमान छोड़ जाति गरिमा से मुंह मोड़,
स्वामी हैं जो आज, कल दास वे कहाते हैं।
अपने पराए का न रहता विवेक नेक,
फिर भी जुआरी जुआ से न बाज आते हैं ॥

(२८५)

बड़े बड़े वीर रणधीर बनते फकीर,
ज्वारी पांडवों की कथा किसको न ज्ञात है।
राज्य धन नारि परवार को भी हार कर,
फिरे बन बन कितनी विचित्र बात है ॥
द्रुपद सुता का चीर हरण प्रमाण पुष्ट,
नारी अप[illegible] जुआरी न लजात है।
दास वृत्ति [illegible] सह के अपार नित,
निज [illegible] स्नात है ॥

(२८८)

जवाहिर लाल मुनि उसी वर्ष मन्दसोर,
दीप मालिका के रोज अनशन ठाया था।
अजमेर मे ही खूबचन्द्र महाराज ढिग,
वायुवेग से दुःखद समाचार आया था॥
दरशन हित उस काल चल पड़े आप,
दुरभाग्य से न किन्तु दरशन पाया था।
सेवा नहिं कर सके मुनिवर को पुनीत,
शोक मुनि-मानस मे इस हेतु छाया था॥

(२८६)

भीलवाडा कुछ रोज आप थे विराजमान,
वहा से चित्तौड़ गढ़ के लिये पधारे थे।
पण्डित प्रवर मुनि देवी लाल महाराज,
उदयपुर को विहार करने ही वारे थे॥
उनके ही साथ उस भूमि को पवित्र कर,
वहा से भी आप नया शहर सिधारे थे।
सुनि आगमन मुनिराज का समाए नहीं
फूले ओसवाल साधु मारगीय सारे थे॥

(२९६)

यदि न पधारे आप तो, होगा महा अनर्थ।
कलह रोकने में वहां, हम होगे असमर्थ॥

(२९७)

सुनकर उनकी बात यह, नन्दलाल मुनिराज।
बोले तुम जाओ वहां, कलह मेटने काज॥

(२९८)

गुरुवर के आदेश से, खूबचन्द्र महाराज।
शीघ्र पधारे सादडी, रखने उनकी लाज॥

(२९९)

चातुर्मास कीया वहा, हुआ परम उपकार।
सत्य धर्म सन्देश से, किया धर्म सञ्चार॥

(३००)

मूर्ति उपासक लोग भी, बने आपके भक्त।
सेवा श्री मुनिराज की, करते थे हर वक्त॥

(३०१)

प्रेम भाव बढ़ने लगा, क्लेश हो गया दूर।
थे कृतज्ञ मुनिराज के, सभी लोग भरपूर॥

(३०८)

कनक मल्ल जी बोहरा श्रावक का शुभ मौन।
ब्यावर में मुनिराज ने किया वहीं पर गौन॥

(३०९)

आज्ञा उनकी मात की लेकर ठहरे आप।
सती दान के हृदय मे हुआ बहुत सन्ताप॥

(३१०)

था मुनिवर का पारणा किया वहीं विश्राम।
गए गोचरी के लिये दूजे मुनि अविराम॥

(३११)

सती दान आये वहा कनकमल्ल के साथ।
बोले किस आदेश से ठहरे हो मुनिनाथ॥

(३१२)

किसने दी आज्ञा तुम्हें किसका मिला निदेश।
विन आज्ञा ठहरे अगर होगा इसमे क्लेश॥

(३१३)

सती दान कहने लगे तजो अभी यह ठौर।
अथवा सुनना है तुम्हें कहो अभी कुछ और॥

(३२०)

तदन्तर गुरुवर्य श्री नन्दलाल मुनिराज।
कविवर हीरालाल जी चौथमल्ल महाराज॥

(३२१)

सत्ताइस सन्तों सहित ब्यावर पहुँचे आय।
दौड़े दर्शन के लिये नर नारी हर्षाय॥

(३२२)

मुनिवर देवीलाल जी थे इन सब के सङ्ग।
जनता ने आदर किया इनका सहित उमङ्ग॥

(३२३)

काकरिया के भवन मे ठहरे सब मुनिराय।
थे प्रसन्न इमि सेठनी ऋद्धि सिद्धि मनु पाय॥

(३२४)

पाली वासी बालिया सोनी चुन्नीलाल।
सेवा में तत्पर हुए श्रेष्ठी पन्नालाल॥

(३२५)

लाभ लिया व्याख्यान का इन लोगों ने खूब।
खूब-सुधारस जलधि मे स्वयं गये सब डूब॥

(३२६)

मुनिवर देवीलाल जी खूबचन्द्र मुनिराज।
चले प्रान्त पंजाब मे धर्म दिपाने काज॥

(३२७)

अजरामरपुर किशनगढ़ जयपुर में सविशेष।
धर्म वृष्टि करते गए हर करके दुःख क्लेश॥

(३२८)

पहुँचे अलवर नगर मे करते हुए बिहार।
मिला आगरा का वहाँ जैन संघ उस वार॥

(३२९)

विनती की चातुर्मास की, मुनीवर से भरपूर।
बाले स्वीकृति दीजिये हमको वेग हुजूर॥

(३३०)

आग्रह लख श्री संघ का की स्वीकृति प्रदान।
चले आगरा की तरफ खूबचन्द्र गुणवान॥

(३३१)

उन्निस चउहत्तर वहा किया सुखद चउमास।
जनता जैन अजैन सब, थी मुनिवर की दास॥

(३३२)

बन्द हुए इस बार भी कई कत्ल आगार।
मुनिवर के उपदेश से बही धर्म की धार॥

(३३३)

लोहा मडी आगरा में ठहरे कुछ रोज।
श्रावक जन ने आप से करी सत्य की खोज॥

(३३४)

हुए यहाँ भी थे कई, बूचड खाने बन्द।
नित्य नया व्याख्यान मे रहता था आनन्द॥

(३३५)

गए वहाँ से देहली, बरसाते आनन्द।
दरसाते जिन धर्म की प्राकृत ज्योति अमन्द॥

(३३६)

पडित अरु सहृदय महा देवीलाल मुनीश।
झुकने जिनके सामने बड़े बड़े * अवनीश॥

---

* राजा।

(३३७)

उनके संग मुनिवर चले काश्मीर की ओर ।
पावन करते मार्ग के ग्राम नगर सब ठोर ॥

(३३८)

इमि विहार करते हुए पहुंचे यमुना पार ।
समझाते थे प्रेम से है अनित्य संसार ॥

(३३९)

अम्बाला करनाल अरु पटियाला कर पार ।
सूक्ति सुधा सरसायकर नाभा गये पधार ॥

(३४०)

लुधियाना वासी युवक एक बिलैती राम ।
नाभा में मुनिराज से दीक्षा ली अभिराम ॥

(३४१)

नाभा के श्री संघ में छाया था उत्साह ।
दीक्षा के दिन बह रहा था जिन धर्म प्रवाह ॥

(३४२)

नाभा से प्रस्थान कर लुधियाना में आय ।
दिया धर्म उपदेश था प्रेम सहित समुझाय ॥

हरि गीति

(३४३)

उस वक्त सु विराजित वहां पञ्जाब के मुनिराज थे।

गुरुदेव आत्मारामजी के जैन के सिरताज थे॥

दादा व परदादा गुरु जिनके चरित्र महान थे।

वात्सल्यता की मूर्ति थे आदर्श थे गुणवान थे॥

(३४४)

उस एक पाटे से सभी व्याख्यान वे देते रहे।

उपदेश से मन खूबचन्द्र मुनीश हर लेते रहे॥

विद्वान मुनियो में परस्पर प्रेम का अतिरेक था।

शुभ कार्य और अकार्य का उनको अतीव विवेक था॥

(३४५)

कपूर थल होते हुए तब आप जालन्धर गए।

पञ्जाब मे चहु ओर धार्मिक भाव थे घर कर गए॥

श्री पार्वती महाराज जो विख्यात थीं विदुषी सती।

आर्या तथैव प्रसिद्ध चन्दा जी परम उज्जवल

(३५०)

स्वागत उन्होंने चरित नायक का किया उत्साह से।
आने लगी व्याख्यान मे जनता अलौकिक चाह से ॥
एकत्र दोनों के वहा होते रहे उपदेश थे।
पंजाबियों के सम्मिलत हरते सभी दुख क्लेश थे ॥

(३५१)

जम्बू तवी में आपका स्वागत हुआ पुर जोर था।
देखो जहा पर बस वही जिन धर्म का ही शोर था ॥
था गूंजने तब लग गया सारा शहर जयकार से।
दौड़े कई नर नार दर्शन के लिये बाजार से ॥

(३५२)

थे पूज्य मुन्नालाल जी उस वक्त जम्बू राजते।
थे साथ में उनके तपस्वी बालचन्द्र विराजते ॥
पहिले पहल उन पूज्य जी के पास पहुँचे भक्ति से।
की वन्दना विधिवत् मुनिद्वय को बड़ी अनुरक्ति से ॥

(३४६)

थी ज्ञान की चर्चा परस्पर नित्य ही होती रही।
श्रद्धा सहित मुनिराज से सन्देह निज खोती रही॥
आये अमृतसर आप जडियाला गुरु होते हुये।
पथ मे सुधार्मिक भावना का बीज शुभ बोते हुये॥

(३४७)

श्री पूज्य मोहनलाल जी थे वृद्ध वय अरु ज्ञान मे।
श्री उदय चन्दजी गणी थे मस्त ईश्वर ध्यान में॥
विद्वान मुनि श्रीमान काशीराम जी महाराज जी।
*वर्चस्व जिनका जैन जनता पर अटल है आज भी॥

(३४८)

उस वक्त थे शोभित यहीं मुनिराज जब उनसे मिले।
अत्यन्त प्रेम प्रसन्नता से हृत्कमल उनके खिले॥
शास्त्रोक्त प्रश्नोत्तर परस्पर प्रेम से होते रहे।
हृसने लगे सदेह जो थे अब तलक रोते रहे॥

(३४९)

करके विहार मुनीश ने पसरूर को पावन किया।
फिर स्यालकोट गए जहां उपदेश मन भावन किया॥
श्रीमान पंडित लालचन्द्र यहां बड़े मुनिराज थे।
पञ्जाब के मुनिवर्ग मे सबमें बड़े जो आज थे॥

---

*—प्रभाव।

(३५०)

स्वागत उन्होंने चरित नायक का किया उत्साह से।
आने लगी व्याख्यान में जनता अलौकिक चाह से॥
एकत्र दोनों के वहां होते रहे उपदेश थे।
पंजाबियों के सम्मिलत हरते सभी दुख क्लेश थे॥

(३५१)

जम्बू तवी में आपका स्वागत हुआ पुर जोर था।
देखो जहां पर बस वही जिन धर्म का ही शोर था॥
था गूंजने तब लग गया सारा शहर जयकार से।
दौड़े कई नर नार दर्शन के लिये बाजार से॥

(३५२)

थे पूज्य मुन्नालाल जी उस वक्त जम्बू राजते।
थे साथ में उनके तपस्वी बालचन्द्र विराजते॥
पहिले पहल उन पूज्य जी के पास पहुँचे भक्ति से।
की वन्दना विधिवत् मुनिद्वय को बड़ो अनुराग से॥

आचार्य पद महोत्सव

हरिपद

सार (३५३)

था वैशाख मास शुक्ला दशमी थी परम सुहावन।
मुन्नालालाचार्य पदोत्सव हुआ जगत मन भावन॥
श्रेय मिला जम्मू को उसका समारोह था भारी।
दस हजार जनता थी लगभग खुश थे सब नर नारी॥

(३५४)

बिना विघ्न सम्पन्न हुआ वह पूज्य महोत्सव सारा।
जम्मू जनता ने यह अद्भुत कार्य पूर्ण कर डारा॥
काश्मीर भूपति का भी था सब प्रबन्ध सुखकारी।
त्रिमुनि चरित में किया हुआ है यह वर्णन हितकारी॥

(३५५)

जम्बू जनता का आग्रह, थी आज्ञा पूज्य प्रवर की।
होवे धर्म प्रचार यही, इच्छा थी श्री मुनिवर की॥
उन्निस पचहत्तर में जम्बू में चउमासा कीन्हा।
खूबचन्द्र मुनिवर ने मानस जनता का हर लीन्हा॥

(३५६)

हुआ धर्म उद्योत आपने चमत्कार दिखलाया।
अमृतोपम वाणी से जम्बू मे मुद मगल छाया॥
ठाठ लगा था धर्म ध्यान का हुई तपस्या भारी।
धन्य धन्य आचार्य धन्य मुनि खूबचन्द्र गुणधारी॥

(३५७)

चतुर्मास कर पूर्ण वहाँ से दिल्ली आप पधारे।
साथ साथ आचार्य प्रवर के श्री मुनिराज हमारे॥
अलवर जनता के आग्रह से पूज्याज्ञा सिर धारे।
चौमासा के हेतु आप अलवर की ओर पधारे॥

(३५८)

जनता में धार्मिक प्रभावना हुई आपके द्वारा।
मयाचन्द मुनि ने था अनशन, एक मास का धारा॥
जनता का इस तपश्चरण में था सहयोग अनोखा।
जैन धर्म के सूर्योदय ने पाप सरोवर सोखा॥

(३५३)

वचन सुधा से सरसाई मानव की हृदय लताएँ।
थे स्वर्गीय भाव हम कैसे कह कर उन्हें जताएँ॥
टूटी कर्म ग्रन्थि मानव के मानस सरसिज फूले।
धार्मिकता की चका चौंध मे घर का रस्ता भूले॥

(३६४)

जैन अजैन सभी जनता दर्शन को उमड़ पड़ी थी।
धर्माराधन करने लायक वह स्वर्गीय घडी थी॥
जैन धर्म का रूप यहाँ सच्चा लोगो ने जाना।
दया अहिंसा सत्य तथा अपरिग्रह को पहिचाना॥

(३६५)

वहाँ मास उपवास तपस्वी मयाचन्द्र ने कीन्हा।
उनके दर्शन से लोगों ने लोचन का फल लीन्हा॥
तपश्चरण का शुभ प्रभाव जयपुराधीश ने जाना।
बन्द कराई भट्टी और नगर का बूचड खाना॥

(३६६)

हुई तपस्या पूर्ण, हुए धार्मिक शुभ मङ्गल गाने।
खूबचन्द्र मुनिराज लगे निज वचनामृत बरसाने॥
उगा धर्म का सूर्य प्रजा के मानस सरसिज फूले।
बढ़ा पुण्य का जोर स्वयं सब पाप पुञ्ज उन्मूले॥

(३६७)

थी सरकारी आज्ञा सिंहो को भी दूध पिलाओ।
राज घराने में भी कोई उस दिन मॉस न खाओ॥
बन्द करादो जा करके भट्ठियाँ नगर की सारी।
बने नहीं उस दिन कोई भी प्राणी मांसाहारी॥

(३६८)

था प्रसिद्ध इतिहास पूर्व वह जयपुर का चौमासा।
धर्म ध्यान तप दान ज्ञान का ठाठ रहा था खासा॥
जैन धर्म की महिमा को सब राव रङ्क ने जाना।
जग के सारे धर्मों ने सर्वोच्च इसी को माना॥

(३६९)

उन्नीस अठहत्तर में मुनिवर मन्दसोर में आए।
सुन अनुपम उपदेश श्रावको ने निज कर्म खपाए॥
करके चातुर्मास यहां पर शान्ति सुधा सरसाई।
मालवीय जनता मुनिवर को पाकर अति हर्षाई॥

(३७०)

पोरवाड़ गोत्रीय महाजन छगनलाल विरागी।
मुनिवर के उपदेशों से बन गए मोक्ष-अनुरागी॥
मार्गशीर्ष में दीक्षा दी उस वर्ष उन्हें मुनिवर ने।
पन्च महा व्रतधारी बन गुरु के संग लगे विचरने॥

(३७५)

गुरु चरणों की सेवा में कुछ रोज वहां रह करके।
तपश्चरण में भूख प्यास की परिषह को सह करके॥
गये गुरु के साथ ताल गंगापुर आदिक होके।
नगर भीलवाड़ा भक्तों के पाप पङ्क को धोके॥

(३७६)

संसारी जीवों को जिनवर का सन्देश सुनाते।
भूले भटके प्राणी को धार्मिक सत्पथ दिखलाते॥
सुनो वीर सन्तान कभी तुम कायर नहीं कहाना।
बढ़े चलो आगे वीरो मत पीछे कदम उठाना॥

(३७७)

चोथ मल्ल जी प्रसिद्ध वक्ता काव्य कला गुण आगर।
सैंतिस ठाने से सुविराजे थे मुनि करुणा सागर॥
चैत सुदी द्वादसी सोमवार था अति सुख दायी।
तीन भाइयों ने दीक्षा ली कीर्ति चहूं दिशि छाई॥

(३७८)

राज मल्ल जी थे पहिले दीक्षा के लेने वाले।
रिखब चन्द्र थे भण्डारी—गोत्रीय मुक्ति मतवाले॥
रत्नलाल थे पोरवाड़ वंशज परिमित आहारी।
बने यही तीनों भाई जिनमत के दीक्षा धारी॥

(३७९)

दस हजार मानव दीक्षा की क्रिया देखने आये।
वह अपूर्व उत्साह देख आबाल वृद्ध हरषाये ॥
वीर—जयन्ती भी अद्भुत उत्साह से गई मनाई।
मुनि मण्डल ने उसमें भी अपनी योग्यता दिखाई ॥

(३८०)

प्रसिद्ध वक्ता ने अपनी वक्तृत्व कला दिखलाई।
चरित्र—नायक के मुख पै थी सरस्वती चढ आई ॥
इनके ओजस्वी भाषण से चहुधा जाग्रति छाई।
दूजे मुनिराजो ने भी वचनो की झड़ी लगाई ॥

(३८१)

जन समाज का मुनिराजो ने हृदय कमल विकसाया।
वचनामृत पी पी करके भिलवाडा शहर *अघाया ॥
उन्निस इक्कासी में श्री मुनिवर रतलाम पधारे।
चौमासा के हेतु गुरु की आज्ञा सिर पर धारे ॥

(३८२)

हुई धर्म जागृति रतलामी जनता में भी भारी।
होता था व्याख्यान आपका जग जन का हितकारी ॥
स्थानक वासी जनता में उत्साह अलौकिक छाया।
जगी धर्म की ज्योति आपने चमत्कार दिखलाया ॥

---

* तृप्त हो गया।

मन हरण (३८३)

करके समाप्त रतलाम का चतुरमास,
नीमच स्वकीय गुरु सेवा में पधारे थे।
उपदेश औषध पिलाके मुनिराज जी ने,
सङ्कट वहां की जनता के सभी टारे थे॥
पीड़ा हुई आंख में संयोग वश वहां पर,
व्याकुल हुए अतीव सिरी सघ वारे थे।
गुरुजी के साथ इसी आंख के इलाज हेतु,
वहा से मलार गढ़ ग्राम में सिधारे थे॥

(३८४)

वहां से भी मन्दसौर इसी कार्य के निमित,
गुरुवर नन्दलाल जी के साथ आये थे।
डाक्टर वहां रामनाथ जी प्रसिद्ध एक,
आंख के इलाज मे सुयश खूब पाये थे॥
आप ही के औषध से हुई नेत्र पीडा शान्त,
दया के निधान गुणवान वे कहाये थे।
किया था चतुरमास यहीं पर उस साल,
उपदेश सुन सभी लोग हरषाये थे॥

द्रुत विलिम्बित (३८५)

सुन सुभाषण श्री मुनिराज का।
खिल गया मन जैन समाज का॥
सकल मङ्गल मूल प्रभावना।
वचन था मुनि का मन भावना॥

(३८६)

सरलता मृदुता मुनिराज की ।
निरखते सब थे अति चाव से ॥
समुद थे जन मालव प्रान्त के ।
अति प्रभावित धार्मिक भाव से ॥

(३८७)

हृदय में मुनि के उठती रही ।
जिन प्रदर्शित ज्योति अनूप थी ॥
व्यथित था उनको करता कभी ।
कलह, नाशक जैन समाज का ॥

(३८८)

पर बिना इस धार्मिक ज्योति के ।
कुमति मानव की न दुरे कभी ॥
इसलिये जन को जिन धर्म का ।
मनन है सुखदायक लोक में ॥

(३८९)

मनुज को मुनि थे समझा रहे ।
प्रभु जिनेश्वर के गुण गा रहे ॥
परम आदर पूर्वक प्रेम से ।
सदुपदेश सभी सुनते रहे ॥

(३६०)

चल दिये फिर आप महागुणी।
चरित नायक गौरव सङ्ग में॥
प्रबल हिंसक--जन्तु समूह भी।
दरश मे मुनि के सुख मानते॥

(३६१)

तरसते कितने जन मार्ग में।
यदि न दर्शन था उनको मिला॥
सकल भांति जिन्हें मुनिराज का।
चरण पङ्कज ही अवलम्ब था॥

दोहा

(३६२)

अमरावद नन्दावता, अरु निम्बोद सुनाम।
पहुचे मुनि आंकोदड़ा, कर पवित्र यह ग्राम॥

(३६३)

जब विराजित थे इस ग्राम में।
कर रहे जन को उपदेश थे॥
नहिं कभी जग से सुख मुक्ति है।
बिन गहे पद पङ्कज वीर का॥

(३६४)

विनय पूर्वक श्रावक एक था।
कह रहा मुनि नाथ! गुलाब जी॥
घर पै नहिं स्वस्थ है।
इस लिये चलिए अब जावरा॥

(३६५)

चरण का शुभ दर्शन चाहते।
विकलता वश नित्य कराहते॥
चल उन्हें कृत कृत्य बनाइये।
इस घडी मङ्गलीक सुनाइये॥

(३६६)

अधिक और निवेदन नाथ से।
कर नहीं सकता यह दास है॥
गति न है करुणाकर से छिपी।
हृदय मे उनके अभिलाप है॥

(३६७)

सुनत ही उसकी यह प्रार्थना।
चल पड़े गुरु के मुनि सङ्ग मे॥
विचरते सहते दुख मार्ग के।
सु पहुचे मुनि नायक जावरे।

(३६८)

पहुंच के घर पै उन सेठ के।
व्यथित मानस को सरसा दिया॥
अमित भाव भरा मुख चन्द्र से।
बचन शान्ति सना वरसा दिया॥

(३६६)

चतुरमास वहीं मुनि ने किया।
विनय, भक्ति भरा फिर मान के॥
फिर बढ़ी जिन धार्मिक भावना।
नगर मे अब शाह नवाब के॥

(४००)

सुलभ दर्शन से मुनिराज के।
अखिल मानव वृन्द प्रसन्न था॥
सुन सुधर्म कथा अति चाव से।
सुजन वृन्द स्वभाग्य सराहते॥

(४०१)

परम पावन तीन हुए वहां।
चतुर मास बड़े उत्साह से॥
कर दिया अभिवृद्धि सुधर्म की।
रसवती सरसा करके सुधा॥

हरिपद

दोहा (४०२)

मुनिवर छगनलाल ने, किया सुखद उपवास।
अडतालिस दिन का वहीं, निज गुरुवर के पास॥

(४०३)

प्रिय सुशिष्य सुखलाल जी, ज्ञान वृद्ध मति मान।
थे मुनिवर के साथ मे, कविता—कला निधान॥

(४०४)

करी परीक्षा आप ने, बच्चों की सविशेष।
ज्ञान वृद्धि स्कूल के, रहा न कोई शेष॥

(४०५)

हुए सभी उत्तीर्ण इमि, था उत्तम परिणाम।
नवल मल्ल जी सेठ ने, सबको दिया इनाम॥

(४०६)

पुस्तक कपडे भी दिये, पेडे मधुर रसाल।
जय जय कार मचा वहां, जय मुनिवर सुखलाल॥

द्रुत विलम्बित (४०७)

कर समाप्त वहा चउमास को।
चल पडा मुनि मण्डल भावुआ॥
करत पावन मारग के सभी।
लघु गामड़े नगर तथा ग्राम को॥

(३६८)

पहुंच के घर पै उन सेठ के।
व्यथित मानस को सरसा दिया॥
अमित भाव भरा मुख चन्द्र से।
बचन शान्ति सना बरसा दिया॥

(३९९)

चतुरमास वहीं मुनि ने किया।
विनय, भक्ति भरा फिर मान के॥
फिर बढ़ी जिन धार्मिक भावना।
नगर में अब शाह नवाब के॥

(४००)

सुलभ दर्शन से मुनिराज के।
अखिल मानव बृन्द प्रसन्न था॥
सुन सुधर्म कथा अति चाव से।
सुजन वृन्द स्वभाग्य सराहते॥

(४०१)

परम पावन तीन हुए वहां।
चतुर मास बड़े उत्साह से॥
कर दिया अभिवृद्धि सुधर्म की।
रसवती सरसा करके सुधा॥

(४०८)

कुछेक रोज वहां विराज कर।
सदुपदेश दिया दया अरु सत्य का ॥
अशन पान सभी छुड़वा दिया।
मति विनाशक मद्य व मांस का ॥

(४०९)

सकल वस्तु सुसङ्गति से मिले।
सुजन के सिर राजत कीट भी ॥
सुमन सङ्ग यही सब ठौर ही
शुभ निदर्शन सङ्गति का लखौ ॥

(४१०)

तदुपरान्त विनिन्द्य अनीति की।
अति भयङ्करता बतला दिया ॥
सकल सौख्य प्रदायक मोक्ष का।
सरल मार्ग उन्हें जतला दिया ॥

(४११)

कपट और अधर्म प्रवञ्चना।
परम पातक हैं इसलोक मे ॥
इसलिए बचना इस पाप से।
मनुज का परमार्थिक धर्म है ॥

(५२०)

मगन थे वचनामृत पान में।
प्रिय न था लगता कुछ भी उन्हें ॥
जन समूह विलक्षण प्रेम में।
अटल श्राम बना मुनिराज का ॥

(५२१)

विमल मानस में अति गाढ़ ही।
पड़ गया उपदेश प्रभाव था ॥
छूट न चाह रहे जग जाल में।
मचलता मन का नित भाव था ॥

(५२२)

नमन को विनती बहुमान से।
जन समूह बड़ा रतलाम का ॥
अटल निश्चय में पुनि आ गया।
जग गई स्मृति धर्म प्रकाश की ॥

(५२३)

सुगुरु के शिरसार्य निदेश से
विनय मान सुश्रावक वृन्द के ॥
चतुरमास किया रतलाम में। *
शुभ विंशति सौ षटशीति में ॥

---

* १९८६ में

(४१६)

कतहुं कौरव काक सुहावने।
कहुँ शृगाल फिरें मन भावने॥
शश कपोत कहूँ चष च्यावने।
प्रकृति रञ्जन §सज्जन हू घने॥

(४१७)

*विटप खेचर वृन्द सुसाजहीं।
नभसि सुन्दर वारिद गाजहीं॥
अति विशाल सुशैल विराजहीं।
नत खड़े वर वृक्ष कहीं कहीं॥

(४१८)

मृग मृगी लख के मुनिराज को।
चरण वन्दन के हित धावते॥
ठिठक के शक के पर दूर से।
वन-पशू सब शीश नमावते॥

(४१९)

कुछेक रोज रहे मुनि धार मे।
फिर विहार किया खाचरोद को॥
पथ प्रदर्शन से मुनिराज के।
बच गए जन संसृति कूप से॥

---

§जुगनू (आगिया) *वृक्ष।

दोहा (४२४)

मुनि श्री छगनलाल ने, किया सुखद उपवास।
इक्कावन दिन का वहां, उष्ण वारि पर खास॥

(४२५)

हुआ पारणा भाद्रसुद, चौदस मङ्गलवार।
महामहोत्सव था रचा, मचा मङ्गलाचार॥

(४२६)

हिज हाइनेस दरबार श्री, सज्जन सिंह महीप।
दर्शन करने के लिए, आए सन्त समीप॥

द्रुत विलम्बित (४२७)

नगर में द्रुत बन्द हुई वहा।
सकल हिंसक पूर्ण प्रवृत्तियां॥
तप महोत्सव को अवलोकते।
षट सहस्र उपस्थित लोग थे'

(४२८)

इधर से रतलाम दिवान भी।
सदुपदेश वहां सुनने गये॥
प्रवर दीगर जागिरदार भी।
बचन पुष्प सुधा चुनने गये॥

(४३३)

फिर पूज्य जी के साथ ही था मन्द सोर गमन किया।
श्रद्धा समन्वित श्रावको को आपने दर्शन दिया॥
उपदेश सुनने के लिये जन मण्डली आती रही।
जनता अलौकिक भक्ति से मुनि के सुगुण गाती रही॥

(४३४)

कुकड़ेश्वरा वासी विरागी लघुवयस्क सत गुनी।
आये परम उत्साह से गृह त्याग कर होने मुनी॥
श्री कृष्णलाल सुबाल की दीक्षा हुई अति चाव से।
अब और विनयान्वित हुए जो थे विनम्र स्वभाव से॥

(४३५)

उस वक्त ही मरु पूज्य हस्ती मल्ल जी आये वहां।
थे आठ ठाणों से अतुल उत्साह भरलाये वहां॥
ठहरे वहां श्री पूज्य दोनो एक ही आवास मे।
व्याख्यान भी होते रहे थे सम्मिलित उस मास में॥

(४३६)

श्री पूज्य मुन्नालाल से शास्त्राध्ययन करते रहे।
श्री पूज्य हस्ती मल्ल जी भंडार निज भरते रहे॥
जैनागमों के गूढ़ तत्वों का मनन मुनि ने किया।
श्री खूबचन्द्र मुनीश से भी ज्ञान मुनिवर ने लिया॥

हरीगीतिका (४३७)

उन्नीस सौ सत्तासी में प्यारे मुनीश्वर जावरा।
करके सफल चौमास करते पूत मालव की धरा॥
गुरु दर्शनार्थ गये वहां से प्यार लिए रतलाम को।
करते सुपावन मार्ग के सारे नगर पुर ग्राम को॥

(४३८)

दर्शन किया विधि युत वन्दन भी किया मुनिनाथ को।
उनके चरण में रख दिया अपने सहित निज साथ को॥
गुरुदेव भी गद्गद् हुए प्रिय शिष्य को पाकर वहां।
व्याख्यान अनुगम किया मुनिराज ने जाकर वहां॥

(४३९)

गुरुदेव के आदेश से फिर पूज्य से सहमत हुए।
शास्त्राध्ययन उपवास तप में प्रेम पूर्वक रत हुए॥
आचार्य जी के संग मालव भूमि को पावन किया।
अजमेर को प्रस्थान उनके साथ मन भावन किया॥

(४४०)

वह साधु सम्मेलन कि जिस पर मुग्ध जैन समाज था।
टूटी कड़ी को जोड़ने का वह अलौकिक साज था॥
अजमेर में मुनिराज उसमें सम्मिलित होने गए।
आचार्य जी के साथ समता बीज खुद बोने गए॥

(४४१)

करते हुए जयघोष पथ मे मोह नाशक धर्म का।
उपदेश देते जा रहे थे मनुज को सत्कर्म का॥
चारों तरफ से आ रही अजमेर में नर मेदिनी।
उस धर्म-मेले मे गये चहुँ ओर के निर्धन धनी॥

(४४२)

आचार्य जी के साथ मुनिवर भीलवाडा आ गये।
मेवाड़ वासी ऋद्धि सिद्धि तथैव नव निधि पा गये॥
उस ठौर उनके मुनिजनों का एक सम्मेलन हुआ।
जिसमें नियम उपनियम का साद्यन्त परिमार्जन हुआ॥

(४४३)

उस वक्त उस आम्नाय के मुनिराज उनचालीस थे।
आचार्य मुन्नालाल जी शुभ सम्प्रदाया धीश थे॥
इनके अलावा और भी मुनिराज तत्र विराजते।
मुनिवर अमोलक ऋषि तपस्वी देव ऋषि थे राजते॥

(४४४)

विद्वान मुनि आनन्द ऋषि आदिक चतुर्दश थे मुनी।
उस भीलवाड़ा ग्राम की शोभा बढ़ी चौदह गुनी॥
एकत्र ही उपरोक्त मुनियों का पवित्र निवास था।
उत्साह इससे मुनिवरों अरु श्रावकों में खास था॥

(५५५)

व्याख्यान श्री चन्द्र की जनता मग्न होता रहा।
उस प्रेम पारावार में लगता मधुर गोता रहा॥
करके विहार चले सभी मुनिराज अजयमेर पुरी।
चलने लगी तब पापियों के पेट में पैनी छुरी॥

(५५६)

जिन धर्म का उद्योत करते आ गये ब्यावर सभी।
ऐसा अलौकिक ठाठ धार्मिक था नहीं देखा कभी॥
था जगमगाने लग गया ब्यावर नगर शुभ वस्त्र में।
हटने लगे थे पाप-पुञ्ज प्रचण्ड धार्मिक शस्त्र से॥

(५५७)

उस वक्त अन्तिम सम्प्रदाय के बड़े मुनिराज थे।
सब जा रहे अजमेर को मुनि संघ के सुखकाज थे॥
व्याख्यान सब के सम्मिलित आनन्द नित होते रहे।
उस धर्म सरिता में लगाते भव्य जन गोते रहे॥

(५५८)

श्री पूज्य मुन्नालाल जी उस वक्त रोग ग्रस्त थे।
उनकी सुसेवा में सभी मुनिराज निशिदिन व्यस्त थे॥
पर भाग लेने के लिये अजमेर जाना था उन्हें।
चिरकाल के उस क्लेश को निश्चित मिटाना था उन्हें॥

(४४१)

करते हुए जयघोष पथ में मोह नाशक धर्म का।
उपदेश देते जा रहे थे मनुज को सत्कर्म का॥
चारों तरफ से आ रही अजमेर में नर मेदिनी।
उस धर्म-मेले मे गये चहुँ ओर के निर्धन धनी॥

(४४२)

आचार्य जी के साथ मुनिवर भीलवाड़ा आ गये।
मेवाड़ वासी ऋद्धि सिद्धि तथैव नव निधि पा गये॥
उस ठौर उनके मुनिजनों का एक सम्मेलन हुआ।
जिसमें नियम उपनियम का साद्यन्त परिमार्जन हुआ॥

(४४३)

उस वक्त उस आम्नाय के मुनिराज उनचालीस थे।
आचार्य मुन्नालाल जी शुभ सम्प्रदाया धीश थे॥
इनके अलावा और भी मुनिराज तत्र विराजते।
मुनिवर अमोलक ऋषि तपस्वी देव ऋषि थे गाजते॥

(४४४)

विद्वान मुनि आनन्द ऋषि आदिक चतुर्दश थे मुनी।
उस भीलवाड़ा ग्राम की शोभा बढ़ी चौदह गुनी॥
एकत्र ही उपरोक्त मुनियों का पवित्र निवास था।
उत्साह इससे मुनिवरों अरु श्रावकों में खास था॥

(४४६)

इस हेतु अनुपम पालकी तैयार करवाई गई।
प्रस्थान की आई घड़ी प्रभु प्रार्थना गाई गई॥
उसको स्वकन्धों पर उठाकर सन्त थे सब जा रहे।
करके सुदर्शन पूज्य का नर नारि सब हरषा रहे॥

(४५०)

ब्यावर नगर से पूज्यवर के साथ अजरामर पुरी।
आये चरित नायक हमारे क्लेश की करने चुरी॥
जिस ठौर भारत वर्ष का था साधु सम्मेलन रचा।
आया न हो जिसमें न ऐसा पूज्य था कोई बचा॥

(४५१)

होवे कलह का अन्त यह चिन्ता उन्हें सविशेष थी।
उस मुक्ति पथ के पथिक की इच्छा यही बस शेष थी॥
मुनिराज मिश्रीलाल का जीवन बचाने के लिये।
अजमेर पहुचे आप निज करतब दिखाने के लिये॥

(४५२)

चर्चा करेंगे कुछ यहां उस वक्त के अजमेर की।
सीमा न थी जिसमें चतुर्विध संघ के उस ढेर की॥
जाओ जहां जिन धर्म की जयकार सुनलो कान से।
देखो जहां मुनिराज को मस्तक झुका सम्मान से॥

(४५७)

श्री संघ में बिजली सदृश दौड़ी लहर अति प्रेम की।
मिलता उसी से पूछते बातें नगर के क्षेम की॥
मालूम होता था सभी कुछ वस्तु अद्भुत पा गये।
थे चिन्ह उनके आननों पर हर्ष के शुभ छा गये।

(४५८)

अजमेर में अज्ञानता का दूर था तम हो गया।
इस भाँति जैन समाज का वह क्लेश था कम हो गया।
जिन धर्म का गौरव बढ़ाना अब हमारा काम है॥
अज्ञान, को मेटे बिना लेना नहीं विश्राम है॥

(४५९)

उस वक्त सारी उलझनें आचार्य जी के यत्न से॥
सुलझीं परस्पर प्रेम भाव बड़ा महान प्रयत्न से।
सब जैन जनता आपकी इस हेतु पूर्ण कृतज्ञ है।
श्री पूज्य का निन्दक स्वयं का शत्रु है अरु अज्ञ है॥

(४६०)

आषाढ़ कृष्ण द्वादशी का दुर्दिवस आ ही गया।
शशि वार को अपनी कला दुर्दैव दिखला ही गया॥
वे पूज्य थे वे वन्द्य थे वे धर्म के प्रतिपाल थे।
वे पुण्य के रक्षक तथा वे पाप के भी काल थे॥

(४६५)

यह सम्प्रदाय सदैव उनका फूलता फलता गया।
यह स्वच्छ धर्म प्रवाह अविरल रूप से चलता गय
जिसकी समुन्नति देख कर ईर्ष्यालु घबड़ाने लगे।
श्री सघ के श्रावक तथा मुनिराज सुख पाने लगे॥

दोहा (४६६)

उन्निस सौ नव्वे हुआ चतुर्मास रतलाम।
खूबचन्द्र मुनिराज का परम पुण्य सुखधाम॥

(४६५)

यह सम्प्रदाय सदैव उनका फूलता फलता गया।
यह स्वच्छ धर्म प्रवाह अविरल रूप से चलता गय
जिसकी समुन्नति देख कर ईर्ष्यालु घवडाने लगे।
श्री सघ के श्रावक तथा मुनिराज सुख पाने लगे॥

दोहा (४६६)

उन्निस सौ नव्वे हुआ चतुर्मास रतलाम।
खूबचन्द्र मुनिराज का परम पुण्य सुखधाम॥

आचार्य पद महोत्सव

हरिपद

सार

(३५३)

था वैशाख मास शुक्ला दशमी थी परम सुहावन।
मुन्नालालाचार्य पदोत्सव हुआ जगत मन भावन॥
श्रेय मिला जम्बू को इसका समारोह था भारी।
दस हजार जनता थी लगभग खुश थे सब नर नारी॥

(३५४)

बिना विघ्न सम्पन्न हुआ वह पूज्य महोत्सव सारा।
जम्बू जनता ने यह अद्भुत कार्य पूर्ण कर डारा॥
काश्मीर भूपति का भी था सब प्रबन्ध सुखकारी।
त्रिमुनि चरित में किया हुआ है यह वर्णन हितकारी॥

(३५५)

जम्बू जनता का आग्रह, थी आज्ञा पूज्य प्रवर की।
होवे धर्म प्रचार यही, इच्छा थी श्री मुनिवर की॥
उन्निस पचहत्तर में जम्बू मे चउमासा कीन्हा।
खूबचन्द्र मुनिवर ने मानस जनता का हर लीन्हा॥

(३५६)

हुआ धर्म उद्योत आपने चमत्कार दिखलाया।
अमृतोपम वाणी से जम्बू मे मुद मगल छाया॥
ठाठ लगा था धर्म ध्यान का हुई तपस्या भारी।
धन्य धन्य आचार्य धन्य मुनि खूबचन्द्र गुणधारी॥

(३५७)

चतुर्मास कर पूर्ण वहाँ से दिल्ली आप पधारे।
साथ साथ आचार्य प्रवर के श्री मुनिराज हमारे॥
अलवर जनता के आग्रह से पूज्याज्ञा सिर धारे।
चौमासा के हेतु आप अलवर की ओर पधारे॥

(३५८)

जनता मे धार्मिक प्रभावना हुई आपके द्वारा।
मयाचन्द मुनि ने था अनशन, एक मास का धारा॥
जनता का इस तपश्चरण में था सहयोग अनोखा।
जैन धर्म के सूर्योदय ने पाप सरोवर सोखा॥

(३५९)

हिज हाइनेस अलवर भूपति जयसिंह वीर महाराजा।
जिनका वह संस्मरण आज भी है वैसा ही ताजा।
बन्द कराये बूचड़ खाने और भट्टियाँ सारी।
शेरों को भी दूध पिलाओ दी आज्ञा सरकारी।

(३६०)

और पारणे के दिन दुखियों को भोजन करवाया,
जनता में शुभ धर्म भाव भूपति वर ने भरवाया।
थे प्रसन्न सब लोग मुखों पर नूतन छवि थी छाई।
थे सबके सब कार्य दीन दुखियों को अति सुखदाई।

(३६१)

वर्षा हुई हर्ष की अनुपम शोभित थे मुख मण्डल।
मङ्गल गीतों से भक्तों के गूँज गया नभ मण्डल॥
सभी परस्पर प्रेम भाव से धार्मिक चर्चा करते।
मुनिवर के चरणों में आकर भक्ति भाव से परते॥

(३६२)

उन्नीस सौ सतहत्तर का चौमासा था जयपुर में।
था अद्भुत उल्लास जयपुरी जनता के भी उर में॥
भक्त शिरोमणि रेखचन्द्र जी के महलों में ठहरे।
दिए धर्म उपदेश भाव भर दिए हृदय में गहरे॥

(३५३)

वचन सुधा से सरसोई मानव की हृदय लताएँ।
थे स्वर्गीय भाव हम कैसे कह कर उन्हें जताएँ॥
टूटी कर्म ग्रन्थि मानव के मानस सरसिज फूले।
धार्मिकता की चका चोध में घर का रस्ता भूले॥

(३६४)

जैन अजैन सभी जनता दर्शन को उमड़ पड़ी थी।
धर्माराधन करने लायक वह स्वर्गीय घडी थी॥
जैन धर्म का रूप यहाँ सच्चा लोगो ने जाना।
दया अहिंसा सत्य तथा अपरिग्रह को पहिचाना॥

(३६५)

वहाँ मास उपवास तपस्वी मयाचन्द्र ने कीन्हा।
उनके दर्शन से लोगों ने लोचन का फल लीन्हां॥
तपश्चरण का शुभ प्रभाव जयपुराधीश ने जाना।
बन्द कराई भट्टी और नगर का बूचड़ खाना॥

(३६६)

हुई तपस्या पूर्ण, हुए धार्मिक शुभ मङ्गल गाने।
खूबचन्द्र मुनिराज लगे निज बचनामृत बरसाने॥
उगा धर्म का सूर्य प्रजा के मानस सरसिज फूले।
बढ़ा पुण्य का जोर स्वयं सब पाप पुञ्ज उन्मूले॥

थी सरकारी आज्ञा सिंहो को भी दूध पिलाओ।
राज घराने में भी कोई उस दिन मॉस न खाओ॥
बन्द करादो जा करके भट्टियाँ नगर की सारी।
बने नहीं उस दिन कोई भी प्राणी मासाहारी॥

(३६८)

था प्रसिद्ध इतिहास पूर्व वह जयपुर का चौमासा।
धर्म ध्यान तप दान ज्ञान का ठाठ रहा था खासा॥
जैन धर्म की महिमा को सब राव रङ्क ने जाना।
जग के सारे धर्मों ने सर्वोच्च इसी को माना॥

(३६९)

उन्नीस अठहत्तर मे मुनिवर मन्दसोर में आए।
सुन अनुपम उपदेश श्रावकों ने निज कर्म खपाए॥
करके चातुर्मास यहां पर शान्ति सुधा सरसाई।
मालवीय जनता मुनिवर को पाकर अति हर्षाई॥

(३७०)

पोरवाड़ गोत्रीय महाजन छब्बालाल विरागी।
मुनिवर के उपदेशों से बन गए मोक्ष-अनुरागी॥
मार्गशीर्ष में दीक्षा दी उस वर्ष उन्हें मुनिवर ने।
पन्च महा व्रतधारी बन गुरु के संग लगे विचरने॥

(३७१)

उन्निस उन्नासी मे कीन्हा राम पुरा चौमासा।
सत्य अहिंसा की छूरी से काट कर्म का फाँसा॥
मन्दसोर बासी श्री लक्ष्मीचन्द्र वहा पर आए।
हीरालाल नाम का अपना पुत्र साथ मे लाए॥

(३७२)

पिता पुत्र ने साथ साथ ससार वहाँ पर त्यागा।
मुक्ति मोहिनी पर उन दोनो का मानस अनुरागा॥
धन्य वही नर वीर जगत से छुटा में मोह हटाते।
वही काच के बदले मुक्ति अमोलक पाते॥

(३७३)

अजरामरपुर मुनिवर उन्निस सौ अस्सी मे आए।
किया वहीं चौमास मनुज धर्म ध्यान सिखलाए॥
वीर प्ररुपित तत्व वहा जनता को भी समझाया।
अन्धकार था जहाँ वहाँ पर सत्य सूर्य चमकाया॥

(३७४)

कर विहार अजमेर नगर से व्यावर आप पधारे।
जग मग करने लगे वहा भी धार्मिक नभ मे तारे॥
थे गुरुवर श्री नन्दलाल मुनिराज वहा पर राजे।
उनकी सेवा मे चरित्र—नायक मुनिराज विराजे॥

(३७५)

गुरु चरणों की सेवा में कुछ रोज वहां रह करके।
तपश्चरण में भूख प्यास की परिषह को सह करके॥
गये गुरु के साथ ताल गंगापुर आदिक होके।
नगर भीलवाड़ा भक्तों के पाप पङ्क को धोके॥

(३७६)

ससारी जीवों को जिनवर का सन्देश सुनाते।
भूले भटके प्राणी को धार्मिक सत्पथ दिखलाते॥
सुनो वीर सन्तान कभी तुम कायर नहीं कहाना।
बढ़े चलो आगे वीरों मत पीछे कदम उठाना॥

(३७७)

चोथ मल्ल जी प्रसिद्ध वक्ता काव्य कला गुण आगर।
सैंतिस ठाने से सुविराजे थे मुनि करुणा सागर॥
चैत सुदी द्वादसी सोमवार था अति सुख दायी।
तीन भाइयों ने दीक्षा ली कीर्ति चहूं दिशि छाई॥

(३७८)

राज मल्ल जी थे पहिले दीक्षा के लेने वाले।
रिखव चन्द्र थे भण्डारी—गोत्रीय मुक्ति मतवाले॥
रत्नलाल थे पोरवाड़ वंशज परिमित आहारी।
बने यही तीनों भाई जिनमत के दीक्षा धारी॥

(३७९)

दस हजार मानव दीक्षा की क्रिया देखने आये।
वह अपूर्व उत्साह देख आबाल वृद्ध हरषाये॥
वीर—जयन्ती भी अद्भुत उत्साह से गई मनाई।
मुनि मण्डल ने उसमें भी अपनी योग्यता दिखाई॥

(३८०)

प्रसिद्ध वक्ता ने अपनी वक्तृत्व कला दिखलाई।
चरित्र—नायक के मुख पै थी सरस्वती चढ़ आई॥
इनके ओजस्वी भाषण से चहुधा जाग्रति छाई।
दूजे मुनिराजों ने भी वचनों की झड़ी लगाई॥

(३८१)

जन समाज का मुनिराजो ने हृदय कमल विकसाया।
वचनामृत पी पी करके भिलवाडा शहर *अघाया॥
उन्निस इक्कासी में श्री मुनिवर रतलाम पधारे।
चौमासा के हेतु गुरु की आज्ञा सिर पर धारे॥

(३८२)

हुई धर्म जागृति रतलामी जनता में भी भारी।
होता था व्याख्यान आपका जग जन का हितकारी॥
स्थानक वासी जनता में उत्साह अलौकिक छाया।
जगी धर्म की ज्योति आपने चमत्कार दिखलाया॥

---

* तृप्त हो गया।

(३६०)

... ने फिर आप महागुणी।
चरित नायक गौरव सङ्ग में ॥
... हिंसक-जन्तु समूह भी।
दरश में मुनि के सुख मानते ॥

(३६१)

... कितने जन मार्ग में।
यदि न दर्शन था उनको मिला ॥
... भाँति जिन्हें मुनिराज का।
चरण पङ्कज ही अवलम्ब था ॥

(३६२)

... नन्दावता, अरु निम्बोद सुनाम।
... मुनि आंकोदड़ा, कर पवित्र यह ग्राम ॥

(३६३)

... विराजित थे इस ग्राम में।
कर रहे जन को उपदेश थे ॥
... जग से सुख मुक्ति है।
बिन गहे पद पङ्कज वीर का ॥

(३९४)

विनय पूर्वक श्रावक एक था।
कह रहा मुनि नाथ ! गुलाब जी ॥
घर पै नहिं स्वस्थ है ।
इस लिये चलिए अब जावरा ॥

(३९५)

चरण का शुभ दर्शन चाहते।
विकलता वश नित्य कराहते ॥
चल उन्हें कृत कृत्य बनाइये।
इस घड़ी मङ्गलीक सुनाइये ॥

(३९६)

अधिक और निवेदन नाथ से।
कर नहीं सकता यह दास है ॥
गति न है करुणाकर से छिपी।
हृदय में उनके अभिलाष है ॥

(३९७)

सुनत ही उसकी यह प्रार्थना।
चल पड़े गुरु के मुनि सङ्ग मे ॥
विचरते सहते दुख मार्ग के।
सु पहुंचे मुनि नायक जावरे ॥

(४१२)

हर कोमल कण्ठ से।

मधुर गान कभी करते रहे॥

र सुमानव वृन्द का।

विमल चित्त सदा हरते रहे॥

(४१३)

विहार गए मुनि धार को।

तज रियासत मन्जुल भावुआ॥

खते छवि सुन्दर मार्ग की।

अचल की वन की अरु बाग की॥

(४१४)

सग विशाल रसालन की लरी।

सरसता सुषमा मनु अवतरी॥

शचि पुरन्दर की उपमा धरी।

विपिन मध्य *किरात वनेचरी॥

(४१५)

सुमन सौरभ पूर्ण जहाँ खिले।

रसिक यूथ °शिलीमुख हैं पिले॥

जलज भी जल मध्य कहीं कहीं।

कुमुदनी अरु केतकि भी कहीं॥

---

*भील। °भौंरा।

(३६८)

पहुंच के घर पै उन सेठ के।
व्यथित मानस को सरसा दिया॥
अमित भाव भरा मुख चन्द्र से।
बचन शान्ति सना बरसा दिया॥

(३६६)

चतुरमास वहीं मुनि ने किया।
विनय, भक्ति भरा फिर मान के॥
फिर बढ़ी जिन धार्मिक भावना।
नगर में अब शाह नवाब के॥

(४००)

सुलभ दर्शन से मुनिराज के।
अखिल मानव वृन्द प्रसन्न था॥
सुन सुधर्म कथा अति चाव से।
सुजन वृन्द स्वभाग्य सराहते॥

(४०१)

परम पावन तीन हुए वहां।
चतुर मास बड़े उत्साह से॥
कर दिया अभिवृद्धि सुधर्म की।
रसवती सरसा करके सुधा॥

दोहा (४०२)

मुनिवर छब्बालाल ने, किया सुखद उपवास ।
अड़तालिस दिन का वहीं, निज गुरुवर के पास ॥

(४०३)

प्रिय सुशिष्य सुखलाल जी, ज्ञान वृद्ध मति मान ।
थे मुनिवर के साथ में, कविता—कला निधान ॥

(४०४)

करी परीक्षा आप ने, बच्चों की सविशेष ।
ज्ञान वृद्धि स्कूल के, रहा न कोई शेष ॥

(४०५)

हुए सभी उत्तीर्ण इमि, था उत्तम परिणाम ।
नवल मल्ल जी सेठ ने, सबको दिया इनाम ॥

(४०६)

पुस्तक कपडे भी दिये, पेड़े मधुर रसाल ।
जय जय कार मचा वहां, जय मुनिवर सुखलाल ॥

द्रुत विलम्बित (४०७)

कर समाप्त वहा चउमास को।
चल पडा मुनि मण्डल झाबुआ ॥
करत पावन मारग के सभी ।
लघु गामड़े नगर तथा ग्राम को ॥

(४०८)

कुछेक रोज वहां विराज कर।
सदुपदेश दिया दया अरु सत्य का॥
अशन पान सभी छुड़वा दिया।
मति विनाशक मद्य व मांस का॥

(४०९)

सकल वस्तु सुसङ्गति से मिले।
सुजन के सिर राजत कीट भी॥
सुमन सङ्ग यही सब ठौर ही
शुभ निदर्शन सङ्गति का लखो॥

(४१०)

तदुपरान्त विनिन्द्य अनीति की।
अति भयङ्करता बतला दिया॥
सकल सौख्य प्रदायक मोक्ष का।
सरल मार्ग उन्हें जतला दिया॥

(४११)

कपट और अधर्म प्रवञ्चना।
परम पातक है इसलोक में॥
इसलिए बचना इस पाप से।
मनुज का परमार्थिक धर्म है॥

(४१२)

अति मनोहर कोमल कण्ठ से।
मधुर गान कभी करते रहे॥
सब प्रकार सुमानव वृन्द का।
विमल चित्त सदा हरते रहे॥

(४१३)

कर विहार गए मुनि धार को।
तज रियासत मन्जुल झाबुआ॥
निरखते छवि सुन्दर मार्ग की।
अचल की वन की अरु बाग की॥

(४१४)

मग विशाल रसालन की लरी।
सरसता सुषमा मनु अवतरी॥
शचि पुरन्दर की उपमा धरी।
विपिन मध्य *किरात वनेचरी॥

(४१५)

सुमन सौरभ पूर्ण जहाँ खिले।
रसिक यूथ °शिलीमुख हैं पिले॥
जलज भी जल मध्य कहीं कहीं।
कुमुदनी अरु केतकि भी कहीं॥

---

*भील। °भौरा।

(४१६)

कतहुं कौरव काक सुहावने ।
कहुँ शृगाल फिरें मन भावने ॥
शश कपोत कहूँ चष च्यावने ।
प्रकृति रञ्जन §सञ्जन हू घने ॥

(४१७)

*विटप खेचर वृन्द सुसाजहीं ।
नभसि सुन्दर वारिद गाजहीं ॥
अति विशाल सुशैल विराजहीं ।
नत खड़े वर वृक्ष कहीं कहीं ॥

(४१८)

मृग मृगी लख के मुनिराज को ।
चरण वन्दन के हित धावते ॥
ठिठक के शक के पर दूर से ।
वन-पशू सब शीश नमावते ॥

(४१९)

कुछेक रोज रहे मुनि धार मे ।
फिर विहार किया खाचरोद को ॥
पथ प्रदर्शन से मुनिराज के ।
बच गए जन संसृति कूप से ॥

---

§जुगनू (आगिया) *वृक्ष ।

(४२०)

मगन थे वचनामृत पान से।

प्रिय न था लगता कुछ भी उन्हें ॥

जन समूह विलक्षण प्रेम से।

अटल दास बना मुनिराज का ॥

(४२१)

विमल मानस में अति शीघ्र ही।

पड़ गया उपदेश प्रभाव था ॥

छुट न चाह रहे जग जाल से।

बदलता मन का नित भाव था ॥

(४२२)

करन को विनती चउमास की।

जन समूह चहा रतलाम का ॥

अटल निश्चय से पुनि आ गया।

जग गई द्युति धर्म प्रकाश की ॥

(४२३)

स्वगुरु के शिरधार्य निदेश से।

विनय मान सुश्रावक वृन्द के ॥

चतुरमास किया रतलाम में। ❀

इगुन विंशति सौ षडशीति में ॥

❀ १९८६ में

दोहा

(४२४)

मुनि श्री छगनलाल ने, किया सुखद उपवास ।
इकावन दिन का वहां, उष्ण वारि पर खास ॥

(४२५)

हुआ पारणा भाद्रसुद, चौदस मङ्गलवार ।
महामहोत्सव था रचा, मचा मङ्गलाचार ॥

(४२६)

हिज हाइनेस दरबार श्री, सज्जन सिंह महीप ।
दर्शन करने के लिए, आए सन्त समीप ॥

द्रुत विलम्बित

(४२७)

नगर में द्रुत वन्द हुईं वहा ।
सकल हिंसक पूर्ण प्रवृत्तियां ॥
तप महोत्सव को अवलोकते ।
षट सहस्र उपस्थित लोग थे ।

(४२८)

इधर से रतलाम दिवान भी ।
सदुपदेश वहा सुनने गये ॥
प्रवर दीगर जागिरदार भी ।
वचन पुष्प सुधा चुनने गये ॥

(४२६)

धरम का अति सुन्दर ठाट था।
करम नाशक पावन पाठ था॥
नयनरञ्जन अञ्जन ज्ञान का।
भवन भञ्जन गञ्जन पाप का॥

(४३०)

श्रमण धर्म समुन्नति के लिये।
खुल गया श्रमणालय ग्राम मे॥
लग गये सब जैन अजैन भी।
सकल मानव धार्मिक काम मे॥

(४३१)

छ्यासी सत्तासी तथा अट्ठासी। चउमास।
किए शहर रतलाम में, वीर प्रभू के दास॥

हरिगीतिका (४३२)

करके विहार मुनीश नीमच आ गए रतलाम से।
उपदेश देते जा रहे उस ग्राम को इस ग्राम से॥
थे पूज्य मुन्नालाल जी उस ठौर राजितचन्द्र से।
श्रद्धा सहित की वन्दना मुनिराज को आनन्द से॥

(४३३)

फिर पूज्य जी के साथ ही था मन्द सोर गमन किया।
श्रद्धा समन्वित श्रावको को आपने दर्शन दिया॥
उपदेश सुनने के लिये जन मण्डली आती रही।
जनता अलौकिक भक्ति से मुनि के सुगुण गाती रही॥

(४३४)

कुकड़ेश्वरा वासी विरागी लघुवयस्क सत गुनी।
आये परम उत्साह से गृह त्याग कर होने मुनी॥
श्री कृष्णलाल सुबाल की दीक्षा हुई अति चाव से।
अब और विनयान्वित हुए जो थे विनम्र स्वभाव से॥

(४३५)

उस वक्त ही मरु पूज्य हस्ती मल्ल जी आये वहां।
थे आठ ठाणो से अतुल उत्साह भरलाये वहां॥
ठहरे वहां श्री पूज्य दोनो एक ही आवास मे।
व्याख्यान भी होते रहे थे सम्मिलित उस मास मे॥

(४३६)

श्री पूज्य मुन्नालाल से शास्त्राध्ययन करते रहे।
श्री पूज्य हस्ती मल्ल जी भंडार निज भरते रहे॥
जैनागमों के गूढ़ तत्वों का मनन मुनि ने किया।
श्री खूबचन्द्र मुनीश से भी ज्ञान मुनिवर ने लिया॥

हरीगीतिका (४३७)

उन्नीस सौ नवासी में आये मुनीश्वर जावरा।
करके सुखद चौमास करने पूत मालव की धरा॥
गुरु दर्शनार्थ गये वहां से आप फिर रतलाम को।
करते सुपावन मार्ग के सारे नगर अरु ग्राम को॥

(४३८)

दर्शन किया विधि युक्त वन्दन भी किया मुनिनाथ को।
उनके चरण मे रख दिया श्रद्धा सहित निज माथ को॥
गुरुदेव भी गद्‌गद् हुए प्रिय शिष्य को पाकर वहा।
व्याखयान अत्युत्तम दिया मुनिराज ने जाकर वहा॥

(४३९)

गुरुदेव के आदेश से फिर पूज्य से सङ्गत हुए।
शास्त्राध्ययन उपवास तप मे प्रेम पूर्वक रत हुए॥
आचार्य जी के साथ मालव भूमि को पावन किया।
अजमेर को प्रस्थान उनके साथ मन भावन किया॥

(४४०)

वह साधु सम्मेलन कि जिस पर मुग्ध जैन समाज था।
टूटी लड़ी को जोड़ने का वह अलौकिक साज था॥
अजमेर मे मुनिराज उसमे सम्मिलित होने गए।
आचार्य जी के साथ समता बीज खुद बोने गए॥

(४४१)

करते हुए जयघोष पथ में मोह नाशक धर्म का।
उपदेश देते जा रहे थे मनुज को सत्कर्म का॥
चारों तरफ से आ रही अजमेर मे नर मेदिनी।
उस धर्म-मेले मे गये चहुँ ओर के निर्धन धनी॥

(४४२)

आचार्य जी के साथ मुनिवर भीलवाडा आ गये।
मेवाड़ वासी ऋद्धि सिद्धि तथैव नव निधि पा गये॥
उस ठौर उनके मुनिजनों का एक सम्मेलन हुआ।
जिसमे नियम उपनियम का साद्यन्त परिमार्जन हुआ॥

(४४३)

उस वक्त उस आम्नाय के मुनिराज उनचालीस थे।
आचार्य मुन्नालाल जी शुभ सम्प्रदाया धीश थे॥
इनके अलावा और भी मुनिराज तत्र विराजते।
मुनिवर अमोलक ऋषि तपस्वी देव ऋषि थे गाजते॥

(४४४)

विद्वान मुनि आनन्द ऋषि आदिक चतुर्दश थे मुनी।
उस भीलवाड़ा ग्राम की शोभा बढ़ी चौदह गुनी॥
एकत्र ही उपरोक्त मुनियो का पवित्र निवास था।
उत्साह इससे मुनिवरों अरु श्रावकों में खास था॥

(४४५)

व्याख्यान भी एकत्र ही उनका सदा होता रहा ।
उस प्रेम पारावार मे लगता समुद गोता रहा ॥
करके बिहार चले सभी मुनिराज अजरामर पुरी ।
चलने लगी तब पापियो के पेट मे पैनी छुरी ॥

(४४६)

जिन धर्म का उपदेश करते आगये ब्यावर सभी ।
ऐसा अलौकिक ठाठ धार्मिक था नहीं देखा कभी ॥
था जगमगाने लग गया ब्यावर नगर मुख वस्त्र से ।
कटने लगे थे पाप-पुञ्ज प्रचण्ड धार्मिक शस्त्र से ॥

(४४७)

उस वक्त उन्निस सम्प्रदायों के वहा मुनिराज थे ।
सब जा रहे अजमेर थे मुनि सब के सरताज थे ॥
व्याख्यान सब के सम्मिलित सानन्द नित होते रहे ।
उस धर्म सरिता मे लगाते भव्य जन गोते रहे ॥

(४४८)

श्री पूज्य मुन्नालाल जी उस वक्त रोग ग्रस्त थे ।
उनकी सुसेवा मे सभी मुनिराज निशिदिन व्यस्त थे ॥
पर भाग लेने के लिये अजमेर जाना था उन्हे ।
चिरकाल के उस क्लेश को निश्चित मिटाना था उन्हें ॥

(४४९)

इस हेतु अनुपम पालखी तैयार करवाई गई।
प्रस्थान की आई घड़ी प्रभु प्रार्थना गाई गई॥
उसको स्वकन्धों पर उठाकर सन्त थे सब जा रहे।
करके सुदर्शन पूज्य का नर नारि सब हरषा रहे॥

(४५०)

ब्यावर नगर से पूज्यवर के साथ अजरामर पुरी।
आये चरित नायक हमारे क्लेश की करने चुरी॥
जिस ठौर भारत वर्ष का था साधु सम्मेलन रचा।
आया न हो जिसमें न ऐसा पूज्य था कोई बचा॥

(४५१)

होवे कलह का अन्त यह चिन्ता उन्हें सविशेष थी।
उस मुक्ति पथ के पथिक की इच्छा यही बस शेष थी॥
मुनिराज मिश्रीलाल का जीवन बचाने के लिये।
अजमेर पहुंचे आप निज करतब दिखाने के लिये॥

(४५२)

चर्चा करेंगे कुछ यहां उस वक्त के अजमेर की।
सीमा न थी जिसमें चतुर्विध संघ के उस ढेर की॥
जाओ जहां जिन धर्म की जयकार सुनलो कान से।
देखो जहां मुनिराज को मस्तक झुका सम्मान से॥

(४५३)

कोइ अहिंसा की ध्वजा कर मे लिए फहरा रहा।
कोई बड़े उत्साह से सङ्गीत अद्भुत गा रहा॥
कोई बना सेवक स्वयं सङ्केत पथ का कर रहा।
कोई पिलाने के लिये पानी कहीं पर भर रहा॥

(४५४)

मध्याह्न में मुनि मण्डली आहार लेने आ रही।
प्रातः कहीं श्री आर्यकॉ जी गीत धार्मिक गा रहीं॥
बाहर अनेको जा रहे हैं शौच सायङ्काल को।
आश्चर्य होता था निरख के भव्य उनके भाल को॥

(४५५)

होगा सुनिश्चत मेल अब चर्चा यही सर्वत्र थी।
जिनके लिए जनता वहां इस रूप में एकत्र थी॥
था खूब इसमे श्रम किया श्री खूबचन्द्र मुनीश ने।
उनके हृदय की प्रार्थना को सुन लिया जगदीश ने॥

(४५६)

श्री संघ के उत्साह से नेता जनो के यत्न से।
था सफल सम्मेलन हुआ सबके अनिद्य प्रयत्न से॥
श्री पूज्य आपस मे मिले उनके हृदय सरसिज खिले।
कर क्रमिक वन्दन प्रेम से अन्योन्य सब मुनिवर मिले॥

(४५७)

श्री संघ में बिजली सदृश दौड़ी लहर अति प्रेम की।
मिलता उसी से पूछते बाते नगर के क्षेम की॥
मालूम होता था सभी कुछ वस्तु अद्भुत पा गये।
थे चिन्ह उनके आननो पर हर्ष के शुभ छा गये।

(३५८)

अजमेर में अज्ञानता का दूर था तम हो गया।
इस भाँति जैन समाज का वह क्लेश था कम हो गया।
जिन धर्म का गौरव बढ़ाना अब हमारा काम है॥
अज्ञान, को मेटे बिना लेना नहीं विश्राम है॥

(४५९)

उस वक्त सारी उलझनें आचार्य जी के यत्न से॥
सुलझीं परस्पर प्रेम भाव बड़ा महान प्रयत्न से।
सब जैन जनता आपकी इस हेतु पूर्ण कृतज्ञ है।
श्री पूज्य का निन्दक स्वयं का शत्रु है अरु अज्ञ है॥

(४६०)

आषाढ़ कृष्ण द्वादशी का दुर्दिवस आ ही गया।
शशि वार को अपनी कला दुर्दैव दिखला ही गया॥
वे पूज्य थे वे वन्द्य थे वे धर्म के प्रतिपाल थे।
वे पुण्य के रक्षक तथा वे पाप के भी काल थे॥

(४६१)

वे मुक्ति के पन्थी बने यह देह भौतिक छोड कर।
वे देवलोक गये समुद्र संसार से मुंह मोड़ कर॥
उनका अलौकिक शक्ति का वर्णन न हो सकता यहां।
तरना जलधि को हाथ से यह शक्ति इस जन मे कहा॥

(४६२)

बत्तीस शास्त्रो का उन्हे सम्पन्न मार्मिक ज्ञान था।
व्यक्तित्व उनका उच्च था सम्मान्य और महान था॥
वाणी मधुर ओजस्विनी व्याख्यान मञ्जु रसाल था।
प्रतिभा प्रखर प्रगटा रहा उनका समुन्नत भाल था॥

(४६३)

उनके समान उदार चित व सन्त कोई और था।
सम्मान उनका एक सा होता रहा सब ठौर था॥
आता अगर कोई झगडने आप के ढिग भूल से।
विद्वेप मिट जाता तुरत उनको निरख जड मूल से॥

(४६४)

उनका प्रभाव अखण्ड जनता के हृदय पर आज है।
उनकी कृपा का अति कृतज्ञ समस्त जैन समाज है॥
मति मान ऐसे पूज्य सबको ही मिले ज्ञानी महा।
जिससे सुधार्मिक ज्योति जगती ही रहे निशिदिन गहा॥

(४६५)

यह सम्प्रदाय सदैव उनका फूलता फलता गया।
यह स्वच्छ धर्म प्रवाह अविरल रूप से चलता गय
जिसकी समुन्नति देख कर ईर्ष्यालु घबड़ाने लगे।
श्री सघ के श्रावक तथा मुनिराज सुख पाने लगे॥

दोहा (४६६)

उन्निस सौ नव्वे हुआ चतुर्मास रतलाम।
खूबचन्द्र मुनिराज का परम पुण्य सुखधाम॥

पंचम प्रकरण

आचार्य पदारोहण

हरिगीतिका (४६७)

थी मुग्ध जनता आपके सुन्दर सरस व्याख्यान पे।
था गर्व जैन समाज को उनके अलौकिक ज्ञान पे ॥
इस हेतु उनको पूज्य पदवी का मिला सन्मान था
उस वर्ष भी रतलाम में उत्साह एक महान था ॥

(४६८)

आचार्य पद से आपको श्री संघ ने भूषित किया।
सादर चतुर्विध संघ ने यह कार्य सम्पादित किया ॥
अत्यन्त गौरव से भरा आचार्य पदवी दान था।
इसमें मुनीश्वर से अधिक श्री संघ का सम्मान था ॥

(४६६)

अद्भुत अकल्पित योग्यता है आप में आचार्य की।
चिन्ता सदा रहती उन्हें अनिवार्य धार्मिक कार्य की॥
सब शिष्य मण्डल को बड़ा ही आप से सन्तोष है।
हर कार्य ही इन पूज्य का नियमित तथा निर्दोष है॥

(४७०)

इनमें न रञ्च प्रपंच है नहि गर्व का ही लेश है।
अत्यन्त शोभा पा रहा इन पूज्य से मुनिवेश है॥
स्वाध्याय करना अरु कराना आपका बस इष्ट है।
उपवास तप योगादि का सद्गुण अतीव वरिष्ट है॥

(४७१)

आश्रित जनो का भी सविधि सम्मान करना जानते।
जो धर्म का सेवक बने उपकार उसका मानते॥
निज गच्छ के सब सन्त को हर्षित किया सम्मान से।
गुण योग्यता सूचक अलौकिक मान पदवी दान से॥

(४७२)

जैन दिवाकर चौथमल, छगनलाल युवराज।
उपाध्याय मुनि शेषमल, प्यारचन्द्र गणिराज॥

(४७३)

कोई प्रवर्तक मुनि तथा कोई सलह कारक बने।
इस भांति नाना नाम पदवी के सविधि धारक बने॥
चहुँ ओर बिजुली की तरह फैली सुखद यह घोषणा।
श्री संघ में आनन्द फैला इस प्रवृत्ति से घणा॥

(४७४)

अन्यान्य ग्रामों में हुआ स्वागत बड़े उत्साह से।
इस घोषणा को था सुना श्री संघ ने अति चाह से॥
निज ग्राम मे यह कार्य सम्पादित कराना चाहते।
भंडार पूरा धर्म से अपना भराना चाहते॥

(४७५)

करने लगे सब प्रार्थना इस हेतु श्री आचार्य से।
श्री पूज्य से जिन धर्म दीपक सन्त से मुनिवर्य में॥
उपयुक्त समझा संघ ने पर मन्दसोर सुधाम को।
इस कार्य के हित मालवा के उस मनोहर ग्राम को॥

(४७६)

उन्नीस सौ इक्कानवे का माघ मास विशिष्ट था।
शनिवार शुक्ल त्रयोदशी का दिन न किसको इष्ट था॥
पन्द्रह सहस्र स्वधर्म सेवक श्रावकों का व्यूह था।
अनुमा से शत साधु साध्वी का महान समूह था॥

(४८१)

श्री पूज्य हुक्मीचन्द्र जी के गच्छ की मुनि मंडली।
क्रमशः विराजित पाट पर मालूम होती थी भली॥
आचार्य थे सर्वोच्च आसन पर सुशोभित हो रहे।
युवराज उनके पास ही बैठे हुए श्रम खो रहे॥

(४८२)

गरिमा-नतोपाध्याय जी उनमें चमकते चन्द्र से।
जिनको निरख कर भव्य जन उन्मुक्त होते द्वन्द्व से॥
गणिवर्य का मोहक वदन किसका न था मन मोहता।
दोनो प्रवर्तक सन्त के मुख तेज था अति सोहता॥

(४८३)

सम्मति प्रदायक सन्त का वर्णन करूँ कैसे यहां।
इस तुच्छ मेरी लेखिनी में शक्ति है इतनी कहां॥
तारे सदृश अन्यान्य मुनिवर चमचमाते थे वहां।
जिनके सुदर्शन से न श्रावक जन अघाते थे वहां॥

(४८४)

इन मुनिवरों से हो रहा सुविनष्ठ कल्मषध्वान्त था।
वातावरण उस काल का अति शुद्ध था अरु शान्त था॥
श्री वीर की वाणी खिली श्री खूब चन्द्रोदय हुआ।
श्री पूज्य मुन्नालाल जी का गच्छ यह निर्भय हुआ॥

(४८५)

राजा फकत शासक तथा है पूज्य अपने देश का।
सम्मान करते हैं सभी संसार मे मुनिवेश का॥
ज्ञानी विवेकी सन्त यद्यपि मान के भूखे नहीं।
वे चाहते हैं वाटिका पर, धर्म की सूखे नहीं॥

(४८६)

उनमें न होता ज्ञान के अभिमान का ही लेश है।
आदर्श औरों के लिए उनका अनिन्दित वेश है॥
उपकार मानवलोक का मुनिराज हैं अति कर रहे।
धार्मिक समुज्जवल भाव जग के मानवो में भर रहे॥

(४८७)

उन्मत्त कुञ्जर सिंह सर्पादिक मुनी के सामने।
फिरते स्वप्राकृत वैर तज कर मित्र अरु बान्धव बने॥
अपमान सहते आप पर सम्मान करते और का।
होता अजीब स्वभाव यह जनवर्ग के सिरमौर का।

(४८८)

जो सन्त गरिमा ज्ञान और विवेक के भंडार हैं।
वे धर्म जाति स्वदेश और समाज के आधार हैं।
वे शील के भी शील हैं वे प्रेम पारावार हैं।
श्रद्धा समन्वित सत्यभक्तों के गले के हार हैं।

(४८९)

ज्ञानी पुरुष इस हेतु ईश्वर भक्त औ मुनिभक्त हैं।
वे सत्य धर्म प्रवृत्ति में रहते सदा अनुरक्त है ॥
स्वीकार करते कष्ट वे संसार का सुख त्याग के।
वे रात सारी है बिताते भजन में हो जाग के ॥

(४९०)

जिनको न कञ्चन कामिनी का लेश भर भी मोह हो।
जिनके हृदय मे प्राणियो के प्रति न किंचित द्रोह हो ॥
जिनका प्रबल व्यक्तित्व अपनी ओर आकर्षित करे
जिनके अमल मुखचन्द्र से सद्बोध वचनामृत झरे।

(४९१)

श्री खूबचन्द्र मुनीश जैसे पूज्य सबको ही मिले ।
जिनके अलौकिक तेज मानस-कमल जन के खिले ॥
जिनके लिए सबके हृदय मे प्रेम भक्ति अनन्य हो ।
जिनके समान समाज मे न प्रभावशाली अन्य हो ॥

(४९२)

जिनको निरख के मान माया लोभ मोहादिक डरें।
जिनके अतुल वर्चस्व से देवेन्द्र भी ईर्ष्या करें ॥
जिसने तपोबल से अटल पाया विजय हो स्वाद पे।
जिसका नहीं हो स्वप्न में भी ध्यान व्यर्थ विवाद पे ॥

(४६३)

दिन द्विगुण रात चतुर्गुनी यह गच्छ नित उन्नति करे।
हो पुण्य का सञ्चार पापी प्रगति मे बाधा परे॥
मुनिराज के व्याख्यान का शुभ लाभ जनता को मिले।
यह धर्म का उद्यान दिन दिन विश्व में फूले फले॥

(४६४)

जिससे चतुर्दिक जगत में आनन्द ही आनन्द हो।
मानव हृदय में ज्ञान ज्योति न एक क्षण भी मन्द हो॥
मुनि भक्त जैन समाज हो गौरव बढ़े निज देश का।
अस्तित्व मिट जावे सकल अभ्युदय नाशक क्लेश का॥

(४६५)

गुरुदेव के पद-पङ्कजों मे भक्त जन की भक्ति हो।
निर्भय बनें आपत्तियो के सहन की भी शक्ति हो॥
उपवास आयम्बिल तथा बेला कभी तेला करें।
अद्भुत तपोबल से अगम भवसिन्धु से तारें तरें॥

षष्ठ प्रकरण

मालिनी

(४६६)

सकल जन खुशी से थे न फूले समाते।
उस समय वहाँ के थे सभी गीत गाते॥
नहिं अवसर ऐसा आख से थे विलोके।
वह मुनिवर सबके चित्त को मोहते थे॥

(४६७)

जब खतम हुआ था कार्य सारा निराला।
वह परम अनोखा दृश्य सौन्दर्य वाला॥
निज सदन सिधारे दूर के ग्राम वारे।
पुर जन मन मारे हो गये सुस्त सारे॥

वंशस्थ छन्द

(४९८)

विहार ज्योंही मुनिराज ने किया।
महा समुद्विग्न मनुष्य मात्र था॥
पुनः पुनः कान लगा लगा सुना।
मुनीश की मञ्जु गिरा रसाल को॥

(४९९)

गये उसी ओर अनेक लोग थे।
विमुग्ध होके सब ही मुनीन्द्र पे॥
चले सभी भक्त-सुपूज्य सङ्ग में।
असीम निस्तब्ध समस्त ग्राम था॥

(५००)

समोद जाते जब एक ग्राम से।
द्वितीय को वे करते विमुग्ध थे॥
नितान्त सारल्य मयी सुमूर्ति से।
विमोहते मानस भक्त वृन्द का॥

(५०१)

विचित्र है शक्ति सुपूज्य देव में।
प्रभाव ऐसा मुनि का अपूर्व है॥
सजीव होता जिसको विलोकते।
नितान्त निर्जीव बना मनुष्य भी॥

(५०२)

विहार में वे बहुधा सदैव थे।
सचेत होके चलना न भूलते॥
विलोकते थे शुभ दृष्टि योग से।
न जीव कोई मुझसे दुःखी बने॥

(५०३)

संभालते ग्राम अनेक मार्ग के।
समाज में ज्ञान दया प्रसारते॥
अनेक ऐसे थल थे सुहावने।
गये न कोई मुनिराज थे जहां॥

हरि गीतिका (५०४)

करजू निवासी श्रावकों ने आप का स्वागत किया।
उत्साह पूर्वक प्रेम से सब बात से अनुगत किया॥
थे तीस घर केवल वहां थानक निवासी जैन के।
चातक बने सब स्वाति जल रूपी मुनीश्वर बैन के॥

(५०५)

प्रातः सदा प्रवचन वहां आचार्य का होता रहा।
जिसको श्रवण कर भक्त जन अज्ञान तम खोता रहा॥
मध्याह्न सायङ्काल दूजे सन्त फरमाते रहे।
व्याख्यान सुनने के लिए नर नारी बहु आते रहे॥

वंशस्थ छन्द

(४९८)

विहार ज्योंही मुनिराज ने किया।
महा समुद्विग्न मनुष्य मात्र था॥
पुनः पुनः कान लगा लगा सुना।
मुनीश की मञ्जु गिरा रसाल को॥

(४९९)

गये उसी ओर अनेक लोग थे।
विमुग्ध होके सब ही मुनीन्द्र पे॥
चले सभी भक्त-सुपूज्य सङ्ग में।
असीम निस्तब्ध समस्त ग्राम था॥

(५००)

समोद जाते जब एक ग्राम से।
द्वितीय को वे करते विमुग्ध थे॥
नितान्त सारल्य मयी सुमूर्ति से।
विमोहते मानस भक्त वृन्द का॥

(५०१)

विचित्र है शक्ति सुपूज्य देव में।
प्रभाव ऐसा मुनि का अपूर्व है॥
सजीव होता जिसको विलोकते।
नितान्त निर्जीव बना मनुष्य भी॥

(५०२)

विहार में वे बहुधा सदैव थे।
सचेत होके चलना न भूलते॥
विलोकते थे शुभ दृष्टि योग से ।
न जीव कोई मुझसे दुःखी बने॥

(५०३)

संभालते ग्राम अनेक मार्ग के ।
समाज में ज्ञान [illegible] [illegible]॥
अनेक ऐसे थल थे सुहावने ।
गये न कोई मुनिराज थे जहां॥

हरि गीतिका

(५०४)

करजू निवासी श्रावकों ने आप का [illegible] किया।
उत्साह पूर्वक प्रेम से नव [illegible]॥
थे तीस घर केवल वहां श्रावक [illegible]
चातक बने सब स्वाति [illegible]॥

(५०५)

प्रातः सदा प्रवचन वहां आचार्य का होता रहा ।
जिसको श्रवण कर भक्त जन [illegible]।
मध्याह्न सायङ्काल दूजे सन्त [illegible]।
व्याख्यान सुनने के लिए नर नारी [illegible]॥

(५०६)

इक रोज सहसा एक सौ अरु तीन डिग्री ज्वर चढ़ा।
जिससे हृदय में शोक जनता के अकारण ही बढ़ा॥
पर सहासी मुनिराज तो भी क्लेश सब सहते रहे।
कर्म प्रकृति के भेद पर व्याख्यान कुछ कहते रहे॥

(५०७)

थे उस समय वे स्मरण करते नित्य शान्ति जिनेश का।
लेते रहे श्रावक सदा आनन्द मुनि उपदेश का॥
पच्चीस दिन तक शान्ति पूर्वक आप ठहरे थे वहां।
चारों तरफ उपवास तप के ठाट गहरे थे वहां॥

(५०८)

फरजू निवासी नारि नर मुनिराज के अति भक्त थे।
सब ही अहर्निश सन्त सेवा भाव में आसक्त थे॥
प्रति दिन दया व्रत दान तप पचखाण का भी जोर था।
प्रत्येक व्यक्ति समाज का दिन रात हर्ष विभोर था॥

(५०९)

कुछ रोज के पश्चात आई शान्ति मुनि की देह में।
आनन्द छाया उस समय हर एक जन के गेह में॥
दर्शन करूं गुरु देव का यह लालसा मन में रही।
मुझ भ्रान्त को जिसने परम पद मार्ग बतलाया सही॥

(५१०)

करके विहार गए तुरत आचार्य जी रतलाम को।
सादर किया संस्पर्श निज गुरुदेव पाद ललाम को॥
थी पूज्य के चौमास की फिर विनतियां आने लगी।
गुरुदेव के मन मध्य द्विविधा भाव उपजाने लगी॥

(५११)

ब्यावर नगर की प्रार्थना लेकिन सुचिर कालीन थी।
आग्रह भरी थी प्रेम से पूरित तथा प्राचीन थी॥
इस हेतु चातुर्मास ब्यावर में किया मुनिराज ने।
उस जैन कुल भूषण तथा जिन धर्म के सिरताज ने॥

(५१२)

पहिले नगर बाहिर बगीचे में किया विश्राम था।
कुन्दन भवन आये जहां व्याख्यान का प्रोग्राम था॥
गूँजा भवन आचार्य के उत्कृष्ट जय जय कार से।
नीचे तथा ऊँचे खचाखच भर गया नर नार से॥

(५१३)

है केन्द्र ब्यावर धर्म का इसमें नहीं अत्युक्ति है।
मिलती यहा पर मुक्ति पाने की अलौकिक युक्ति है॥
रहते यहां के लोग निशिवासर प्रभू के ध्यान में।
सब काम तज कर लोग आते हैं यहां

(५१४)

मुनिराज छब्बालाल जी ने गर्म जल आधार पै।
उपवास छयालिस दिन किया सन्तोष के व्यापार पै॥
निर्विघ्न जिसकी पूर्ति मे आनन्द छाया था वहां।
स्वर्गीय वातावरण भू पर, उतर आया था वहां॥

(५१५)

मेवाड़ के श्री दीपचन्द्र स्वयं वहां पर आगये।
सोलह वरस की उम्र मे मुक्ता अमोलक पा गये॥
दीक्षित हुए श्री पूज्य जी के पास सविधा विधान से।
होकर प्रभावित पूज्य के शास्त्रानु गत व्याख्यान से॥

(५१६)

करके विहार मुनीश जयपुर मध्य मालपुरा गये।
पथ मे मसूदा विजय नगर तथा गुलाब पुरा गये॥
हुड़ा भिणाय तथैव टाटोटी वृहल्लघु ग्राम को।
करते हुए पावन गये उस पूर्व वर्णित धाम को॥

(५१७)

उस वक्त शीत ज्वर उन्हें देता रहा सन्ताप था
वृद्धत्व मे वह रोग भी उनके लिए अ
लगभग त्रयोदश सदन थानक वासियों के थे व
उनको परन्तु मुनिश्वरों का था सुलभ ॥

(५१८)

इस हेतु बनते जा रहे थे मूर्ति पूजक वे सभी।
व्याख्यान सुनने का सुअवसर वे न पाते थे कभी॥
कुछ रोज आप विराज कर सद्बोध का दीपक दिखा।
कट्टर बनाये धर्म-अनुयायी उन्हें सद्गुण सिखा॥

(५१९)

प्रति दिन वहां व्याख्यान होता था सुबह अरु शाम को।
आते जहां श्रावक कई सौ छोड़ के निज काम को॥
जयपुर पधारे फिर वहां से पूज्य ने परिषह सहे।
यद्यपि ज्वर में थे विकल पर नियम पर अविचल रहे॥

(५२०)

उनको वहाँ पर मास कल्पक से अधिक रहना पड़ा।
दौर्बल्य था अति देह में इस हेतु सब सहना पड़ा॥
अति योग्य वैद्यों ने किया श्री पूज्य का उपचार था।
जब स्वास्थ्य लाभ हुआ उसीक्षण करदिया सुविहार था॥

(५२१)

जयपुर निवासी भक्ति से विनती बहुत करने लगे।
करिये यहीं चौमास कहकर पाव मे पड़ने लगे॥
अन्यान्य क्षेत्रों में यही विनती हुई आग्रह भरी।
पर अन्त जयपुर वासियों की प्रार्थना स्वीकृत करी॥

(५२२)

गत वर्ष ब्यावर मे नगर अजमेर की जनता गई।
करने लगी विनती मुनीश्वर के समक्ष नई नई॥
गुरुदेव ब्यावर से प्रथम अजमेर आप पधारिये।
देकर अमल उपदेश सङ्कट भक्त जन का टारिये॥

(५२३)

बोले कभी जब मालवा मे मैं विचरने जाऊँगा।
अजमेर के भी क्षेत्र में उस वक्त शायद आऊँगा॥
निज वचन पालन का उन्हें रहना हमेशा ध्यान था।
श्री पूज्य के कर्तव्य का उनको सदा से ज्ञान था॥

(५२४)

इस हेतु अपनी बात को सच्ची बनाने के लिये।
तैयार थे श्री पूज्य जी अजमेर जाने के लिये॥
चौमास के पहिले विराजे वे वहा दिन तीस थे।
छोटे बड़े श्रावक झुकाते भक्ति से निज शीस थे॥

(५२५)

सङ्कट सहे पथ में कई अजमेर आने के लिये॥
अपने वचन की सत्यता मुनिवर निभाने के लिये॥
परिषह अनेकों शीत घाम तथैव भूख प्यास से।
आचार्य को सहने पड़े दुख अन्यकार प्रकारा के॥

(५२६)

होता रहा व्याख्यान था श्री जैन शाला मे वहा।
श्रोता बड़े उत्साह से आते रहे प्रति दिन जहा ॥
अजमेर की जनता अलौकिक लाभ सा थी पा गई।
उसके परम सौभाग्य की वह शुभ घडी थी आ गई ॥

(५२७)

जयपुर गए अजमेर से चौमास करने के लिए।
उपदेश से जनवर्ग में उत्साह भरने के लिए ॥
सब नगर वासी थे प्रतीक्षा कर रहे बहुमान से।
स्वागत हुआ जयपुर नगर मे फिर अपूर्व विधान से ॥

(५२८)

इस वर्ष जयपुर मे हुई थी खूब धर्म प्रभावना।
जिससे प्रभावित थे हुए आचार्य पूज्य महामना ॥
पंचरङ्गिया भी पांच अरु अट्ठाइया इक्किस भई।
नाना प्रकार अनेक अद्भुत तपश्चर्या की गई ॥

(५२९)

श्रावक अनेको ग्राम से चौमास भर आते रहे।
दर्शन तथा उपदेश से निज हृदय हरषाते रहे ॥
उनमे अनेको घोर तप स्वाध्याय में तल्लीन थे!
रहते वहीं दिन रात कितने जन सुधर्माधीन थे ॥

दोहा (५३०)

उसी वर्ष रतलाम मे संथारा कर वीर।
नन्दलाल गुरुदेव ने छोडा मनुज शरीर॥

(५३१)

शुक्ल द्वितीया चन्द्र दिन श्रावण मास ललाम।
त्याग दिया इस देह को ले जिनवर का नाम॥

शिखरिणी (५३२)

सेवा न हो पाई गुरुवर हमारे चल दिये।
कोशो से कृपा की जो सुमति मुझ में भर दिये॥
रही भारी आशा गुरु चरण सेवी बनन को।
सुना था जो मैंने सकल उसके भी गुनन को॥

(५३३)

मनः पीडा हमे हृदिम मन मे ही रह गई।
वियोगी ज्वाला मे सुमति गति सारी बह गई॥
हमारे भाग्यों मे दरश गुरु का था नहि बदा।
बनू पादाब्जों का भ्रमर यह चाहता मन सदा॥

मत्तगयन्द (५३४)

आज हमें तज के गुरुदेव गये किस ओर विलोक न पाए।
वज्र अचानक टूट पडा यह चित्त न मानस सत्य समाए॥
नीरज हाय वहूँ किस भांति भये अपने गुरुदेव पराए।
अन्तर नेत्र हमारे तथा मम जीवन में नव ज्योति जगाए॥

(५३५)

यह शोक सभी व्यर्थ नहीं इसमे वश रञ्च हमारा।
चन्द्र व सूर्य व इन्द्र महेन्द्र चला न किसी का वहा पर चारा ॥
काल कराल न छोड़ सकै करना पार है सबही को किनारा।
शोक करे तब जो यह चेतन हो न कभी इस देह से न्यारा ॥

(५३६)

आज कहाँ बलवीर गए दुनियाँ मे रही जिनकी न निशानी।
अङ्गद औ हनुमान तथा नल नील व रावण से अभिमानी ॥
राम व कृष्ण बली यदुवंश रहा जग में जिनका नहिं शानी।
काल करै न लिहाज पिलावत है सबको इक घाट पै पानी ॥

(५३७)

शोक तजो जिनदेव भजो सबको इस भाँति रहे समझाते।
आपस में निशि वासर वे अपने गुरु के गुण थे नित गाते ॥
अन्त न पाय सके हम दर्शन थे इस पै सब ही पछताते।
पूज्य सभी मुनि मण्डल को कर्तव्य सदा रहते समझाते ॥

द्रुत विलम्बित

(५३८)

मनुज का मरना यह सिद्ध है।
जनम के सह मौत प्रसिद्ध है ॥
इस लिए दुख का नहीं काम है।
मरण भी मुनि का अभिराम है ॥

(५४३)

निधन भी उनका अति धन्य है।
उन समान नहीं जन अन्य है॥
सदुपकार सदा करते रहे।
दुख दुखी जन का हरते रहे॥

(५४४)

रुचिर पावन दिव्य सुधामयी।
वचन थे मुनिराज सुना रहे॥
हृदय को सुख शान्ति प्रदायिनी।
स्व गुरु कीर्ति गुणोदय गा रहे॥

(५४५)

समझ के क्षणभङ्गुर लोक को।
तजत है जन मृत्युज शोक को॥
सुमति नाशक द्वेष न राग है।
प्रभु पदाम्बुज में अनुराग है॥

(५४६)

बिछुड़ ही सब आखिर जायँगे।
सकल वस्तु समूह न आयँगे॥
किस लिए फिर शोक करें भला।
विरह में दिन रैन मरें भला॥

मालिनी

(५५१)

नन्दलाल मुनिराज का, परिचय परम पवित्र।
सुनिए पाठक वृन्द अब, खींच रहा हूँ चित्र॥

हरिगीतिका (५५२)

कमाडी है ग्राम सुन्दर मालवा इन्दौर मे।
शोभा नहीं देखी गई इसके सरीखी और में॥
नयना भिराम यही परम शुचि जन्म भूमि मुनीश की।
सब भाँति थी इस पर कृपा उस प्रेम मय जगदीश की॥

(५५३)

श्री रत्न चन्द्र जनक जननि थी राजबाई आप की।
जिसने न की थी स्वप्न मे कुत्सित कमाई पाप की॥
श्रीमान हीरालाल थे भाई जवाहर लाल भी।
लौकिक क्रिया करते हुए थे धर्म के प्रतिपाल भी॥

(५५४)

रहते बड़े ही प्रेम से सब बन्धु आपस मे वहाँ।
सम्पत् वहीं आती सुमति सम्मति समा जाती जहां॥
माता पिता का प्रेम भी था पूर्व अपने लाल पै।
सब ने विजय पाली मगर ससार के जजाल पै॥

(५४७)

अब हमे तज के गुरुदेव ही ।
चल बसे जग से स्वयं मैंव ही ॥
अटल है गुरु शिष्य परम्परा ।
मनुज जीवित हो अथवा मरा ॥

(५४८)

चरण पङ्कज का तव दास हू ।
यदपि दूर तथापिहि पास हूँ ॥
फकत एक हमे वर दीजिए ।
हृदय मे गुरुता भर दीजिए ॥

(५४९)

अमर हो चिर शान्ति तुम्हें मिले ।
सुयश की कलिका जग मे खिले ॥
सहज जीवन मानव का बने ।
शुभ वितान समुन्नति का तने ॥

(५५०)

फल लगे जिस भाति सुवृत्त मे ।
नियत है पक्के गिरना यथा ॥
जनम है जग मे जिसको मिला ।
नियत है उसका मरना तथा ॥

(५५९)

श्री नन्दलाल तथैव उनकी राजबाई मात ने
दीक्षा ग्रहण की साथ ही उपरोक्त दोनो भ्रात ने ॥
सम्वत उगन्निस बीस मे दीक्षित हुए संग मे सभी।
ऐसा सुअवसर देखने मे भी न आया था कभी ॥

(५६०)

स्वाध्याय प्रेमी चरित चूड़ामणि विशिष्ट तपोधनी।
विद्या रसिक मुनिवर जवाहर लाल जी अनुपम गुनी ॥
थे स्वर्ग वासी आप उन्निस सौ बहत्तर मे हुए।
जो धर्म के अवतार बन अवतरित इस भू पर हुए ॥

(५६१)

साहित्य भूपण तप दया दानादि के भंडार थे।
श्रीमान हीरालाल जी मुनि धर्म के आधार थे ॥
उन्नीस चउहत्तर सुसम्वत स्वर्ग के गामी बने।
तज कर स्वयं ससार को थे पूर्ण निष्कामी बने ॥

(५६२)

शील व्रती त्यागी तपस्वी शान्त मुनि सिरताज थे।
श्री नन्दलाल गुणज्ञ गुरुवर थे तथा मुनिराज थे ॥
जिनके गुणो का गान करता मुग्ध जैन समाज है।
जिनके लिए सम्मान मानस मे हमारे आज है ॥

(५५५)

उन्नीस बारह मे हुआ था जन्म श्री मुनिराज का।
उस रोज भाग्योदय हुआ सम्पूर्ण जैन समाज का॥
तारीख सोलह थी सितम्बर मास में ऋषि पञ्चमी।
भादव सुदी सब भांति मङ्गल था न थी कोई कमी॥

(५५६)

आनन्द की अद्भुत मनोहर हलचलें चहुँ ओर थीं।
नर थे परम खुश नारियां सम्पूर्ण हर्ष-विभोर थीं॥
गृह देवियां सोहर सभी अपने घरो मे गा रहीं।
कोई सरस पकवान व्यञ्जन विविध भाँति बना रहीं॥

(५५७)

उल्लास की सीमा न थी वह जन्म मङ्गल मूल था।
थी अग्नि पूर्ण प्रदक्षिणार्ची वायु भी अनुकूल था॥
होते सुभग तरु के शुरू से ही सुचिक्कण पात हैं।
मुनिराज के गुण आज भी इस लोक मे विख्यात हैं॥

(५५८)

श्री रत्नचन्द्र पिता तथा मामा सुदेवी लाल ने।
दीक्षा ग्रहण की प्रेम से श्री जैन मत प्रतिपाल ने॥
उन्नीस चौदह विक्रमी सम्वत अतीव पवित्र था।
जिस वर्ष जिन मत का मनोहर खिंच गया खुद चित्र था॥

(५६७)

वह व्यक्ति हर्गिज भी नहीं आचार्य पद के योग्य है।
वह पूज्य बन सकता नहीं जो शासनार्थ अयोग्य है ॥
पर आप तो गुरुदेव इसके सर्वथा उपयुक्त हैं।
संसार के संघर्ष मय जजाल से उन्मुक्त है ॥

(५६८)

मुख से प्रशंसा आप की कोई न कर सकता कभी।
जिस भाति कुछ जल विन्दु से सागर न भर सकता कभी ॥
उपदेश सुन संसार को तज कर सुपथ गामी बने।
जग मे अनेको शिष्य गुरुवर आप के नामी बने ॥

(५६९)

सुस्तवन शिष्यो ने किया इस भाति श्री मुनि राज का।
सम्मान जिनसे है बढ़ा सम्पूर्ण जैन समाज का ॥
जिनके न राग द्वेष का मन मे तनिक सन्चार है।
जिन पै समस्त समाज का निरवद्य धार्मिक भार है ॥

(५७०)

हैं वाद और विवाद गज के वास्ते जो केशरी।
विद्वेष माया चार भञ्जन के लिए जो है करी ॥
विश्रान्ति के हित आप गुरुवर कल्प वृक्ष समान हैं।
सत्यादि मौलिक गुण गणो की आप सुन्दर

(५६३)

कर जोर नत मस्तक हमारा बा बार प्रणाम है।
मुनि राज का अङ्कित हमारे हृदय मे शुभ नाम है॥
है चित्त की यह कामना पद चिन्ह पै उनके चलूँ।
अभिलाष है मैं आमरण इस भावना मे ही पलूँ॥

(५६४)

जग मे कोई शत्रु मेरा हो सभी सन्मित्र हो।
दिन रात सोते जागते मेरे विचार पवित्र हों॥
मुझ से जहाँ तक बन सके जिन धर्म की सेवा करूँ।
मुनिराज के उपदेश का शुभ भाव मानस मे भरूँ॥

(५६५)

आचार्य का उपदेश सुन मुनि मण्डली हर्षित हुई।
गुरुदेव की गुरु भक्ति पै अत्यन्त आकर्षित हुई॥
करने लगे उनकी प्रशसा धन्य गुरवर धन्य हैं।
संसार मे नहिं आप के सम पूज्य कोई अन्य हैं॥

(५६६)

जिसमे नहीं हो शिष्य के उपकार की शुभ भावना।
वह व्यर्थ ही फिरता जगत मे पूज्य औ गुरुवर बना॥
जिसके शुखद उपदेश से फन्दा न संसृति का कटे।
जिसके कुशासन काल मे सम्मान शिष्यों का घटे॥

(५७५)

क्षत्रिय प्रवर श्रीमान चम्पक सेन को शिक्षा लगी।
मुनिराज के उपदेश से दुर्व्यसन की दुर्मति भगी॥
नवकार मन्त्रोच्चार से श्री जैन धर्म ग्रहण किया।
हिंसा व मदिरा मांस आदिक त्यागने का प्रण किया॥

(५७६)

उपवास बेले और तेलादिक हुए उत्साह से।
चौले पचोले अरु अठाई तप हुए अति चाह से॥
इस भांति शाश्वत धर्म का दीपक अखण्ड बना रहा।
आचार्य के उपदेश का सुन्दर वितान तना रहा॥

(५७७)

विनती अनेको ही नगर की थीं वहा आने लगीं।
उस ग्राम की जनता विदाई सोच दुख पाने लगी॥
अलवर तथा अजमेर से आए अनेको तार थे।
आग्रह भरे आते रहे बहु पत्र बारम्बार थे॥

(५७८)

आए कई श्रावक स्वयं चल कर खंडेला ग्राम से।
पावन करो उस क्षेत्र को बोले सुपूज्य ललाम से॥
श्री अमरचन्द्र मुनीश का आया बुलावा पत्र से।
श्री श्यामलाल मुनीश ने आग्रह किया सर्वत्र से॥

(५७१)

चरणार्विन्दो की कृपा सुख-वृष्टि करती सर्वदा ॥
अक्षय निरामय बुद्धि की है सृष्टि करती सर्वदा
निर्भीक बनते जगत के जंजाल से जो त्रस्त हैं।
सेवक तथा मुनि भक्त तो दिन रात रहते मस्त हैं॥

(५७२)

मुनिवर्ग का सुन संस्तवन मुनिराज मुसुकाने लगे।
स्वर्गीय निज गुरुदेव के गुण आप फिर गाने लगे॥
होवें मनुज ससार के सब धर्म निष्ठ निरोग भी।
मिलता रहे सबको सदा मुनि वर्ग का सयोग भी।

(५७३)

मानव सुधार्मिक हों सभी द्रुत दूर सारे कष्ट हों।
अन्याय अत्याचार पापाचार जड़ से नष्ट हों॥
कामादि पड्रिपु का तपोबल से प्रबल सहार हो।
सब को अमल सुख लाभ हो भव सिंधु से सब पार हो॥

हरीगीतिका (५७४)

मुनिवृन्द को मुनिराज ने शुचि मुक्ति पथ दिखला दिया।
भव सिन्धु तरने की कला को सहज ही सिखला दिया॥
सच्चा कृतज्ञ सुशिष्य तो गुरु से उऋण होता नहीं।
पर दुष्ट तो निन्दा बिना सुख नींद है सोता नहीं॥

(५८३)

था गूंजता आकाश भी मुनिराज के जयघोष से।
नर-नारि दौड़े आ रहे थे कोस दो दो कोस से॥
थे छात्र आगे चल रहे जयपुर सुबोध स्कूल के।
झंडा लिए जयकार करते जा रहे थे फूल * के॥

(५८४)

थे गण्य मान्य सभी वहा के सम्मिलित नर-नार भी।
जैनी तथैव अजैन तज छोटे बड़े व्यापार भी॥
महिला जनों के हो रहे चहु ओर मङ्गलगान थे।
मानो नहीं थे गो खडे, पर मञ्जु देव विमान थे॥

(५८५)

आया सुभव्य जलूस वह जब जौहरी बाजार मे।
जनता खड़ी थी मार्ग में कर जोड़ कर कतार में।
सुन्दर बगीचा जौहरी श्रीमान चम्पालाल का।
पहुंचा जुलूस वहा अहिंसा धर्म के प्रतिपाल का॥

(५८६)

आग्रह किया श्री जौहरी जी ने बड़े उत्साह ही से।
करिए पवित्र हमे विनय करने लगे अति चाह से॥
ठहरे रहे मुनिराज पन्द्रह रोज उस उद्यान मे।
रहते वहां तल्लीन जिनवर के सदा [illegible] मे॥

* फूलकं-खुशाहोके

(५७६)

मुनिराज पृथ्वीचन्द्र जी आचार्य होने जा रहे।
निर्ग्रन्थ जिसमे सम्मिलित होने अनेकों आ रहे॥
इस हेतु आवश्यक परम है आगमन श्रीमान का।
यह माघ शुक्लत्रयोदशी है सुदिन पदवीदान का॥

(५८०)

दिल्ली विराजित थीं सुविदुषी श्रीमती चन्दा सती।
अत्यन्त आग्रह से वहां मुनि को बुलाना चाहती॥
जम्बूतवी की आर्यिका धन जी वहा बीमार थी।
आचार्य दर्शन का प्रकट करती सदा उदगार थीं॥

(५८१)

समझा उचित मुनिराज ने प्रस्थान दिल्ली को करें।
पहिले सती की आत्मा का कष्ट जाकर के हरें॥
पथ में खण्डेला नारनौल अवश्य होते जायगे।
उस ओर शक्त्यनुसार धार्मिक बीज बोते जायगे॥

(५८२)

अगहन वदी मे आपने प्रस्थान जयपुर से किया।
उस रोज जयपुर संघ ने अवितृप्त वचनामृत पिया॥
था दृश्य आकर्षक तथा रोचक अतीत विहार का।
वर्णन न हो सकता यहा उस समारोह अपार का॥

चित्र केवल परिचय के लिये है —

स्व० पूज्य श्री खूबचन्द जी महाराज के जलूस का एक दृश्य

(५८७)

फिर कर दिया मुनि ने खडेला की तरफ प्रस्थान था।
जल्दी पहुंचने का वहा आचार्य श्री को ध्यान था॥
शुभ ग्राम जटवाड़ा वहा से तीन माइल दूर था।
मुनिराज-शिक्षा रङ्ग से रञ्जित हुआ भरपूर था॥

(५८८)

श्रीमान् चम्पालाल ने सब का किया सत्कार था।
भोजन तथा हर बात मे उत्युच्च सद्व्यवहार था॥
चालीस माइल दूर से आए कई सज्जन वहा।
गुरु भक्ति प्रेरित चित्त को विश्रान्ति है छन भर कहा॥

(५८९)

था मार्ग वह परिपूर्ण सब साद्यन्त बालू रेत से।
कोई न जाता था वहां विन स्वार्थ अरु विन हेत से॥
समझा उचित आचार्य ने सह कष्ट भी जाना वहा।
था अन्धकार जहां सुधार्मिक दीप दिखलाना वहा॥

(५९०)

होते खंडेला में अनेको सार्वजनिक व्याख्यान थे।
जिनको श्रवण कर भक्तजन होते प्रसन्न महान थे॥
तप त्याग प्रत्याख्यान भी हर रोज होते थे वहा।
सागर उमड़ता धर्म का मुनिराज जाते थे जहा॥

चित्र केवल परिचय के लिये है —

स्व० पूज्य श्री खूबचन्द जी

(५६१)

करके विहार गए वहां से नारनौल सुधाम को।
पथ में पवित्र किया मुनीश्वर ने अनेको ग्राम को॥
आया चतुर्विध संघ था तब पूज्य जी के सामने।
वह दृश्य देवों के बनाए से नहीं हर्गिज बने॥

(५६२)

श्री अमर चन्द तथैव मुनि श्रीचन्द्र जी आए वहा।
जिनके हृदय मे प्रेम है फिर चैन है उनको कहा॥
श्रीमान पृथ्वी चन्द्र जी श्री श्यामलाल तपोनिधी।
आए सभी प्रत्युद्गमन की पूर्ण करने को विधी॥

(५६३)

था गूजता आकाश भी श्री पूज्य के जयनाद से।
जनता खड़ी मुनिवन्दना करती रही मर्याद से॥
इस भांति पदार्पण हुआ उस ग्राम मे मुनिराज का।
फैला सुयश सर्वत्र था उस रोज जैन समाज का॥

(५६४)

श्री सेठ दुल्लीचन्द्र जी के महल में ठहरे वहा।
तप त्याग अरु वैराग्य के सब ठाठ थे गहरे वहा॥
थी मुग्ध जनता आपके गुण पै अलौकिक शांति पै॥
सब की नजर पड़ती मुनीश्वर की अतुल मुख कांति पै॥

दोहा

था पूज्य उत्सव के समय यह मान पत्र दिया गया।
सम्मान मुनिवर का वहां पर इस प्रकार किया गया॥
थी सम्मिलित जिसमें हुई जनता बड़े उत्साह से।
सब थे प्रभावित हो गये उपदेश अमृत प्रवाह से॥

आचार्य अभिनन्दन-पत्र

द्रुत विलम्बित (५९६)

मुनि जनो चित तेज विशिष्ट है ।
न करना कुछ भी अवशिष्ट है ॥
विजय हो जय हो मुनिराज की ।
अमल-कीर्ति सुजैन समाज की ॥

(५९७)

परम पावन सुन्दर गात्र है ।
तप दयादिक का शुभ पात्र है ॥
सरलता किसको न अभिष्ट है ।
गुण-कथा सुखदायक इष्ट है ॥

(५९८)

हृदय मे जिनके नहीं पाप है ।
विपुल गौरव युक्त प्रताप है ॥
सकल मङ्गल मूल सुभाल की ।
विजय हो मुनिनाथ कृपाल की ॥

(५९९)

मनुज पै भवदीय सुदृष्टि हो ।
वचन की जन पै रस वृष्टि हो ॥
विजय हो मुनि के पदपद्म की ।
सुमति दायक सद्गुण सद्म की ॥

(६००)

मदन का न जहां वश नेक है ।
हृदय मे जिनके सुविवेक है ॥
विजय हो मुनि नायक आपकी ।
जगत मध्य पराजय पाप की ॥

(६०१)

न जिसको पद का अभिमान है ।
अखिल शास्त्र समन्वित ज्ञान है ॥
मुनि दयामय की जय हो सदा ।
बढ़ सके जिससे सुख सम्पदा ॥

(६०२)

तप दयादिक के अवतार हो ।
धरम सिन्धु मुनीश अपार हो ॥
विजय हो इस धार्मिक क्रान्ति की ।
अमर दुर्लभ दैहिक शान्ति की ॥

(६०३)

मधुर भाषण तेज अमन्द की ।
विजय हो मुनि खूब सुचन्द की ॥
सुपथ दर्शक शोभन मूर्ति की ।
सुजन मानस के रस पूर्ति की ॥

(६०४)

विजय हो भवसागर नाव की ।
सुगुरु के भव भञ्ज पख की ॥
दुख निकन्दन वन्दन भक्त के ।
जयतु पूज्य अधार अशक्त के ॥

हरिगीतिका (६०५)

श्री संघ ने आचार्य का इस भांति अत्यादर किया ।
जिसके हृदय में पूज्य के उपदेश ने था घर किया ॥
उस पद महोत्सव का सुखद इतिहास था रोचक बना ।
जिसको लखो मुनिवर्य की शुभ भक्ति रस में था सना ॥

(६०६)

आचार्य पद उत्सव वहां सम्पूर्ण सारा हो गया।
सब ने यही समझा कि भाग्योदय हमारा हो गया॥
श्री पूज्य जी करके विहार तुरन्त रेवाड़ी गए।
जिसको मिला दर्शन वही जन परम आनन्दित भये॥

(६०७)

श्रीमान मुन्शीराम जी के ही नवीन मकान में।
उतरे वहा संलग्न थे भगवान के ही ध्यान में॥
बस एक दो ही घर सुथानक वासियो के थे जहां।
पर तीस चलिस भक्त नित व्याख्यान में आते वहां॥

(६०८)

करते प्रशंसा थे दिगम्बर और श्वेताम्बर सभी।
थे खूब उन पर मुग्ध बालक वृद्ध नारी नर सभी॥
दस रात रह करके वहां दिल्ली विहार किया तभी।
ऐसा किसी का भी प्रभाव सुना न देखा था कभी॥

(६०९)

दिल्ली निवासी भाइयो ने पूज्य का स्वागत किया।
मुनि भक्त होने का उन्होने खूब था परिचय दिया॥
आग्रह किया चौमास के खातिर उन्होने प्रेम से।
स्वीकार मुनिवर ने किया था साधुता के नेम से॥

(६१०)

उन्नीस सौ चौरानवे में देहली चमास था।
प्रत्येक व्यक्ति समाज का आचार्य जी का दास था॥
उपवास पैंतालिस किए मुनिवर्य्य छन्नालाल ने।
दर्शन किया जिनका वहां पर जन समूह विशाल ने॥

(६११)

मुनि दर्शनार्थ अनेक श्रावक आ गये थे ग्राम से,
परिचित वहां के लोग थे सब पूज्यजी के नाम से॥
बारहदरी के पास प्याऊ दूध की चलती रही।
दिल्ली नगर मे विविध भांति दया सदा पलती रही॥

(६१२)

जिस दिन तपस्या की वहां छियालीसवें दिन पूर्ति थी।
वह चमचमाती सी तपस्वी की अनोखी मूर्ति थी॥
उन्नीस सौ पञ्चानवे मे भी यहीं चौमास था।
इस वर्ष लेकिन एक आकर्षण वहां पर खास था॥

(६१३)

विख्यात वक्ता चोथमल्ल मुनीश दिल्ली आ गए।
व्याख्यान की सुन्दर छटा सौभाग्य से दिखला गए॥
होता रहा श्री पूज्य जी के साथ ही व्याख्यान था।
जिसमे इकट्ठा नित्य होता जन समूह महान था॥

(६१४)

निर्ग्रन्थ प्रवचन का मना आनन्द से सप्ताह था।
दिल्ली निवासी भाइयों मे खूब ही उत्साह था॥
मुनिवर्य्य छब्बालाल औ गुरुभक्त नेमीचन्द्र ने।
उपवास चौंतिस और सैतालिस किये सुख कन्द ने॥

(६१५)

आनन्द था लहरा रहा दोनो व्रतों की पूर्ति पै।
जनता निछावर थी तपस्वी की मनोहर मूर्त्ति पै॥
बारहदरी नीचे वहा फिर प्याउएं चलने लगी।
शरबत बनाने को सिता* की बोरियां गलने लगीं।

(६१६)

किस पर पड़ा आचार्य के वैराग्य का न प्रभाव था।
वह कौन था जिसका तपस्या में न ऊँचा भाव था॥
सब को विदित था पूज्यजी सब शास्त्र के ज्ञातार हैं॥
सब जानते थे ज्ञान के वे निष्कृपण दातार हैं॥

(६१७)

उस वर्ष दिल्ली मे उदेपुर भूप का आना हुआ।
आचार्य-दर्शन का उन्हें भी पुण्य फल पाना हुआ॥
उपदेश सुनकर पूज्य का अरु चौथमल्ल मुनीश का।
गदगद हुआ मानस परम मेवाड़ के मनुजेशका।

* शक्कर।

(६१८)

व्याख्यान लगभग एक घंटा तक सुना श्रीमान् ने।
उनके हृदय मे घर किया जिन देव के गुण गान ने ॥
जिनमत दिवाकर चौथमल्ल मुनीश के उपदेश से ।
उन्मुक्त जन मण्डल हुआ संसार के सब क्लेश से ॥

(६१६)

होगा अमर दिल्ली चतुर्मासा सदा इतिहास मे ।
जिसमें मिला शुभयोग जनता को स्वधर्म विकास में ॥
जय खूबचन्द्र मुनीश जय जय जैन धर्म विशाल की।
जय चौथमल्ल मुनीश जिनमत के परम प्रतिपाल की ॥

सप्तम प्रकरण

आचार्य क्रमावली

(६२०)

श्रीमान हुक्मीचन्द जी को पूज्य पहिले जानिये ।
ढूंढार से शुभ गांव 'टोड़ा' के निवासी मानिये ॥
थे ओसवाल प्रसिद्ध पावन गोत्र भी चपलोद था ।
उनके सरल व्यक्तित्व से बढ़ता हृदय में मोद था ॥

(६२१)

सम्वत अठारह सौ नवासी मार्गशीर्ष सुमास में ।
दीक्षित हुए श्री लालचन्द मुनीन्द्रवर के पास में ॥
इक्कीस वर्ष विता दिए करके दिनान्तर पारणा ।
उनके हृदय को स्पर्श भी करती न थी लोकेषणा ॥

(६२२)

केवल त्रयोदश वस्तुओं का आप को आगार था।
चौबीस घंटे आप का रहता पवित्र विचार था॥
सेंकी तली भी वस्तु का उपयोग थे करते नहीं।
मिष्टान्न घृत दुग्धादि से वे पेट थे भरते नहीं॥

(६२३)

वे द्विशत बार नमुत्थुणं का पाठ करते थे सदा।
बस एक चादर ओढ़ कर ही आप रहते सर्वदा॥
उन्नीस सौ सत्रह में मुनीश्वर स्वर्ग के वासी हुए।
यद्यपि सदा के वास्ते हैं आप अविनाशी हुए॥

(६२४)

श्री पूज्यवर शिवलाल जी हरते सुजन सन्ताप थे।
शुभ प्रान्त मालव मध्य 'धामणिया' निवासी आप थे॥
दीक्षा ग्रहण की आप ने मुनिराज नागानन्द से।
रतलाम मे उत्सव मनाया गया था आनन्द से॥

(६२५)

पैंतीस वर्षों तक निरन्तर शुद्ध एकान्तर किया।
आचार्य बनकर संघ का मुनिराज ने मन हर लिया॥
आजन्म नूतन शिष्य करने का इन्हें भी त्याग था।
ऊपर दिखाते थे नहीं मन मे भरा वैर ---॥

(६२६)

तीजे उदय सागर मुनीश्वर जोधपुर के आप थे।
परिशुद्ध मन से वीर का करते निरन्तर जाप थे॥
उन्नीस सौ अरु सात मे दीक्षित हुए श्रीमान थे।
खींवसरा शुभ गोत्र था खुद भी बड़े गुणवान थे॥

(६२७)

दीक्षा ग्रहण की आपने श्री पूज्य हुक्मीचन्द से।
मुनिवेश धारण कर लिया उत्साह अरु आनन्द से॥
श्री गोश्त मोहम्मद रियासत जावरा के भूप थे।
परताप-गढ़ शासक उदयसिंह राजपूत अनूप थे॥

(६२८)

उपदेश देकर के उन्हें मुनीराज ने हर्षित किया।
दोनो नृपो का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया॥
उन्नीस सौ अट्ठाईस मे मुनिराज थे पाली गये।
थे एक सम्वेगी मुनी शास्त्रार्थ में खाली गये॥

(६२९)

निश्चय हुआ था आज जो शास्त्रार्थ मे जय पायगा।
बस वह पराजित पक्ष का इक शिष्य लेकर जायगा॥
विजयी हुए मुनिराज, सम्वेगी पराजित हो गये।
श्रीकृष्ण सागर नाम अपने शिष्य को वे खो गये॥

(६३०)

दीक्षित किया था किशन सागर को पुनः मुनिराज ने।
आनन्द का अनुभव किया स्थानीय जैन समाज ने॥
उन्नीस सौ चौपन में मुनीश्वर स्वर्ग के वासी हुए।
यद्यपि हमारी दृष्टि में आकल्प अविनाशी हुए॥

(६३१)

पाली निवासी चौथमल्ल जी पूज्य चौथे आप थे।
हरते सदा जो भक्त जन के हृदय का सन्ताप थे॥
श्री पूज्य हुकमीचन्द से दीक्षा ग्रहण की चाव से।
उन्नीस सौ नव में लिया मुनिवेश धार्मिक भाव से

(६३२)

थे पाच सौ लगभग उन्हें कण्ठस्थ अनुपम थोकड़े।
अधिकाश सारे शास्त्र भी कण्ठस्थ थे छोटे बड़े॥
आचार्य थे पर आपको निज शिष्य का भी लाभ था।
सम्पूर्ण थानक वासियों का आप में अनुराग था॥

(६३३)

उन्नीस सात पचास में परलोक वासी [illegible]।
रतलाम में जिन [illegible] शुभ बीज[illegible] बो गये॥
उनको नहीं यह जैन [illegible] सकती है।
उनका सुख[illegible] [illegible]मा है दिन [illegible]॥

(६३४)

श्री पूज्यवर श्री लाल जी मुनि पान्चवे आचार्य थे।
थे टोंक के वासी परम गुणवान थे वे आर्य थे॥
थे ओसवाल महान साजन बम्ब गोत्रोत्पन्न थे।
प्रतिभा प्रखर थी आपकी सब भाति सुख सम्पन्न थे॥

(६३५)

दीक्षा ग्रहण की आपने श्री चोथमल मुनिराज से।
तज के स्वपत्नी को तथा होकर विरक्त समाज से॥
प्रति मास तेले की तपस्या आप करते थे सदा।
भूले हुओं को पूज्य थे प्रति बोध देते सर्वदा॥

(६३६)

उन्नीस सतहत्तर, हुआ था स्वर्गवास मुनीश का।
वह गॉव जयतारण हुआ जिमि स्वर्ग हो इस देश का॥
जनता उमड़ कर आ गई मानो समुद्र विशाल था।
मुनिराज के जयकार से डरने लगा तब काल था॥

(६३७)

श्री पूज्य मन्नालाल जी का जन्म था रतलाम का।
था गोत्र नागोरी न था अभिमान उनमें नाम का॥
श्री उदय सागर के निकट दीक्षा ग्रहण की आपने।
यह बात सुन करके सभी पापी लगे थे कापने॥

(६३८)

उन्नीस सौ अड़तीस का वह वर्ष अतिशय धन्य था।
उसके समान न वर्ष दूजा इस जगत मे अन्य था॥
पर्याप्त शास्त्रों का उन्हें टीका समन्वित ज्ञान था।
परमार्थता के साथ अपने संघ का भी ध्यान था॥

(६३९)

मुनिराज के शुभ यत्न से अजमेर सम्मेलन हुआ।
जिसमें अनेको सघ के श्री पूज्य का दर्शन हुआ॥
श्री पूज्य ने था साम्प्रदायिक वैमनस्य घटा दिया।
जो आवरण था मोह का उसको तुरन्त हटा दिया॥

(६४०)

ब्यावर नगर में पूज्य जी भी स्वर्गवासी हो गये।
उन्नीस सौ नव्वे मे सदा के वास्ते वे सो गये॥
यद्यपि नहीं इस वक्त वे मुनिवर हमारे पास हैं।
पर भूल सकते हैं नहीं जो लोग उनके दास हैं॥

(६४१)

श्री खूबचन्द्र चरित्र नायक का सुटोक निवास है।
निम्बाहड़ा शुभ ग्राम उनकी जन्म भूमि खास है॥
है गोत्र जोतावत मुनीश्वर आप हैं साजन बड़े।
हैं वृद्ध तो भी नियम पालन में बने रहते कड़े॥

(६४२)

दीक्षित हुए उन्नीस सौ बावन मे स्वपत्नी त्याग के।
श्री नन्दलाल मुनीश के ढिग आ गए थे भाग के॥
निर्ग्रन्थ है वे बन गए मिथ्या जगत को जान के।
इस आत्मा को नित्य अजरामर अनश्वर मान के॥

(६४३)

है मन्दसोर निवास श्रीयुत पूज्य युवाचार्य का।
श्री सघ के नेता भविष्यत् के कुशल मुनिवर्य का॥
है पोरवाड़ पवित्र बीसा वश इन महाराज का।
जिसके करो मे है सुरक्षित भाग्य जैन समाज का॥

(६४४)

दीक्षा ग्रहण की आपने श्री चोथमल मुनिराज से।
उन्नीस सौ अरसठ मे मिले है आप साधु समाज से॥
अधिकाश शास्त्रो का इन्हे साद्यन्त पूरा ज्ञान है।
इस हेतु जैन समाज मे इनका बहुत सम्मान है॥

चित्र केवल परिचय के लिये है —

स्व० पूज्य श्री खूबचन्द जी महाराज के जलूस का

सार

हरिपद

(६४५)

सोचा पूज्य प्रवर ने मेरी है अब वृद्ध अवस्था।
सम्प्रदाय की हर प्रकार करदूं परिपुष्ट व्यवस्था॥
इसी हेतु निज मुनियो का सम्मेलन करना चाहा।
उनके हृदयो मे कर्तव्य भाव शुभ भरना चाहा॥

(६४६)

इधर सघ वालो का भी आग्रह था उनसे भारी।
कृपा करो गुरुदेव हमे भी दर्शन हो सुखकारी॥
मारवाड़ मेवाड़ मालवा को भी पावन करिए।
दर्शन के प्यासे चातक हैं वेगि पिपासा [illegible]

सार

हरिपद

(६४५)

सोचा पूज्य प्रवर ने मेरी है अब वृद्ध अवस्था।
सम्प्रदाय की हर प्रकार करदूं परिपुष्ट व्यवस्था॥
इसी हेतु निज मुनियो का सम्मेलन करना चाहा।
उनके हृदयो मे कर्तव्य भाव शुभ भरना चाहा॥

(६४६)

इधर सघ वालो का भी आग्रह था उनसे भारी।
कृपा करो गुरुदेव हमे भी दर्शन हो सुखकारी॥
मारवाड़ मेवाड़ मालवा को भी पावन करिए।
दर्शन के प्यासे चातक हैं वेगि पिपासा हरिए॥

(६४७)

क्या दिल्ली ही कृपा दृष्टि की है केवल अधिकारी।
कब आवेगी हम लोगों की गुरुवर फिर से वारी॥
दर्शन की आशा से हमने इतने दिवस बिताए।
वचनामृत का पान नहीं वर्षों से करने पाए॥

(६४८)

आग्रह तथा प्रेम से पूरित विनती से मुनिवर ने।
सोचा एक बार इन क्षेत्रो मे फिर चलूं विचरने॥
दिल्ली वालो ने जब ऐसा समाचार सुन पाया।
उनके मानस मध्य भयङ्कर शोक तिमिर था छाया॥

(६४६)

बाल वृद्ध नर नार तुरत बोले मुनिवर से आके।
हम दिल्ली वासी सनाथ थे हुए आपको पाके॥
किन्तु सुना है आप हमे तज कर हैं जाने वाले।
मारवाड़ मेवाड़ मालवा को सरसाने वाले॥

(६५०)

ऐसा क्या अपराध गुरो हम भक्तो से बन आया।
अथवा दिल्ली का जलवायु नहीं आप को भाया॥
कर देंगे सत्याग्रह पर हर्गिज नहि जाने देंगे।
गुरु सेवा का लाभ दूसरो को नहिं पाने देंगे॥

(६५१)

ही भूल सकता हू दिल्ली को पूज्य श्री बोले।
किन्तु रोगियों की न डाक्टर बिन कौन टटोले॥
हिंसा झूठ तथा चोरी का रोग लगा है भारी।
सत्य दया अस्तेय अहिंसा औषध है गुणकारी॥

(६५२)

पिला पिला कर स्वस्थ बनाने की इच्छा है मेरी।
इसी हेतु विनती भक्तों की आई है बहुतेरी॥
चलने की यदि शक्ति हुई मुझ में तब तो जाऊँगा।
महरौली गुड़गांवा से अन्यथा लौट आऊँगा॥

(६५३)

दिल्ली से विहार कर मुनिवर न्यू दिल्ली जब आए।
दर्शन करने को नर नारी उत्सुक होकर धाए॥
भोगल चिरागदिल्ली से महरौली से गुड़गांवा।
गुरुवर के दर्शन को बोला भक्त जनों ने धावा॥

(६५४)

तांगे बग्गी और साइकिलो की लग गई कतारें।
भों भो करती हुई चली आती थी मोटर कारें॥
वार वार विनती करते थे पूज्य न आगे जावो।
बहुत हो चुकी बात न ज्यादा अब हमको तरसावो॥

(६५५)

गुड़गांवा तक बड़े कष्ट से गुरुवर आप पधारे।
अब आगे जाने मे कम्पित होते हृदय हमारे॥
इसी तरह हर रोज अनेको भाई बहिनें आतीं।
पूज्य श्री के दर्शन से खुद को कृतकृत्य बनातीं॥

(६५६)

बोले दिल्ली साधु जनो को है आते साता कारी।
धर्म रक्त मुनि भक्त सभी हैं दिल्ली के नर नारी॥
यथाशक्ति जनता पर धार्मिक उज्ज्वल रङ्ग चढ़ाना।
है मेरा कर्तव्य मुक्ति के पथ पर उन्हे बढ़ाना॥

(६५७)

इसी हेतु दिल्ली को तज कर मै जाता हू आगे।
मारवाड़ मेवाड मालवा से भी हिंसा भागे॥
सत्य दया संयम आदिक को भूल कभी मत जाना।
जैन धर्म का जगती तल पर नित सम्मान बढ़ाना॥

(६५८)

इसी वर्ष गुड़गावा मे सुख मुनि जी का चौमासा।
हुआ प्रथम ही बार यहा पर ठाठ रहा था खासा॥
उपदेशामृत बरसा कर जनता का हिय सरसाया।
वैर भाव तजवा कर मानव को सत्पथ दरसाया॥

(६५६)

दो बाई के सिवा नहीं था कोई स्थानक वासी।

मुँह पत्ती बंधवा दी कइयो के सुख मुनि सुख रासी॥

वीस पच्चीस दिगम्बर भाई बहिनो को समझा के।

स्थानक वासी बना लिया मुनि ने सम्यक्त्व सिखा के॥

(६६०)

श्वेताम्बर स्थानक वासी मुनि भक्त बने विज्ञानी।

फैल गई थी वायु वेग से यह सर्वत्र कहानी॥

सुख मुनि के प्रभाव ने जनता मे उत्साह भरा था।

गुडगांवा का वह धार्मिक उद्यान सदैव हरा था॥

(६६१)

छब्बालाल तपस्वी ने उपवास किया हितकारी।

चवालिस दिन का जनता मे जोश छा गया भारी॥

तपःपूर्ति के रोज वहा पर जन सागर उमड़ा था।

चार व पांच हजार मानवो का दल टूट पड़ा था॥

(६६२)

गुड़गावा से पूज्य प्रवर अलवर की ओर पधारे।

था शरीर कमजोर मगर थे अटल प्रतिज्ञा वारे॥

सर्दी का मौसम था रस्ता भो अतीव दुखदाई।

इसी हेतु मुनीवर के पैरो मे भी सूजन आई॥

(६६३)

गांव सोहना में कुछ दिन तक रुकना उन्हें पड़ा था।
आगे जाने मे होता अब उनको कष्ट बड़ा था॥
औषधादि उपचारो से आराम हुआ मुनिवर को।
चले वहां से फिर आगे मुनिराज सदल अलवर को॥

(६६४)

अलवर वालों ने मुनिवर का स्वागत किया अनोखा।
पापो तथा कषायों का सागर छन भर में सोखा॥
दिल्ली गुड़गांवा वाले भाई भी अलवर आए।
दर्शन करके पूज्य प्रवर का सब ही अति हरषाए॥

(६६५)

दस बारह दिन तक विराज कर मुनिवर बढ़े अगारी।
बांदी कुई पहुँचने पर सूजन हो आई भारी॥
पथ में आहारादिक का संयोग न ठीक वहां था।
आगे जाना था इससे मुनिवर ने कष्ट सहा था॥

(६६६)

औषधादि उपचारो से सूजन में फर्क पड़ा था।
तैल आदि की मालिश से मिलता आराम बड़ा था॥
कर विहार मुनिराज वहां से जयपुर नगर पधारे।
हर्ष विभोर हुए उनको पाकर नारी नर सारे॥

(६७१)

त्यागा मदिरापान मांस भक्षण हिंसा भी त्यागी।
जिण गर मोची मनुजो की तगदीर वहां पर जागी।
कर ऐसा उपकार मुनीश्वर अजरामर पुर आए।
अजमेरी जनता पर अद्भुत चिन्ह हर्ष के छाए।

(६७२)

सम्मेलन हो ब्यावर में आग्रह था यही सभी का।
यह प्रयत्न ब्यावर वालों का होता रहा कभी का।
विनती मान पूज्यवर उनकी नया शहर को आए।
थकते थे न वहां के नारी नर मुनि के गुण गाए॥

(६७३)

मारवाड़ से जैनदिवाकर शिष्यो सहित पधारे।
युवाचार्य गणिवर्य आदि मुनिवर थे संग में सारे॥
उधर मालवा से मुनिवर श्री उपाध्याय जी आए।
भक्तिभाव के सुन्दर घन थे उर अनन्त में छाए॥

(६७४)

एक समय एक ही दिवस जब हुआ प्रवेश नगर में।
इक नूतन उत्साह अलौकिक छाया नया शहर में॥
बाहर ग्रामों से शतशः नर नार दरस को आये।
दर्शन कर मुनिराजों का निज लोचन सफल बनाये॥

(६७५)

ना अनुपम दृश्य सत्ययुग का था याद दिलाता।
जिधर देखिये नर समूह था चला उधर से आता॥
यावर मे इस समय विराजित थे शत सन्त सती जी।
आमन्त्रण पत्रिका सब ने ग्रामो मे थी भेजी॥

(६७६)

पञ्च सहस्राधिक जनता बाहिर ग्रामों से आई।
ब्यावर के तो घर घर में शुचि धार्मिक थी छाई॥
सम्प्रदाय के अग्रगण्य श्री कालूराम कोठारी।
थे प्रसन्न यह दृश्य देख अपने घर पर मनहारी॥

मनहर छन्द (६७७)

तालेड़ा स्वरूपचन्द फूले समाते थे नहीं।
सूराना श्री देवराज प्रसन्न थे मन में॥
बाबेल पूनमचन्द्र, रोड़मल चांदमल।
गोलेच्छा चन्दन मल के खुशी थी तन में॥
नाहर अभयराज तथा श्री मिसरीलाल।
डटे रहते थे सदा कुन्दन भवन मे॥
रायली कम्पाउन्ड में होता था व्याख्यान नित।
घटा घन घोर छाई धर्म के गगन में॥

(६७८)

पूज्य महाराज जैन दिवाकर मुनिराज ।
उपदेश देके जनता को हरषाते थे ॥
धर्म के पियासे भक्तवृन्द पै अनवरत ।
मोहनीय जिनवाणी सुधा बरसाते थे ॥
उपदेश श्रवणार्थ तज के सकल काज ।
दौड़ कर जैन जैनेतर चले आते थे ॥
रायली कम्पाउन्ड के विशाल मैदान मे भी ।
सट सट बैठने पै लोग न अमाते थे ॥

(६७९)

पूज्य मुनि खूबचन्द्र जैन दिवाकर मुनि ।
चौथमल महराज का सुयश गाऊँगा ॥
तपस्वी हजारीमल पण्डित कस्तूर चन्द्र ।
स्थाविर कन्हैयालाल को सिर नमाऊंगा ॥
गच्छ के सलाहकार केशरी मुनीश तथा ।
सुखलाल मुनि की भी बलि बलि जाऊँगा ॥
हर्ष चन्द्र मुनि युवाचार्य श्री छगन लाल ।
नाम नाथूलाल महाराज का सुनाऊँगा ॥

(६८०)

गणिवर्य प्यारचन्द्र महाराज मयाचन्द्र ।
मेवाड़ी मुनीश §भैरूलाल जी कहाते हैं ॥
उपाध्याय शेषमल भैरूलाल कोसी थल ।
बुद्धिचन्द्र उपदेशामृत बरसात हैं ॥
संस्कृतज्ञ सूर्यमल शोभालाल महाराज ।
छब्बालाल तप का प्रभाव दिखलाते हैं ॥
छोटे नाथूलाल जी व्याख्यान मे निपुण अरू ।
रामलाल महाराज सुधा सरसाते हैं ॥

(६८१)

मुनीश सन्तोष चन्द्र सेवा भाव मे प्रवीण ।
उपदेश मे मगन लाल जी कुशल हैं ॥
व्याख्यानी प्रतापमल हीरालाल जी प्रबल ।
चम्पालाल जी स्वकीय प्रण पै अचल हैं ॥
केवल मुनीश विजेराज महाराज अरू ।
मोहन सोहन मुनि के हृदय विमल हैं ॥
व्याख्यानी हुकुम चन्द्र महराज इन्द्र मल ।
मनोहर लाल मुनिराज भी अकल हैं ॥

§ उक्त मुनि इस समय पूज्य श्री की आज्ञा में हैं ।

(६८२)

मुनीश नानक राम प्रभु भजनों मे मस्त ।
व्यस्त सेवा मे कल्याणमल मुनिराज हैं ॥
तपोनिष्ठ नेमीचन्द उपवास में विशिष्ट ।
छोटे हीरालाल जी वरिष्ठ महाराज हैं ॥
ज्ञान अभिलाषी मतिमान हैं श्री लाभचन्द्र ।
सागर मुनीश तप ध्यान के जहाज हैं ॥
सेवा भावी पूर्ण चन्द्र दीपचन्द कविराज ।
उपदेश दक्ष मिश्री लाल महाराज हैं ॥

(६८३)

व्याख्यानी सुसन्त वर्धमान जी को जान लेहु ।
सेवा मे निपुण, मुनिवर नग राज हैं ॥
विद्यार्थी बसन्ती लाल पण्डित, रोशन लाल ।
मन्नालाल मुनि सेवा भावियो मे ताज हैं ॥
सेवा भावी छोटे चम्पा लाल महाराज जो हैं ।
चन्दन मुनीश तो बड़े ही कला बाज हैं ॥
सेवा भावी प्रेम चन्द ऐसे लघु इन्द्र मल ।
बसन्ती मुनीश भी व्याख्यानी महाराज हैं ॥

(६८४)

रत्नलाल मुनि को भी सेवा में प्रवीण अरु ।
विमल मुनीश को इन्हीं के सम जानिए ॥
मेघराज मूलचन्द मुनि श्री मंगलचन्द ।
छोटे सूर्यमलजी को भी न कम मानिए ॥
विद्यार्थी हैं जेठमल छोटे बृद्धि चन्द जी औ ।
सागर मुनीश की दयालुता बखानिये ॥
खुशहाल चन्द बलदेव सिंह रामचन्द ।
छोटे हर्षचन्द मुनि को भी पहिचानिये ॥

दोहा (६८५)

छोगालाल विशिष्ट मति, विद्यार्थी धनराज ।
माणक चन्द सुसन्त अरु, बाघमल्ल मुनिराज ॥

(६८६)

उनहत्तर ये सन्त हैं सम्प्रदाय मे आज ।
जिनसे शोभित हो रही है सम्पूर्ण समाज ॥

पूज्य प्रशंसाष्टक

मन हरण (६८७)

जिनका सुयश चहुँ ओर छा रहा और।
जिनकी कृपा का ऋणी सकल समाज है॥
छल औ कपट से सुदूर ही रहत हैं जो।
शान्त चित्त शान्ति प्रिय जिनका मिजाज है॥
जिनकी सरलता को सभी हैं सराहते औ।
जिन पै अखिल जैन जनता को नाज है॥
तन मन वचन के योग से अनेक बार।
खूब वन्दनीय खूबचन्द्र मुनि राज हैं॥

(६८८)

पूज्य का स्वभाव है प्रशंसनीय दयावान।
आप का गम्भीरतम अद्वितीय ज्ञान है॥
छू नहीं सका कदापि उनको विनिन्द्य अति।
मति मोहनीय नाम मात्र अभिमान है॥
परमात्म चिन्तन औ साथ ही स्वचिन्तन के।
जिनको स्वकीय सम्प्रदाय का भी ध्यान है॥
करुणा निधान गुणवान मति मान मुनि।
पूज्य खूबचन्द्र पूर्ण चन्द्र के समान हैं॥

(६८९)

घर बार छोड़ सर्व सम्पदा से मुँह मोड़।
नाता जोड़ लिया जिन्होंने अखण्ड योग से॥
अचल रहे जो हिमाचल के समान कभी।
विचलित हुए नहीं स्वजन वियोग से॥
सह के स्वदेह पर शीत घाम और ताप।
दूर हो गए थे जागतिक सुख भोग से॥
गुरु मन्त्र रूपी शुद्ध औषधि का पान कर।
मुक्त हो गए थे एक साथ सब रोग से

पूज्य प्रशंसाष्टक

मन हरण (६८७)

जिनका सुयश चहुं ओर छा रहा और।
जिनकी कृपा का ऋणी सकल समाज है॥
छल औ कपट से सुदूर ही रहत हैं जो।
शान्त चित्त शान्ति प्रिय जिनका मिजाज है॥
जिनकी सरलता को सभी हैं सराहते औ।
जिन पै अखिल जैन जनता को नाज है॥
तन मन वचन के योग मे अनेक वार।
खूब वन्दनीय खूबचन्द्र मुनि राज है॥

(६६२)

पूज्य हैं अनेक पर आप सा विवेक वान।
शील वान इस दुनियाँ मे नहीं और है॥
देखी नहीं इमि शुचि शान्ति सरलता और।
शास्त्रीय ज्ञान इस भाति किसी ठौर है॥
उपमा हिरानी आप ही हैं आप के समान।
मिलता न और सब ओर किया गौर है॥
पूज्य खूबचन्द्र महाराज विना शक आप।
जग के तमाम गुरुओ के सिर मौर हैं॥

(६६३)

दरशन कर लिया एक बार तो अवश्य।
चरणो मे आता वह नर दूजी बार है॥
उपदेश का आनन्द मिल गया जिसे वह।
मानता है पूज्य सुर गुरु अवतार है॥
कान्ति मान मुख मुनिराज का विलोक कर।
सुख दर्शनार्थियो को मिलता अपार है॥
जिसको कृपा की दृष्टि से विलोकते हैं बस।
जान लीजिए कि उसका तो बेड़ा पार

(६६०)

स्वाद पे विजय प्राप्त कर लिया है महान।
जिनका किसी पे द्वेष है न नेक राग है॥
रात दिन प्रभु ध्यान ही में रहते निमग्न।
परम प्रशंसनीय अनुपम त्याग है॥
सोते जागते व उठते व बैठते भी जिन्हें।
एक मात्र प्रभु चरणों में अनुराग है॥
परम पवित्र अति उज्जवल विशुद्ध अति।
पूज्य खूबचन्द्र जी का चरित्र अदाग है॥

(६६१)

सौम्य मूर्ति रस पूर्ति वचन सुधा सरिस।
उपदेश से सुधर्म तत्व समझाते हैं॥
मूर्ख जन मानसों को कविता सुधा से सींच
ज्ञान भर हिय समुदाय सरमाते हैं॥
धर्म का प्रकाश भव भोग से विरक्त खास।
सीख भीख देके याचकों को हरषाते हैं॥
ऐसे पूज्य खूबचन्द मुनिराज के महान।
गुण प्रिय शिष्य और मुनि गण गाते हैं॥

(६६२)

पूज्य हैं अनेक पर आप सा विवेक वान।
शील वान इस दुनियाँ मे नहीं और है॥
देखी नहीं इमि शुचि शान्ति सरलता और।
शास्त्रीय ज्ञान इस भाति किसी ठौर है॥
उपमा हिरानी आप ही हैं आप के समान।
मिलता न और सब ओर किया गौर है॥
पूज्य खूबचन्द्र महाराज बिना शक आप।
जग के तमाम गुरुओ के सिर मौर हैं॥

(६६३)

दरशन कर लिया एक बार तो अवश्य।
चरणों मे आता वह नर दूजी बार है॥
उपदेश का आनन्द मिल गया जिसे वह।
मानता है पूज्य सुर गुरु अवतार है॥
कान्ति मान मुख मुनिराज का विलोक कर।
सुख दर्शनार्थियो को मिलता अपार है॥
जिसको कृपा की दृष्टि से विलोकते हैं बस।
जान लीजिए कि उसका तो बेड़ा पार है॥

(६६४)

शिष्य मुनि वृन्द के समक्ष करुणा निधान।
करते मिलेगे बात चीत सदा ज्ञान की
मानते नहीं है कोई बात किसी के विरुद्ध।
बिन परीक्षा किए व सुने बिन कान की।
मन से तुरत हॅस के निकलते हैं जब।
सुनते है कभी कोई बात अपमान की।
प्रभु ध्यान मे सदैव रहते निमग्न उन्हें।
चिन्ता न सताती स्वप्न मे भी खान पान की

(६६५)

विमल चरित्र मुनिराज का पवित्र यह।
पढ़ कर नर से नरेश बन जायेंगे।
आन्तरिक भाव से जो आदरेंगे इसे नृप।
भूमि पति अवश्य सुरेश बन जायेंगे।
एक बार प्रेम मे जो पाठ इसका करेंगे।
मनोरथ सफल अवश्य कर पायेंगे।
भव बन्धनों मे मुक्त अमरत्व से नियुक्त।
अद्वितीय शाश्वत अमर पद पायेंगे।

हरिगीतिका

(६६६)
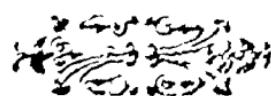
उन्नीस सौ अट्ठानवे चौमास ब्यावर में किया।
श्री संघ के हार्दिक विनय को मान मुनिवर ने लिया॥
मुनिवर दिवाकर ने यहीं इस वर्ष चौमासा किया।
जो थे निराश सजीव उनमें सञ्चरित आशा किया॥

(६६७)

थी धर्म वृद्धि हुई यहां उस साल अनुपम रीति से।
मुनि दर्शनार्थ सुभव्यजन आते रहे अति प्रीति से॥
मुनिराज नेमीचन्द्र जी ने गर्म जल आधार से।
उपवास पैंतालिस किये उन्मुक्त हो सब भार से॥

(६६४)

शिष्य मुनि वृन्द के समक्ष करुणा निधान।
करते मिलेंगे बात चीत सदा ज्ञान र्व
मानते नहीं है कोई बात किसी के विरुद्ध।
बिन परीक्षा किए व सुने बिन कान
मन से तुरत हँस के निकलते हैं जब।
सुनते हैं कभी कोई बात अपमान
प्रभु ध्यान में सदैव रहते निमग्न उन्हें।
चिन्ता न सताती स्वप्न मे भी खान पा

(६६५)

विमल चरित्र मुनिराज का पवित्र यह।
पढ़ कर नर से नरेश बन ज
आन्तरिक भाव से जो आदरेंगे इसे नृप।
भूमि पति अवश्य सुरेश बन ज
एक बार प्रेम से जो पाठ इसका करेंगे।
मनोरथ सफल अवश्य कर ए
भव वन्धनो से मुक्त अमरत्व से नियुक्त।
अद्वितीय शाश्वत अमर पद प

हरिगीतिका

(७०२)

मुनिवर सुखलाल जी की शुभ प्रेरणा से,
पूज्य का चरित्र पद्यमय कर पाया है।
शान्त मूर्ति मुनिराज पूज्य खूबचन्द्र जी का,
निज शक्ति अनुसार गुण गण गाया है॥

(७०३)

परिचय सविशेप था नहीं इसी निमित्त,
लिखा वही सुख मुनि जी ने जो सुनाया है।
आशा है सुजन आदर देंगे इसको अवष्य,
दूध नारायण कवि को जो खूब भाया है॥

(७०४)

दो सहस्र अरु एक का सम्वत परम पवित्र।
विजयादशमी को हुआ पूर्ण सुपूज्य चरित्र॥

पूज्य श्री के अन्त समय तथा उसके बाद के संस्मरण

दोहा

(७०५)

वृद्ध हो गये पूज्यवर, खूबचन्द्र महाराज।
थी भविष्य के वास्ते, चिन्तित जैन समाज॥

(७०६)

सूजन आई देह मे, था चालू उपचार।
कमजोरी बढ़ती गयी, दृढ़ थे किन्तु विचार॥

(७०७)

सहन शील थे इसलिये, थी न तनिक परवाह।
ज्ञान ध्यान तप त्याग की, थी बस केवल चाह॥

(७०८)

दो हजार दो मे हुये, पूज्य प्राप्त निर्वाण।
करके अपना जगत का, शान्ति पूर्ण कल्याण॥

(७०९)

शुक्ल तृतीया चैत्र को, चढ़ा अचानक ताप।
बोले यह है मनुज का, पूर्व जन्म कृत पाप॥

(७१०)

दिन भर ज्वर का वेग था, की न तनिक परवाह।
किन्तु दस बजे रात को, बढ़ा अधिक ज्वर दाह॥

(७११)

बेचैनी बढ़ने लगी, किये त्याग पचखान।
संथारा भी कर लिया, था वह त्याग महान॥

(७१२)

मुनिवर हीरालाल जी, रहे पूज्य के पास।
परिचर्या करते रहे, मन था किन्तु उदास॥

(७१३)

चार बजे आये वहा, डाक्टर श्री जयदेव।
नाड़ी बिल्कुल ठीक है, बोल उठे स्वयमेव॥

(७१४)

किन्तु श्वास की गति नहीं, ठीक कर रही काम।
बहुत शीघ्र ही पूज्य जी, पहुँचेंगे सुरधाम॥

(७१५)

करी सूचना संघ ने, दिये अनेकों तार।
लगी वहा कुछ देर मे, तारो की भरमार॥

(७१६)

अंगुलियों पर हर समय, जपते थे नवकार।
प्रति क्रमण आदिक क्रिया, की तब विविध प्रकार॥

(७१७)

नमोत्थुणं के पाठ को, श्रवण किया दे ध्यान।
दशवैं कालिक सूत्र का, सुना पाठ सुमहान॥

(७१८)

लगभग प्रातः छै बजे, प्रतिक्रमण के बीच।
शीतल स्वेद शुरू हुये, लिये नेत्र तब मीच॥

(७१९)

पूज्य सिधारे स्वर्ग को, नश्वर त्याग शरीर।
बिजली सी फैली खबर, श्रावक हुये अधीर॥

(७२०)

दर्शनार्थ आने लगे, लोग भक्ति में चूर।
मसा हमारे पूज्य को, काल बड़ा है क्रूर॥

(७२१)

तैयारी की सब ने, साजा रजत विमान।
किया सशोभित पज्य का, उस पर देह महान॥

(७२२)

दो हजार की रेजगी, तथा मनों बादाम।
की उछाल के वास्ते, तत्पर सब निष्काम॥

(७२३)

अनायास आया वहां, हाथी एक विचित्र।
नगर सलेमाबाद से, यह घटना थी चित्र॥

(७२४)

हाथी पर से की गई, परम पवित्र उछाल।
आया था भग कर वहा, वह हाथी तत्काल।

(७२५)

उस जुलूस का दृश्य भी, आकर्षक था खूब।
ब्यावर के श्री संघ का, था महान मन्सूब॥

(७२६)

ब्यावर का उस रोज था, बन्द रहा बाजार।
सभी वर्ग के लोग थे, शामिल कई हजार॥

(७२७)

जय नारो से गूंजता, था उस दिन आकाश।
फैल रहा था पूज्य का, चारों ओर प्रकाश॥

(७२८)

पूज्य जवाहिर लाल की, सम्प्रदाय के सन्त।
आये कुन्दन भवन मे, छाया हर्ष अनन्त॥

(७२९)

मुनी हजारी मल्ल जी, हैं जो मरु धर सन्त।
प्रकटाई समवेदना, छाया शोक अनन्त॥

(७३०)

वहा एक ही पाट पर, बैठे सब मुनिराज।
वह वर्षो की भिन्नता, हटी अचानक आज॥

(७३१)

जाहिर शोक सभा हुई, पास हुये प्रस्ताव।
यादगार के वास्ते, हुये अनेक सुझाव॥

(७३२)

आये चारो ओर से, यहा अनेको तार।
शोकातुर था हो उठा, सकल पूज्य परिवार॥

(७३३)

पंजाब केसरी पूज्य श्री काशीराम महाराज
आनन्द ऋषी जी पूज्यवर, वे भी हुए नाराज॥

कवित्त मनहर (७३४)

जावरा से तार आया, रतलाम शोक छाया।
मन्दसोर घबड़ाया पूज्य के निधन से॥
दिल्ली सघ दङ्ग अजमेर बदरङ्ग हुआ,
शोकातुर हो उठा मेवाड उसी छन से।
जय जय जय पूज्य खूबचन्द महाराज।
जय जय नाद उठा धरा व गगन से॥
चन्दन चिता पै मृत देह को चढ़ाया जब।
झलक रहा था तेज पज्य के वदन से॥

(७३५)

बोटाद चित्तौडगढ़ जम्बू औ सियालकोट।
रामपुरा कानपुर बम्बई आनन्द मे॥
तार आये धार से सिहोर और गोडल मे।
अम्बाला सीटी के लोग पड गये मन्द से॥
जिन जिन मुनियो को लगी है खबर सब।
रखे उस रोज उपदेश प्राय बन्द
वेदना प्रगट करते थे कहते थे सब।
मिलना कठिन अब पूज्य गुरु

(७३६)

पूज्यवर पण्डित गणेशलाल महाराज।
हुये थे चकित इस शोक समाचार से॥
माला दिवाकर जी के हाथ से सरक पड़ी।
एक दम संघ के भविष्य के विचार से॥
काम चलेगा बताओ किस भाति आगे अब।
पूछने लगे वे निज शिष्य गणी प्यार से॥
धैर्य रखिये न घबड़ाइयेगा मुनि वृन्द।
ब्यावर भिजवाया समाचार यह तार से॥

(७३७)

पाली व्याट कोपर उदयपुर जयपुर।
बीकानेर राजकोट आगरा गोंडल से॥
जोधपुर लुधियाना हांसी व सुजालपुर।
बल्दूरा पलाना भीलवाड़ा व मांडल से॥
भाट खेड़ी नाथद्वारा सोजत किशन गढ़।
नीमाज मंडावरी इन्दौर पलवल से॥
तार आये पूज्य के गुणानुवाद गाने वाले।
आने लगे मुनिराज कई दल बल से॥

(७३८)

वैगूं बड़ा नागपुर कंजाडी निम्बाहेड़ा ।
भोपाल 'उज्जैन छाया शोक जो अपार था ॥
नीमच मदन गंज बड़ी सादड़ी के लोग ।
दुखी थे अतीव दुख का न नेक पार था ॥
सचमुच पूज्य खूबचन्द्र थे गुणों की खान ।
उनका हृदय तो प्रेम का ही पारावार था ॥
पूज्य थे परन्तु निज आश्रित जनो के संग ।
उनका अजीब मनोहर व्यवहार था ॥

शोकोच्छ्वास (७३९)

ओ हमारे परम पूज्य प्यारे ।
छोड़ हमको कहां तुम सिधारे ॥
धर्म की यह अमोलक घड़ी है ।
मौत आगे हमारे खड़ी है ॥
टूट आफत अचानक पड़ी है ।
सुख सुनी आज किसको

(७४०)

ज्ञान की ज्योति तुमने जगाई।
दे शरण थी कुमति भी भगाई॥
शक्ति मैंने तुम्हीं से है पाई।
डूबती नाव तुमने बचाई॥
शोक की घन घटा आज छाई।
कौन भव पार मुझ को उतारे॥

(७४१)

शोक आतुर है परिवार सारा।
वश नहीं चल सका कुछ हमारा॥
हो गया धर्म का अस्त तारा।
काल आया बजा कर नगारा॥
ध्यान था कुछ नहीं क्या हमारा।
पूज्यवर किस जगह हो पधारे॥

(७४२)

स्वर्ग मे देव गण हँस रहे हैं।
हम यहा शोक मे फंस रहे हैं॥
कष्ट तुमने अनेको सहे हैं।
वीर के मार्ग तुमने गहे हैं॥
शब्द उत्साह वर्धक कहे हैं।
पूज्यवर हम ऋणी हैं तुम्हारे॥

(७४३)

सब है आज व्याकुल तुम्हारा।
शोक सन्तप्त है देश सारा॥
रुक गई ज्ञान की शुद्ध धारा।
हाय! दुर्भाग्य कैसा हमारा॥
कर गया प्रेम बिल्कुल किनारा।
खेल किस्मत का टलता न टारा॥

(७४४)

यदि गये तो भले आप जाओ।
डूबती नाव मेरी बचाओ॥
मोक्ष का मार्ग मुझको दिखाओ।
भक्ति श्रद्धा अलौकिक सिखाओ॥
आश्रितो के अलौकिक सहारे॥
शोक सुख मुनि का जल्दी नसाओ।

(७४५)

धर्म पीयूष तुमने पिलाया।
मर रहा था तुम्हीं ने जिलाया॥
सेवा कुछ भी नहीं करने पाया।
गुण तुम्हारा नहीं खूब गाया॥
भक्ति चरणों की जब करने आया।
छोड़ कर आप मुझ को सिधारे॥

(७४६)

मागने माफी सुख मुनि , न पाया ।
काल ने रङ्ग अपना दिखाया ॥
वज्र हम पर अचानक गिराया ।
शोक सागर मे हमको तिराया ॥
तृप्ति दर्शन से करने न पाया ।
छुट पडे आसुओं के फुहारे ॥

(७४७)

जैन जनता को तुमने जगाया ।
भीति का भूत तुमने भगाया ॥
रूढ़ियों को किनारे लगाया ।
गुण तुम्हारा न सुख मुनि ने गाया ॥
शोक सागर उमड़ आज आया ।
सम्भलता है नही अब सम्भारे ॥

(७४८)

हम न भूलेंगे तुम को कभी भी ।
मूर्ति दिल मे बसी है अभी भी ॥
शिष्य गण आप के हम; सभी भी ।
आज हैं जो रहे हम तभी भी ॥
भूल जाना न हम को कभी भी ।
देख कर स्वर्ग के तुम नजारे ॥

निवृत्ति समाधाय संभाति यस्त ।
भजे खूबचन्द्रं मुनीन्द्रं गणीन्द्रम् ॥३॥

सुतन्त्रस्वतन्त्रः परामृष्ट मन्त्रो ।
मुनीन्द्रो मृगेन्द्रो विवादीभ वृन्दे ॥
क्रियाज्ञानयुक्तो विमुक्तश्च यस्तं ।
भजे खूबचन्द्रं मुनीन्द्रं गणीन्द्रम् ॥४॥

यथाभातिचन्द्रो ऽन्तरिक्षेभ वृन्दे—
स्तथा खूबचन्द्रो विभाति स्वशिष्यैः ॥
सदा बोधयन भव्यवृन्दं च यस्त ।
भजे खूबचन्द्रं मुनीन्द्र गणीन्द्रम् ॥५॥

जनुर्मृत्युतोयं च दुःखैरगाध ।
भवाब्धि च तर्तुं त्वमेवासि नौका ॥
इति प्रार्थितो भव्य वृन्दैश्च यस्तं ।
भजे खूबचन्द्रं मुनीन्द्रं गणीन्द्रम ॥६॥

असीमानुकम्पानिधिः शुद्ध बुद्धि—
प्रदः शर्मदः सर्वदा दीन बन्धुः ॥
विशुद्ध. प्रबुद्धो गुणाब्धिश्चयस्त ।
भजे खूबचन्द्रं मुनीन्द्र गणीन्द्रम् ॥७॥

अनेकैमु निभिर्गुणिभिनतोया ।
तथा भूमिपालै मुदामेवितोया ॥

मनोज्ञै गुणैश्चित्तहारी च यस्तं ।
भजे खूबचन्द्रं मुनीन्द्रं गणीन्द्रम ॥८॥

(वसन्ततिलका)

आचार्यवर्य करुणावरुणालयस्य ।
ससार तप्त जन शान्ति सुधाकरस्य ॥
स्तोत्र व्ययान्मुनियते मुनि घासिलालो ।
रम्ये च दामनगरे गुरुतेव भक्तो ॥६॥

द० गीरधरलाल जी प्रतापचन्द्र जी यति

तर्ज—हाँ सगी जो ने पेडा भावे

हा पूज्यवर परम विरागी, खूबचन्द जी थे वड भागी ।
शूरवीर गंभीर जैन शासन सौ भागी रे, पूज्य० ॥टेर॥
नन्द मुनिश्वर ज्ञान सुनाया, पर पुद्गल परिताप जनाया ।
ली दीक्षा दुख हरणी परणी पदमण त्यागी रे, पूज्य० ॥१॥
वाचन छटा घटा चढ़ आती, काव्य कला सुन्दर दरसाती ।
आतम सुवर्ण शुद्ध करन को सरस सुहागी रे, पूज्य० ॥२॥
दे दे ज्ञान किया निस्तारा, भव जीवों को पार उतारा ।
मोह नगारा चार सघ मे ज्योती जागी रे, पूज्य० ॥३॥
स्वर्ग सिधाये सब छिटका के, दुनिया रो रही शिर पटका के ।
शिव ललना से नाथ आपकी लवलया लागी रे, पूज्य० ॥४॥
सुर पद मे भी रह कर स्वामी, दया दृष्टि रखिये गुण धामी ।
मेवाड़ी मुनि एक आपका है अनुरागी रे, पूज्यवर० ॥५॥

॥ दोहा ॥

चैत्र शुक्ल तृतीया दिने, पूज्य गये सुर धाम ।
पचत्व मह उच्छव किया ब्यावर संघ तमाम ॥

निवृत्ति समाधाय संभाति यस्तं।
भजे खूबचन्द्रं मुनीन्द्रं गणीन्द्रम् ॥३॥

सुतन्त्रस्वतन्त्रः परामृष्ट मन्त्रो।
मुनीन्द्रो मृगेन्द्रो विवादीभ वृन्दे॥

क्रियाज्ञानयुक्तो विमुक्तश्च यस्तं।
भजे खूबचन्द्रं मुनीन्द्रं गणीन्द्रम् ॥४॥

यथाभातिचन्द्रो ऽन्तरिक्षेभ वृन्दै—
स्तथा खूबचन्द्रो विभाति स्वशिष्यैः॥

सदा बोधयन् भव्यवृन्दं च यस्तं।
भजे खूबचन्द्रं मुनीन्द्र गणीन्द्रम् ॥५॥

जनुर्मृत्युतोयं च दुःखैरगाध।
भवाब्धि च ततुं त्वमेवासि नौका॥

इति प्रार्थितो भव्य वृन्दैश्च यस्तं।
भजे खूबचन्द्रं मुनीन्द्रं गणीन्द्रम् ॥६॥

असीमानुकम्पानिधिः शुद्ध बुद्धि—
प्रदः शर्मदः सर्वदा दीन बन्धुः॥

विशुद्धः प्रबुद्धो गुणाब्धिश्चयस्तं।
भजे खूबचन्द्रं मुनीन्द्र गणीन्द्रम् ॥७॥

अनेकैर्मुनिभिर्गुणिभिर्नतोवा।
तथा भूमिपालै र्मुदासेवितोवा॥

मनोज्ञै गुणैश्चित्तहारी च यस्तं ।
भजे खूबचन्द्रं मुनीन्द्र गणीन्द्रम ॥८॥

(वसन्ततिलका)

आचार्यवर्य करुणावरुणालयस्य ।
ससार तप्त जन शान्ति सुधाकरस्य ॥
स्तोत्र व्ययान्मुनियते मुनि घासिलालो ।
रम्ये च दामनगरे गुरुनेव भक्त्त्या ॥६॥

द० गीरधरलाल जी प्रतापचन्द्र जी यति

तर्ज—हाँ सगी जी ने पेडा भावे

हा पूज्यवर परम विरागी, खूबचन्द जी थे वड भागी ।
शूरवीर गंभीर जैन शासन सौ भागी रे, पूज्य० ॥टेर॥
नन्द मुनिश्वर ज्ञान सुनाया, पर पुदगल परिताप जनाया ।
ली दीक्षा दुख हरणी परणी पदमण त्यागी रे, पूज्य० ॥१॥
वाचन छटा घटा चढ़ आती, काव्य कला सुन्दर दरसाती ।
आतम सुवर्ण शुद्ध करन को सरस सुहागी रे, पूज्य० ॥२॥
दे दे ज्ञान किया निस्तारा, भव जीवो को पार उतारा ।
मोह नगारा चार सब मे ज्योती जागी रे, पूज्य० ॥३॥
स्वर्ग सिधाये सब छिटका के, दुनिया रो रही शिर पटका के ।
शिव ललना से नाथ आपकी लवलया लागी रे, पूज्य० ॥४॥
सुर पद मे भी रह कर स्वामी, दया दृष्टि रखिये गुण धामी ।
मेवाड़ी मुनि एक आपका हैं अनुरागी रे, पूज्यवर० ॥५॥

॥ दोहा ॥

चैत्र शुक्ल तृतीया दिने, पूज्य गये सुर धाम ।
पंचरत्न मह उच्छ्रव किया ब्यावर सघ तमाम ॥

निवृत्ति समाधाय संभाति यस्त ।
भजे खूबचन्द्रं मुनीन्द्रं गणीन्द्रम् ॥३॥

सुतन्त्रस्वतन्त्रः परामृष्ट मन्त्रो ।
मुनीन्द्रो मृगेन्द्रो विवादीभ वृन्दे ॥

क्रियाज्ञानयुक्तो विमुक्तश्च यस्तं ।
भजे खूबचन्द्रं मुनीन्द्रं गणीन्द्रम् ॥४॥

यथाभातिचन्द्रो ऽन्तरिक्षेभ वृन्दै—
स्तथा खूबचन्द्रो विभाति स्वशिष्यैः ॥

सदा बोधयन् भव्यवृन्दं च यस्तं ।
भजे खूबचन्द्रं मुनीन्द्रं गणीन्द्रम् ॥५॥

जनुर्मृत्युतोयं च दुःखैरगाध ।
भवाब्धि च तर्तुं त्वमेवासि नौका ॥

इति प्रार्थितो भव्य वृन्दैश्च यस्तं ।
भजे खूबचन्द्रं मुनीन्द्रं गणीन्द्रम् ॥६॥

असीमानुकम्पानिधिः शुद्ध बुद्धि—
प्रदः शर्मदः सर्वदा दीन बन्धुः ॥

विशुद्धः प्रबुद्धो गुणाब्धिश्चयस्तं ।
भजे खूबचन्द्रं मुनीन्द्रं गणीन्द्रम् ॥७॥

अनेकैर्मुनिभिर्गुणिभिर्नतोवा ।
तथा भूमियालै मुदासेवितोवा ॥

मनोज्ञै गुणैश्चित्तहारी च यस्तं ।
भजे खूबचन्द्रं मुनीन्द्र गणीन्द्रम ॥८॥

(वसन्ततिलका)

आचार्यवर्य ।करुणावरुणालयस्य ।
ससार तप्त जन शान्ति सुधाकरस्य ॥
स्तोत्र व्ययान्मुनियते मुनि घासिलालो ।
रम्ये च दामनगरे गुरुनेत्र भक्ते ॥६॥

द० गीरधरलाल जी प्रतापचन्द जी यति

तर्ज—हाँ सगी जी ने पेड़ा भावे—

हा पूज्यवर परम विरागी, खूबचन्द जी थे बड़ भागी ।
शूरवीर गंभीर जैन शासन सौ भागी रे, पूज्य० ॥टेर॥
नन्द मुनिश्वर ज्ञान सुनाया, पर पुद्गल परिताप जनाया ।
ली दीक्षा दुख हरणी परणी पद्मण त्यागी रे, पूज्य० ॥१॥
वाचन छटा घटा चढ़ आती, कव्य कला सुन्दर दरसाती ।
आतम सुवर्ण शुद्ध करन को मनम सुहागी रे, पूज्य० ॥२॥
दे दे ज्ञान किया निस्तारा, भव जीवों को पार उतारा ।
मोह नगारा चार संघ में ज्योति जागी रे, पूज्य० ॥३॥
स्वर्ग सिधाये सब झिटका के, दुनियां रो रही शिर पटका के ।
शिव ललना से नाथ आपकी लवल्या लागी रे, पूज्य० ॥४॥
सुर पद में भी रह कर स्वामी, दया दृष्टि रखिये गुण धामी ।
मेवाड़ी मुनि एक आपका है अनुरागी रे, पूज्यवर० ॥५॥

॥ दोहा ॥

चैत्र शुक्ल तृतीया दिने, पूज्य गये सुर धाम ।
पंचत्व सह उच्छव किया ब्यावर संघ तमाम ॥

पूज्य श्री के चर्णों में

रचयिता

उपाध्याय कविरत्न प० मुनी श्री अमरचंदजी महाराज

(१)

वन्दनीय आचार्य पूज्यवर,
खूबचन्द्र जी गुणधारी ।
खूबचन्द्र–सम चमके जगमें:–
कीर्ति कौमुदी विस्तारी ॥

(२)

कनक-कामिनी-युक्त गृहाङ्गण,
त्याग उग्र मुनिव्रत धारा ।
धन्य ! धन्य !! नव यौवन वय में,
संसृति को समझा कारा ॥

(३)

त्याग और वैराग्य भाव में,
रहे निरन्तर अटल अचल ।
विषय वासनाओ के दल पर,
पाते रहे विजय प्रतिपल ॥

(४)

मानवता की दिव्य मूर्ति थे,
सरल सरस सुन्दर जीवन।
अन्दर बाहर रहे एकसा,
पावन था अथ इति तनमन॥

(५)

क्रोध और अभिमान आपको,
स्पर्श कभी भी कर न सका।
शान्त विनम्र आपके मनको,
दुर्भावों से भर न सका॥

(६)

जब देखा तव मुख मण्डल पर,
मधुर हास्य खेला करता।
दर्शक जनके क्षुब्ध हृदय की,
व्याकुलता पल में हरता॥

(७)

शास्त्र ज्ञान था अति ही अनुपम,
जिन वाणी से प्रेम महान।
तत्व-विचिन्तन में रत रहते,
क्या दिन और रात्रि का मान॥

(८)

प्रवचन क्या होते थे मानो,
सुधा वृष्टि ही होती थी।
श्रोताओं के मानस का चिर-
संचित कलिमल धोती थी॥

(९)

पूज्य पाद आचार्य! आज तुम,
नहीं रहे जगती तल पर।
किन्तु तुम्हारा यश-शरीर तो,
जीवित अब भी भूतल पर॥

(१०)

आप दिवंगत हुए किन्तु यहां,
चरण-चिन्ह छोड़े सुन्दर।
कर सकते हैं भक्त स्वजीवन,
मंगलमय, जिन पर चलकर॥

(११)

भूल न सकते कभी तुम्हारी,
हम अति हितकर गुणगरिमा।
गायेंगे शत शत वर्षों तक,
मुक्त कंठ से तव महिमा॥

गुड़गांवा
७—४—४५

हा ! पूज्यवर श्री खूबचन्द्र जी-महाराज,

(१)

थे पुन्यवान दयालु दानीश्वर ताज समाज का टूट गया है।
जैन के जीवन खूब मुनीश्वर अमृत का घट फूट गया है।
शान्त सदा प्रिय सत्यशुशील यथा अवलम्बन छूट गया है।
काल कराल कलेजा हमारा हा ! रे दुर्देव क्यो लूट गया है ॥

(२)

वीर धुरधर मगल मूरति भारत के अवतार गये है।
काम क्रोधादिक शत्रुन को जड़ मूल से आप उखार गये हैं ॥
धर्म दिवाकर धर्म की ज्योति सरे जग बीच पसार गये है'।
भारत की जनता सब रो रही आप तो स्वर्ग सिधार गये हैं ॥

(३)

शूर शिरोमणि सिह के सम्मुख मिथ्यावादी मृग हार गये है।
उदीयमान हुवे जिस ठोर वहीं का सभी अंधकार गये हैं।
लाखो जनो का उद्धार किया भव सागर पार उतार गये हैं।
आज समाज अनाथ हुई हम दीन दुखी के आधार गये है ॥

—प्रेषक, 'मेवाडी मुनि' कुशाल पुरा से

* श्री गुरु-गुण-कीर्त्तन *

॥ तर्ज—मारा वीर प्रभु के दर्शन की ॥

हो गये पंचम आरे पूज्य शिरोमण खूबचन्द महाराज ॥टेर॥

जन्म स्थान निम्बाहेड़ा मे टेकचन्द जी तात।
गेंदी बाई मात जिनो का ललित लाल अगजात। हो० ॥१॥

नन्द गुरु की सुन कर बानी चढ़ियो चित्त वैराग।
२२ वर्ष की उमर में ही तरुणी तिरिया त्याग। हो० ॥२॥

धैर्यवान गम्भीर आप थे निर्मल चारित्रवान।
सूत्र ज्ञान विद्वान तद्यपि किंचिद् नहीं अभिमान। हो० ॥३॥

भरी सरसता काव्य-कला मे ज्यों रतनो की लड़ियाँ।
श्रीमुख मोहन छटा अजब थी ज्यो भादव की झड़ियाँ। हो० ॥४॥

मारवाड़ मेवाड़ मालवा व्रज भूमी पंजाब।
कई जन पद को जागृत कीना छिड़क ज्ञान का आब। हो० ॥५॥

वयस्थैवर के योग विराजे ब्यावर नगर दयाल।
अति उमंग से संघ आपकी सेवा करी त्रिकाल। हो० ॥६॥

दो हजार दूवे की चैत्री तिथी तीज मधरात।
खुद अनशन कर स्वर्ग पधारे उगत ही परभात। हो० ॥७॥

देश देश सदेश सुनत ही घर घर फैला शोक।
दिव्य छवि देखन को आये संघ हजारो लोक। हो० ॥८॥

निर्वाणोच्छव कीना लीना यश ब्यावर श्री रुव।
जैनेतर जनता अविलोकी दिल मे हो गई दंग। हो० ॥९॥

हा ! पूज्यवर

मनहरण (१)

लाया टेलीग्राम अति दुखद संदेश एक।
दरशान पूज्य श्री का अब नहीं पाओगे ॥
कहोगे अतीत की कथाएं बीती हुई तब।
मौजूदा उदाहरण किसे बतलाओगे ॥
सुखी ज्ञान गगा की सुशीतल विमल धार।
ज्ञान की पिपासा अब कहां जा बुझाओगे ॥
तत्व भरी मीठी बातें और दिव्य भव्य मूर्ति।
"केवल" भुलाने से भी भूल नहीं पाओगे ॥

(२)

आपकी शरण मे थे बीतते सुखद दिन।
सोचा भी न था कि काल अब बिछुड़ायेगा ॥
पतझड़ छायेगा समाज के सुजीवन मे।
आनन फानन मे वसन्त चला जायेगा ॥
मौन हो स्वाध्याय और प्रेम से सिखाना ज्ञान।
एक एक ध्यान पूज्य तुम्हारा रुलायेगा।

पूज्य श्री खूबचन्द जी महाराज-चरित्र

तुम तो गये हो दूर होगा क्या हमारा अब।
संघ का जहाज कौन किनारे लगायेगा॥

पूज्यवर तुम धर्म की एक शान थे।
जैन जनता के लिये अभिमान थे॥
जम्बू स्वामी के चले आदर्श पर।
संयमी त्यागी विभुति महान थे॥
शान्त मूर्ति सभी गुणो की खान थे।
तत्व के ज्ञाता महा विद्वान थे॥
देव से भी काम है बढ़कर किया।
आप केवल नाम के इन्सान थे॥

साहित्यज्ञ—केवल मुनि